विवाह एक सेवकाई श्रृंखला है

प्रेम क्या है

वर्कबुक

वॉल्यूम 2

इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रआत्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ: और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं॥ (मत्ती 28:19-20)

Craig Caster

What Love Is in Hindi
Marriage Is a Ministry series, Volume 2 of 5

प्रेम क्या है
विवाह एक सेवकाई श्रंखला है

विवाह एक सेवकाई श्रृंखला में अन्य शीर्षक है

मजबूत नींव (वॉल्यूम 1)
अनोखी जरूरतें (वॉल्यूम 3)
शारीरिक पूर्ति (वॉल्यूम 4)
ईश्वरीय अगुवाई (वॉल्यूम 5)
अगुवों का मार्गदर्शन

FDM.world द्वारा अन्य कार्य पुस्तिकाएं

मसीही आधारभूत सत्य : एक चेले के लिए एक मजबूत नींव: क्रेग कैस्टर द्वारा
पालन-पोषण एक सेवकाई श्रृंखला है क्रेग कैस्टर द्वारा
किशोरों को समझना

सभी FDM.world कार्य पुस्तिकाओं को व्यक्तिगत अध्ययन के लिए, छोटे समूहों के लिए, चेले बनना उपकरण के रूप में, और परामर्श में अनुशंसित किया जाता है।

कृपया ध्यान दें: मूल कार्यपुस्तिका से सभी रिक्त पृष्ठ हटा दिए गए हैं।
कुछ पेज नंबर इस कारण से छोड़े जा सकते हैं।

प्रेम क्या है

विवाह एक सेवकाई श्रंखला है
वॉल्यूम 2

क्रेग कास्टर

इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो, और उन्हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ : और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ। (मत्ती 28:19-20)

FAMILY
DISCIPLESHIP
MINISTRIES

फोन: (619) 590-1901
ईमेल: info@FDM.world
वेबसाइट: www.FDM.world, www.discipleshipworkbooks.com

प्रेम क्या है-विवाह एक सेवकाई श्रंखला है
वॉल्यूम 2 कार्यपुस्तिका -क्रेग कास्टर द्वारा ISBN 978-1-7331045-1-7

क्रेग कैस्टर द्वारा प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक संस्करण कॉपीराइट © 2019। सर्वाधिकार सुरक्षित। 09012020 संशोधन
जब तक अन्यथा उल्लेख न किया गया हो, सभी पवित्रशास्त्र उद्धरण न्यू किंग जेम्स वर्जन® से लिए गए हैं। कॉपीराइट© 1982 थॉमस नेल्सन द्वारा। अनुमति द्वारा उपयोग किया जाता है। सर्वाधिकार सुरक्षित।
एएमपी के रूप में चिह्नित पवित्रशास्त्र के उद्धरण एम्प्लीफाइड बाइबिल से लिए गए हैं। कॉपीराइट © 2015 द लॉकमैन फाउंडेशन, ला हाब्रा, सीए 90631 द्वारा। सर्वाधिकार सुरक्षित। जानकारी को कोट करने की अनुमति के लिए http://www.lockman.org/ पर जाएं।
ESV चिह्नित पवित्रशास्त्र उद्धरण ESV® बाइबिल (द होली बाइबल, इंग्लिश स्टैंडर्ड वर्जन®) से लिए गए हैं। ESV ® टेक्स्ट संस्करण: 2016। कॉपीराइट © 2001, क्रॉसवे द्वारा, गुड न्यूज पब्लिशर्स का एक प्रकाशन मंत्रालय। ESV® पाठ को Good News Publishers के सहयोग से और उनकी अनुमति से पुन: प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकाशन का अनधिकृत पुनरुत्पादन प्रतिबंधित है। सर्वाधिकार सुरक्षित।
NASB के रूप में चिह्नित पवित्रशास्त्र के उद्धरण नए अमेरिकी मानक बाइबिल®, कॉपीराइट से लिए गए हैं © 1960, 1962, 1963, 1968, 1971, 1972, 1973, 1975, 1977, 1995 द लॉकमैन फाउंडेशन द्वारा। अनुमति द्वारा उपयोग किया जाता है।
एनआईवी के रूप में चिह्नित पवित्रशास्त्र उद्धरण पवित्र बाइबिल, नए अंतर्राष्ट्रीय संस्करण®, एनआईवी® कॉपीराइट © 1973, 1978, 1984, 2011 बाइबिलिका, इंक.® द्वारा अनुमति द्वारा उपयोग किए गए हैं। पूरे विश्व में सर्वाधिकार सुरक्षित।
टीएलबी के रूप में चिह्नित पवित्रशास्त्र के उद्धरण टिंडेल हाउस फाउंडेशन द्वारा द लिविंग बाइबल कॉपीराइट © 1971 से लिए गए हैं। टिंडेल हाउस पब्लिशर्स इंक, कैरल स्ट्रीम, इलिनॉय 60188 की अनुमति से प्रयुक्त। सभी अधिकार सुरक्षित। द लिविंग बाइबल, टीएलबी, और द लिविंग बाइबल लोगो टिंडेल हाउस पब्लिशर्स के पंजीकृत ट्रेडमार्क हैं।

ऊपर आरक्षित कॉपीराइट के तहत अधिकारों को सीमित किए बिना, इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा-चाहे मुद्रित या ई-बुक प्रारूप में, या किसी अन्य प्रकाशित व्युत्पत्ति- को पुन: प्रस्तुत, संग्रहीत या एक पुनर्प्राप्ति प्रणाली में पेश नहीं किया जा सकता है, या किसी भी रूप में प्रेषित किया जा सकता है। पूर्व लिखित अनुमति के बिना किसी भी माध्यम से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, या अन्यथा)।

सामग्री

प्रस्तावना vii
परिचय..... ix
पाठ 1: बाइबल आधारित प्रेम..... 1
पाठ 2: प्यार में जवाब देना..... 11
पाठ 3: दयालु बनें..... 21
पाठ 4: परमेश्वर की महिमा करो, हमारी देह की नहीं..... 31
पाठ 5: सत्य पर ध्यान केंद्रित करें, पाप पर नहीं..... 41
अपेंडिक्स संसाधन..... 51
एंडनोट..... 91
लेखक के बारे में..... 93
पारिवारिक चेले बनाना सेवकाई के बारे में..... 95

प्रस्तावना

परमेश्वर ने उस संस्था को बनाया जिसे हम विवाह कहते हैं, और आज यह गंभीर हमले के अधीन है। यह बयान आपको अजीब लग सकता है, लेकिन सबसे महत्वपूर्ण विपरीत प्रभाव पति और पत्नी के बीच के संबंधों से उत्पन्न होते हैं। एक जोड़े की शादी के बाद, प्रत्येक साथी अपनी जरूरतों और इच्छाओं के अनुसार खुद को खींचना शुरू कर देता है। जैसे-जैसे समय बीतता है, समस्याएँ अनसुलझी हो जाती हैं, और निराशा, हताशा और क्रोध चोट पहुँचाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आक्रोश और प्रतिशोध होता है। जब दो लोग ऐसी आशाओं, इतनी अच्छी नीयत से विवाह में प्रवेश करते हैं, तो इतनी शादियां असफल क्यों हो जाती हैं? वहीं दूसरी ओर, इतने सारे जोड़े अधूरे रिश्तों के लिए क्यों समझौता कर रहे हैं?

यह पुस्तक परमेश्वर को समर्पित है और प्रत्येक जोड़े के लिए उसकी इच्छा को समर्पित है कि वह उन आशीषों का अनुभव करे जो उसने विवाह में चाही थी। जब दो लोग पति और पत्नी के रूप में परमेश्वर के सिद्धांतों में प्रशिक्षण के बिना एकजुट होते हैं, और अक्सर उनके अतीत से कोई ईश्वरीय उदाहरण नहीं होते हैं, तो वे वास्तव में इस बात से अनजान होते हैं कि एक दूसरे की देखभाल कैसे की जाए। वे पिछली चोटें और भावुक ख़ालीपन ला सकते हैं जो चुनौती को बढाती हैं। इस सामग्री के माध्यम से परमेश्वर अपरिवर्तनीय सत्य को प्रकट करेगा जिसका पालन किया जाना चाहिए, या परिणाम निराशा और मायूसी होगा। संक्षेप में, बहुत दर्द।

आंकड़े बताते हैं कि ईसाइयों के बीच बहुत से विवाह तलाक में समाप्त होते हैं। परमेश्वर की सन्तान और उसके सभी वादों के उत्तराधिकारी के रूप में, विश्वासी असफल क्यों हो रहे हैं? समस्या जानकारी की कमी, बाइबल के सिद्धांतों में चेले बनाने की कमी है। अफसोस की बात है, कलीसिया वर्तमान में इस क्षेत्र में पर्याप्त प्रयास नहीं कर रहा है जो विनाश के रास्ते पर इतने सारे लोगों को बहा ले जा रहा है। विवाहित जोड़ों को बाइबल की शिक्षा की बहुत आवश्यकता है, दूसरों के द्वारा परमेश्वर की सच्चाई में चेला बनने के लिए। जब विश्वासी सीखते हैं कि परमेश्वर क्या चाहता है और मसीह के चेलो के रूप में उसका पीछा करने का निर्णय लेते हैं, तो वे किसी भी समस्या को दूर करने के लिए अनुग्रह और शक्ति प्राप्त करेंगे।

परमेश्वर हमारे बदले में स्वयं को सामर्थी दिखाना चाहता है और चाहता है कि हम अपने विवाहों में उसकी महिमा करें। लेकिन हमें भी यह चाहिए। हम जानते हैं कि विवाह परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है, फिर भी विवाह के दस वर्षों के बाद भी अधिकांश मसीही दूसरों को चेले बनाने में अधूरा महसूस करते हैं। एक ऐसे व्यक्ति पर विचार करें जिसने दस साल तक नौकरी की थी। वे किसी और को प्रशिक्षित करने के लिए बहुत आत्मविश्वास महसूस करेंगे। और परमेश्वर इस बात से कहीं अधिक चिंतित है कि हम अपने व्यवसाय की तुलना में अपने जीवनसाथी के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

जैसे ही आप प्रार्थनापूर्वक इस श्रृंखला को पूरा करते हैं, परमेश्वर पति और पत्नी के रूप में आपके लिए अपने उद्देश्य को प्रकट करेगा। सभी जानकारी विशेष रूप से बाइबिल सत्य पर आधारित है। कार्यपुस्तिकाएँ पवित्रशास्त्र के साथ आपका मार्गदर्शन करेंगी और आपके द्वारा सीखे जा रहे सिद्धांतों को लागू करने में आपकी मदद करने के लिए आपको व्यावहारिक उदाहरण देंगी। श्रृंखला का उद्देश्य दूसरों को चेला बनाने का एक उपकरण भी है। जब आपकी आंखें असाधारण तरीके से खुलती हैं जिस तरह से परमेश्वर आपके जीवन को बदल रहे हैं, तो आप देखेंगे कि कई अन्य लोगों को भी मदद की जरूरत है।

प्रभु परमेश्वर, अपने वचन में अपने हृदय और इच्छा को हम पर प्रकट करने के लिए धन्यवाद। कृपया उन लोगों को आशीर्वाद दें जो इस पुस्तक को पढ़ते हैं। सिद्धांतों को स्पष्ट करें। उन्हें क्षमा करने के लिए विनम्र हृदय दें जिन्होंने उन्हें चोट पहुंचाई है और उनसे क्षमा मांगने की इच्छा दें जिन्होंने उन्हें चोट पहुंचाई है। परमेश्वर, उन लोगों के विवाह में और उनके द्वारा महिमा पाएं जो आपका पीछा करने के इच्छुक हैं। आमीन ।

परिचय

यह कार्यपुस्तिका आपको चेले बनाने के मार्ग पर लाने के लिए बनायीं गई है, जिसका अर्थ है ईश्वर के सिद्धांतों पर चलना। जब हम चलने जैसे शब्दों का प्रयोग करते हैं, तो हम आशा करते हैं कि आप समझ गए होंगे कि इन सिद्धांतों के तहत जीना उतना ही बुनियादी है जितना कि चलना सीखना ।

हमारी कार्यपुस्तिका के लक्ष्य हैं:

1. आपको यह दिखाने के लिए कि परमेश्वर विवाह के लिए सिद्धांत प्रदान करता है,
2. आपको इन सिद्धांतों को लागू करने के लिए उपकरणों और अनुप्रयोगों से तैयार करने के लिए, और
3. अपने विवाह और परिवार को उस क्षमा, चंगाई और एकता में मार्गदर्शन करने के लिए जो परमेश्वर की आज्ञाकारिता के माध्यम से आती है

महत्वपूर्ण क्षेत्रों में मसीह के देह को शिक्षित करने में मदद करने के लिए पारिवारिक चेले बनाना सेवकाई मौजूद हैं। दूसरों को चेले बनाने में असफलता का आज विवाहों में असफलता की दर से सीधा संबंध है। और हम यह कैसे जानते हैं? जो हमने आज सिद्ध आँकड़ों में देखा, अनुभव किया और पाया है।

प्रक्रिया

अध्ययन को पाँच खंडों में विभाजित किया गया है। वॉल्यूम 1 से शुरू करें और क्रम में प्रत्येक वॉल्यूम के माध्यम से जारी रखें। आपकी रुचि जगाने वाले वॉल्यूम या सेक्शन छोड़ देना आकर्षक है, लेकिन इसकी सलाह नहीं दी जाती है, क्योंकि प्रत्येक वॉल्यूम और पाठ एक दूसरे पर आधारित होते हैं। उदाहरण के लिए, आप पुरुष या महिला की संगति की ज़रूरतों पर महारत हासिल करना चाह सकते हैं, लेकिन बाइबल के ऐसे सिद्धांत हैं जिन्हें सीखना चाहिए, इससे पहले कि आप अपने जीवनसाथी की ज़रूरतों को ईश्वरीय तरीके से पूरा कर सकें। पांच दिनों तक हर दिन एक पाठ पूरा करने की दिशा में काम करें। तालमेल के साथ दैनिक अध्ययन करना आत्मिक सफलता की कुंजी है।

इन सिद्धांतों को आजमाया और सफल साबित किया गया है। मैंने इसे अपने विवाह में और सलाह देने और विवाह कक्षाओं में अनगिनत लोगों के जीवन के माध्यम से अनुभव किया है। कृपया समझें, यह "शादी के लिए पांच आसान कदम" नियम पुस्तिका नहीं है। बाईबिल संबंधी चेले बनाना चुनौतीपूर्ण काम है और आपको अपने कुछ रवैयों और व्यवहारों को बदलने के साथ-साथ आपको ईश्वर की इच्छा के प्रति समर्पण करने की आवश्यकता है। इस प्रक्रिया के लिए जिम्मेदारी, त्याग और विनम्रता की आवश्यकता होगी।

प्रत्येक दिन की शुरुआत

- प्रत्येक दैनिक अध्ययन को अपने परमेश्वर के साथ बिताए गए समय के रूप में देखें, और उससे उसके वचन के माध्यम से आपसे बात करने की अपेक्षा करें।
- प्रत्येक दिन प्रार्थना के साथ शुरू करें, परमेश्वर से पूछें कि आपको कहां बदलने की जरूरत है और जो आप सीख रहे हैं उसे लागू करने के लिए आपको सशक्त बनाने के लिए कहें

- चिंतनशील मानसिकता रखें। केवल यह कहने के लिए कि आपने इसे समाप्त कर लिया है, सामग्री में जल्दबाजी न करें। परमेश्वर को आपसे बात करने का समय दें, और जो आप सीखते हैं उस पर मनन करें।

ध्यान देने योग्य बातें

- यह अध्ययन एक नई प्राथमिकता है और इसके लिए समर्पित समय की आवश्यकता होगी । पाठों को प्रतिदिन किया जाना है । यदि आप एक दिन चूक जाते हैं, तो इसे छोड़ें नहीं, बल्कि क्रम में सभी पाठों को पूरा करने के लिए काम करें ।
- पवित्रशास्त्र स्पष्ट रूप से कहता है कि विवाह परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण है। यदि आप पाठों को पूरा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, तो अपनी प्राथमिकताओं और अन्य प्रतिज्ञाओं के बारे में प्रार्थना करें। यदि आवश्यक हो तो प्रार्थना के लिए जवाबदेही भागीदार की सहायता लें।
- याद रखें, इस प्रयास में आपका जीवनसाथी एक आवश्यक भागीदार है। एक साथ या अलग-अलग अध्ययन करें, लेकिन आपने जो सीखा है उस पर हमेशा चर्चा करें और आवश्यक परिवर्तनों को लागू करने के लिए प्रार्थनापूर्वक वचनबद्ध रहें।
- प्रस्तुत जानकारी की मात्रा में पाठ भिन्न हो सकते हैं। हर एक को पूरा करने के बाद, परमेश्वर के स ix ने समय की योजना बनाने और इसका अधिकतम लाभ उठाने के लिए अगले पाठ की प्रतीक्षा करें।
- सवालों के जवाब देने और अपने विचारों और प्रार्थनाओं को रिकॉर्ड करने के लिए जगह दी गई है। यदि आपने इस कार्यपुस्तिका को डाउनलोड और प्रकाशित किया है, तो हमारा सुझाव है कि आप इसे तीन-रिंग बाइंडर में रखें और व्यक्तिगत बहिखाते और नोट्स के लिए अतिरिक्त पेपर शामिल करें

तथ्यों की फ़ाइल

इस तरह के बक्से बाइबल से शब्दों या वाक्यांशों की परिभाषा प्रदान करते हैं। हमने स्पष्टता के लिए जाने-माने, धर्म-तर्कसंगत ध्वनि बाइबल शब्दकोशों और टिप्पणियों का उपयोग करने के लिए बहुत सावधानी बरती है, जब संभव हो तो नियुक्त करना । इनमें से कई परिभाषाएँ परिशिष्ट R: शब्दावली में दिखाई देती हैं

गहरी खुदाई

यह भाग पवित्रशास्त्र को पढ़ने और इसे प्रस्तुत किए जा रहे विषय से संबंधित करने का अवसर देता है। आप और अधिक परिचित हो जाएंगे बाईबल, विवाह के बाईबल के सिद्धांतों, और एक जीवनसाथी के रूप में परमेश्वर आपसे क्या अपेक्षा करते हैं।

खुद की परीक्षा

जब आप बाइबिल के सिद्धांतों का अध्ययन करते हैं, तो यह भाग आत्म-परीक्षा के लिए समय प्रदान करता है, उन क्षेत्रों की खोज करता है जहां व्यक्तिगत सुधार की आवश्यकता होती है। उन परिवर्तनों को करने के लिए शक्ति और ज्ञान के लिए परख ,अंगीकार करना और प्रार्थनाओं को सूची में लिखने के लिए स्थान प्रदान किया गया है। चेले बनाने की प्रक्रिया का एक पहलू व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी है। यदि परमेश्वर प्रकट करता है कि आपने अपने जीवनसाथी या बच्चों के विरुद्ध पाप किया है, तो उनके सामने अपना पाप स्वीकार करें और क्षमा मांगें। ऐसा नियमित रूप से अभ्यास करें, भले ही ऐसा करने का ध्यान न दिया गया हो।

कार्य योजना

बाइबिल संबंधी सिद्धांतों का अध्ययन करने के बाद, यह भाग आपको कार्रवाई करने और जो आपने अपने विवाह में सीखा है उसे लागू करने के लिए चुनौती देता है। सच्चे चेले होने के लिए हमें यह समझना चाहिए कि परमेश्वर न केवल यह चाहता है कि हम ज्ञान में बढ़ें, बल्कि वह यह भी चाहता है कि हम इसे जीएँ।

परिशिष्ट संसाधन

कृपया कार्यपुस्तिका के अंत में अतिरिक्त विषय का लाभ उठाएं। वे आपके विकास के लिए हैं, और हम उन्हें पूरी कार्यपुस्तिका में जिक्र करते हैं। इससे पहले कि आप इस अद्भुत यात्रा को शुरू करें, कृपया परिशिष्ट A भरें: प्रतिज्ञा पत्र (खंड 1)।

अगुवे का मार्गदर्शन

मुफ्त सेवकाई डाउनलोड्स के तहत FDM.world पर एकअगुवे का मार्गदर्शन उपलब्ध है। हमारी वेबसाइट पर सभी सामग्री चेले बनाने पर ध्यान केंद्रित करती हैं और नि:शुल्क प्रदान की जाती हैं।

पाठ - 1
बाइबिल आधारित प्रेम

पति या पत्नी की सबसे बड़ी साथी की आवश्यकता क्या है? हम जानते हैं कि पुरुष और महिलाएं शारीरिक और भावनात्मक रूप से अलग-अलग हैं, लेकिन क्या हम सभी इस बात से सहमत हो सकते हैं कि हर किसी को प्यार की जरूरत होती है? हमारी सबसे बड़ी साथी की आवश्यकता है - जो स्त्री और पुरुष को एक दूसरे से चाहिए - वह प्रेम है। यह सच होने के साथ, और हमारी जरूरत इतनी स्पष्ट है, हम अक्सर प्यार देने और लेने से इनकार क्यों करते हैं? यही मुख्य कारण है कि रिश्ते विफल हो जाते हैं और विवाह तलाक में समाप्त हो जाते हैं। परमेश्वर के वचन में इस दुविधा के उत्तर और समाधान हैं। प्रेम का अनुभव करने की आवश्यकता की इस निराशाजनक और अद्‌भुत मानवीय स्थिति के बारे में परमेश्वर के पास कहने के लिए बहुत कुछ है।

बहुत से लोग मानते हैं कि एक रिश्ता बर्बाद हो जाता है क्योंकि वह प्यार जिसे उन्होंने एक बार महसूस किया था, या तलाश कर रहे थे, वह धुंधला हो गया है या ऐसा लगता है कि वह चला गया है। इस भावना को पूरा करने की कुंजी सोचते हुए, वे तय करते हैं कि कुछ गलत है जिसे ठीक नहीं किया जा सकता है। वर्तमान तलाक दर इसकी पुष्टि करती है। यही लोग अनजाने में नकारात्मक व्यवहारों, नजरिया और बुरी आदतों से अपने संबंधों को नष्ट कर रहे हैं।

प्रेम के विपरीत नफरत है। जब एक व्यक्ति परमेश्वर का वचन प्रेम के बारे में हमें जो सिखाता है, उसके विपरीत करता है, तो परिणाम विवाह और आने वाली पीढ़ियों के लिए विनाशकारी हो सकते हैं। सभी भ्रम और दोष देने का सामान्य कारण उस प्रेम का अनुभव करने की हमारी विश्वसम्बन्धी इच्छा है जिसे हम सभी मानते हैं कि यह संभव है, यहां तक कि आवश्यक भी। हमारी ज़्यादातर असफलता अज्ञानता के कारण है कि प्रेम के बाइबलीय सिद्धान्तों के बारे में सूचित या सिखाया नहीं गया है और एक विवाह के भीतर उस प्रेम को जीने की कृपा कैसे प्राप्त की जाती है ।

यह अध्ययन पूरी तरह से परमेश्वर के वचन पर आधारित है, इस विश्वास पर कि परमेश्वर विवाह का निर्माता है और वह सभी जानकारी, शक्ति और अनुग्रह का स्रोत है जो हमें सफल होने के लिए चाहिए। आइए इस अध्ययन की शुरुआत खुले दिल और दिमाग के लिए उनसे प्रार्थना के साथ करें।

पिता, आपके वचन के लिए धन्यवाद, ज्ञान और मार्गदर्शन से भरा है, जो हमें सिखाता है कि एक-दूसरे के साथ कैसे व्यवहार किया जाए और यह इतना स्पष्ट कर दिया कि प्रेम क्या है और क्या नहीं है।। मैं प्रार्थना करता हूं कि आपकी आत्मा हमें बताए जहाँ हम प्रेम नहीं करते। हमें विनम्र दिल दें, आपका निर्देश प्राप्त करने और गलत व्यवहार और अवज्ञाकारी तरीकों को बदलने की जिम्मेदारी लेने के लिए तैयार हैं। परमेश्वर, हम चाहते हैं कि हमारे विवाह आपके लिए आदर और महिमा लाएं, इसलिए यही हमारी प्रार्थना है। हम इन बातों को यीशु के नाम में माँगते हैं। आमीन

बाइबिल आधारित प्रेम का महत्व

यीशु ने हमें इस बात की अंतर्दृष्टि दी कि वह अपने चेलो से क्या अपेक्षा करता है, जो आज भी हम पर लागू होती है। ध्यान दें कि वह कोई सुझाव नहीं दे रहा था, बल्कि एक आदेश दे रहा था।

मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दुसरे से प्रेम रखो। यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे कि तुम मेरे चेले हो। (यूहन्ना 13 : 34-35)

आत्म-परीक्षा 1

"एक दूसरे से प्रेम करो।" पद 35 के अनुसार, यीशु की आज्ञा का पूरा होना उसके साथ आपके संबंध से कैसे संबंधित है? इस आयत में आप अपने जीवनसाथी को कैसे रखेंगे?

परमेश्वर हमसे यह अपेक्षा नहीं करता कि हम उसकी सहायता के बिना इस प्रेम को प्राप्त करें। परमेश्वर के वचन और हमारे जीवन में पवित्र आत्मा के कार्य के बीच संबंध पर ध्यान दें।

अत: जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन–मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। क्योंकि तुम ने नाशवान् नहीं पर अविनाशी बीज से, परमेश्वर के जीवते और सदा ठहरनेवाले वचन के द्वारा नया जन्म पाया है। (1 पतरस 1:22-23)

ईमानदार शब्द का अर्थ है "बिना कपट के।" यह सच्चा प्रेम केवल मसीह में बने रहने से (जैसा कि वॉल्यूम 1 में चर्चा की गई है) और प्रत्येक विश्वासी में वास करने वाले पवित्र आत्मा की शक्ति के माध्यम से सत्य का पालन करने की हमारी व्यक्तिगत इच्छा से संभव हुआ है। वॉल्यूम 1 में, हमने सीखा कि 2 पतरस 1:3 यीशु के बारे में कहता है, "उसकी ईश्वरीय सामर्थ्य ने हमें सब कुछ दिया है . . . उसके ज्ञान के द्वारा।" और वह ज्ञान सभी बातों का, और मसीह का, केवल परमेश्वर के वचन से आता है।

गहराई में अध्ययन करें

उन चार तरीकों का विवरण करें जिनमें परमेश्वर हमें दूसरों से प्यार करने के लिए कहता है, जिसमें आपका जीवनसाथी भी शामिल है।

प्रेम निष्कपट हो; बुराई से घृणा करो; भलाई में लगे रहो। (रोमियों 12:9)

सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो, क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है। (1 पतरस 4:8)

परमेश्वर अन्याय नहीं करता। वह आपके कार्यों को एवं उस प्रेम को नहीं भुला सकता, जो आपने, उसके नाम की महिमा के उद्देश्य से, इस प्रकार दिखाया कि आपने सन्तों की सेवा की और अब भी कर रहे हैं। (इब्रानियों 6:10)

हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है। जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। (1 यूहन्ना 4:7)

बाइबिल आधारित प्रेम क्या है?

बाइबल आधारित प्रेम भावनाओं पर आधारित नहीं है, न ही यह स्वाभाविक रूप से आता है। हम स्वाभाविक रूप से स्वार्थी और आत्मकेंद्रित हैं। बाइबिल आधारित प्रेम, पसंद के आधार पर एक क्रिया है। इस प्रकार का प्रेम अलौकिक है और केवल उस हृदय से आता है जो परमेश्वर को समर्पित है, क्योंकि यह उसी से आता है। अपने जीवनसाथी से ईमानदारी से प्रेम करने के लिए, आपको पहले परमेश्वर से प्रेम करना होगा और अपना हृदय उन्हें समर्पित करना होगा।

हमारी संस्कृति में प्रेम शब्द को इस कदर उछाला गया है कि इसका अर्थ ही सस्ता पड़ गया है। हम एक ही शब्द का उपयोग यह बयान करने के लिए करते हैं कि हम परमेश्वर, अपने बच्चों और कुछ खाद्य पदार्थों के बारे में कैसा महसूस करते हैं। अधिकांश पति और पत्नियाँ उत्सुकता से गवाही देंगे कि वे अपने जीवन साथी से प्रेम करते हैं। हालाँकि, एकमात्र स्तर जिसके द्वारा हम वास्तविक प्रेम को माप सकते हैं, वह परमेश्वर का वचन है।

और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। (रोमियों 5:5)

परमेश्वर ने हमें अपने जीवनसाथी को प्रेमभाव से प्रेम करने के लिए बुलाया है - एक बलिदानात्मक प्रेम जो वापस नहीं लिया जाता है यदि कोई प्रियजन माँगों या अपेक्षाओं पर खरा नहीं उतरता है। प्रेमभाव प्यार स्वयं को उस मूल्य पर आधारित करता है जो परमेश्वर ने आपके व्यक्तित्व, ताकत, कमजोरियों, या असफलताओं के आपके आकलन के बजाय आपके जीवनसाथी पर रखा है।

तथ्य - फ़ाइल

लव-अगापे (ग्रीक)। अयोग्य पापियों के प्रति परमेश्वर के हृदय की प्रतिक्रिया। परमेश् वर का प्रेम उसके प्रेम की वस्तुओं के लाभ के लिए आत्म-बलिदान में प्रदर्शित होता है। "भगवान की आवश्यक गुणवत्ता जो दूसरों के कार्यों की परवाह किए बिना दूसरों के सर्वोत्तम हितों की तलाश करती है। 1 "यह परमेश्वर को वही करने में शामिल करता है जो वह जानता है कि मनुष्य के लिए सबसे अच्छा है और जरूरी नहीं कि मनुष्य क्या चाहता है। । । उसका पुत्र मनुष्य के लिए क्षमा लाने के लिए। 2 यह बिना शर्त प्यार करना चुनता है।

लव-फिलियो (ग्रीक)। मानव आत्मा की प्रतिक्रिया जो इसे सुखद के रूप में अपील करती है। "फिलियो स्पष्ट रूप से अलग प्रतीत होता है (अगापे से) और सम्मान, उच्च

परमेश्वर के प्रेम से प्रेम करना आपकी अपनी शक्ति से असम्भव है। लेकिन परमेश्वर की स्तुति करो! जब हम मसीह को ग्रहण करते हैं, तो पवित्र आत्मा हमारे हृदयों में वास करने के लिए आता है। यदि हम समर्पण करते हैं और स्वयं के लिए मर जाते हैं, तो पवित्र आत्मा हमारे द्वारा हमारे जीवन साथी से प्रेम करेगा। क्योंकि बाइबिल का प्रेम सहानुभूति या भावनाओं पर आधारित नहीं है, यह कुछ ऐसा है जो आप करते हैं (एक क्रिया, एक संज्ञा नहीं) और इसे क्रिया में देखकर ही पहचाना जा सकता है।

इसलिए यह आवश्यक है कि आप अपने जीवन साथी को परमेश्वर का प्रेम दिखाना सीखें। अच्छी खबर यह है कि अगर यीशु मसीह के साथ हम प्रेम क्या है ी नींव ठीक से रखी जाती है, तो हम परमेश्वर की ताकत में, प्रेम के समर्थन का निर्माण करने में सक्षम हैं, जिसकी हमारे जीवन साथी को आवश्यकता है। बाधाएँ और असफलताएँ निश्चित हैं, लेकिन निराश न हों और अप्रिय व्यवहार को बहाना या स्वीकार करना शुरू न करें। महत्वपूर्ण बात यह है कि हम सुधार की इच्छा रखते हैं। हम सभी प्यार बांटने में सुधार करना शुरू कर सकते हैं, और वह क्षण तब आता है जब हम महसूस करते हैं कि अपने जीवन साथी को प्यार करना परमेश्वर के प्रति समर्पित हृदय से आता है। यह एक ऐसा व्यवहार है

जिसे हमें चुनना चाहिए, खोजना चाहिए, सीखना चाहिए और जारी रखना चाहिए। पति - पत्नी कुछ हद तक प्रेम करते हैं, लेकिन जो नाज़ुक संतुलन मौजूद है, वह प्रेम को दूर कर सकता है जब समस्याएँ गलत हो जाती हैं । हम जो चाहते हैं वह हमेशा मजबूत प्रेम है, लेकिन हमें प्रेम में उत्कृष्टता हासिल करने की जरूरत है।

पौलूस जानता था कि फिलिप्पी के लोग एक-दूसरे से प्रेम करते हैं, लेकिन उसने उन्हें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया:

मैं यह प्रार्थना करता हूँ कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए, यहाँ तक कि तुम उत्तम से उत्तम बातों को प्रिय जानो, और मसीह के दिन तक सच्चे बने रहो, और ठोकर न खाओ; और उस धार्मिकता के फल से जो यीशु मसीह के द्वारा होते हैं, भरपूर होते जाओ जिससे परमेश्वर की महिमा और स्तुति होती रहे। (फिलिप्पियों 1:9-11)

ध्यान दें कि पौलुस ने उनके लिए प्रेमपूर्ण महसूस करने के लिए प्रार्थना नहीं की, लेकिन उसके शब्द कार्रवाई के लिए एक बुलावा हैं जिसे हम अपनी प्रार्थनाओं में उपयोग कर सकते हैं। निम्नलिखित बाते आपको परमेश्वर क्या कह रहे हैं इसकी एक गहरी समझ देंगे ।

1. "कि तुम्हारा प्रेम, ज्ञान और सब प्रकार के विवेक सहित और भी बढ़ता जाए।" (पद 10)। भरपूर होने का अर्थ है "अधिक होना," पर्याप्त प्रेम से अधिक। ज्ञान, एपिग्नोसिस (ग्रीक), का अर्थ है "मानसिक रूप से कुछ जानना, लेकिन फिर उस पर कार्य करना ।" प्रार्थना यह जानना है कि बाइबल आधारित प्रेम कैसे करना है और फिर उसे जीना है। आत्मजाँच का अर्थ है " सूझ-बूझ होना, या समझने की क्षमता" और अपने निर्णय लेना और उस ज्ञान के अनुसार अपने व्यवहार का मार्गदर्शन करना।

2. " कि तुम उत्तम से उत्तम बातों को प्रिय जानो " (पद 11)। मंजूरी देना का अर्थ है "निरंतर परीक्षण करना, अपनी कार्रवाई के मंज़ूरी से पहले जांच करना।" दूसरे शब्दों में, उत्कृष्ट प्रेमभाव होने की योग्यता को पूरा करें, वह प्रेम जो परमेश्वर के वचन के स्तर को पूरा करता है, जो तब एक सच्चा प्रेम होगा।

जब आप उसके वचन का अध्ययन करते हैं तो परमेश्वर इसे आप में पूरा करे। ऊपर के पवित्र लेख का उपयोग करते हुए, एक व्यक्तिगत प्रार्थना को एक विषय सूची पर लिखें और परमेश्वर से इसे अपने जीवन में सच करने के लिए कहें। अगले कुछ पाठों के लिए, अपना अध्ययन समय शुरू करने के लिए प्रार्थना कार्ड का उपयोग करें। उदाहरण के लिए:

प्रभु यीशु, मैं इस प्रेम को हर समय मेरे द्वारा बहने के लिए कह रहा हूँ। मैं उन सभी परिस्थितियों में आपके प्रेम से छलकना चाहता हूँ जिनका मैं प्रतिदिन सामना करता हूँ। प्रभु, मेरी सहायता करें कि मैं अपने जीवनसाथी के प्रति प्रेमहीन विचार, शब्द या कार्य के लिए कभी बहाना न बनाऊं। कृपया मुझे अपना आत्मजाँच प्रदान करें कि मैं अपने विवाह में इस प्रेम को निरंतर कैसे बांटूं। यीशु, कृपया मेरे पति या पत्नी के सामने और मेरे द्वारा किए जाने वाले सभी कामों में महिमा पाएं । आमीन

गहराई में अध्ययन करें

समझाइए कि कैसे ये शास्त्र आप पर और आपके जीवनसाथी के साथ आपके रिश्ते पर लागू हो सकते हैं।

इसी लिये जिस दिन से यह सुना है, हम भी तुम्हारे लिये यह प्रार्थना और विनती करना नहीं छोड़ते कि तुम सारे आत्मिक ज्ञान और समझ सहित परमेश्वर की इच्छा की पहिचान में परिपूर्ण हो जाओ। (कुलुस्सियों 1:9)

इस संसार के सदृश न बनो; परन्तु तुम्हारे मन के नए हो जाने से तुम्हारा चाल–चलन भी बदलता जाए, जिससे तुम परमेश्वर की भली, और भावती, और सिद्ध इच्छा अनुभव से मालूम करते रहो। (रोमियो 12:2)

और यह परखो कि प्रभु को क्या भाता है। (इफिसियों 5:10)

सबसे शक्तिशाली प्रेरक

बुनियादी जरूरतें हमें इंसानों के रूप में प्रेरित करती हैं। प्रेम नंबर एक है, सबसे शक्तिशाली प्रेरक। इसके बाद भोजन, गर्मी और सुरक्षा जैसी शारीरिक अनिवार्यताएं हैं। एक अन्य प्रेरक आनंद है: शारीरिक संतुष्टि, मनोरंजन, संपत्ति, और उन चीजों को प्राप्त करना जो हम चाहते हैं। दर्द और भय भी हमें प्रेरित कर सकते हैं, अक्सर दंड, क्रोध या दयाहीनता के माध्यम से।

पति और पत्नी के रूप में, आइए हम उन सामान्य तकनीकों की जाँच करें जिनका उपयोग हम अपने जीवनसाथी को प्रेरित करने के लिए करते हैं। आप कैसा व्यवहार करते हैं जब आप अपने जीवनसाथी को किसी तरह से बदलने के लिए प्रेरित करने की कोशिश कर रहे हैं या उन्हें वह करने के लिए प्रेरित कर रहे हैं जो आप चाहते हैं या ऐसा कुछ करना बंद कर रहे हैं जो आपको परेशान करता है?

आत्म-परीक्षा 2

आप जिस प्रेरक का सबसे ज्यादा इस्तेमाल करते हैं, उस पर गोला लगाएं ।

प्रेम शारीरिक अनिवार्यताएं आनंद दर्द/दयाहीनता

आप इस प्रेरक का उपयोग क्यों और कैसे करते हैं, इस पर चिंतन करें ।

अपनी शादी में आपने जो प्रतिरूप विकसित किए हैं, उन पर विचार करने के लिए समय निकालें। उदाहरण के लिए, कुछ विवाहित जोड़ों को यह एहसास भी नहीं होता है कि वे क्रोध, ताना, सता, ध्यान न देना, या शारीरिक स्नेह को रोककर दर्द और भय का वातावरण बना रहे हैं। परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि ऐसा इसलिए होता है क्योंकि हमारे पास एक पापी स्वभाव है, और यह व्यवहार मनुष्य के रूप में स्वाभाविक रूप से हमारे पास आता है।

हालाँकि परमेश्वर हमें एक और रास्ता दिखाता है। जब आप यीशु मसीह को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करते हैं, तो उनकी पवित्र आत्मा आपके भीतर वास करने आती है। केवल तभी आपके पास अपने पापी स्वभाव से कार्य करने का विरोध करने की शक्ति है, या जिसे परमेश्वर "देह" कहता है । बाइबल कहती है कि आत्मा हमारा मार्गदर्शक है और पाप को हमारे ध्यान में लाता है। परमेश्वर की आत्मा के प्रति समर्पित होकर, हम प्रेम के बारे में उसके द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन कर सकते हैं। अक्सर जोड़े एक दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं जो स्वाभाविक रूप से आता है, न कि परमेश्वर के वचन के अनुसार।

किस बात ने यीशु को हमारे लिए आने और मरने के लिए प्रेरित किया? यूहन्ना 3:16 कहता है, "क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।" यह प्रेम ही था जिसने यीशु को हमारे लिए क्रूस पर आने और मरने के लिए प्रेरित किया, न कि उसके पिता का भय। इसके द्वारा, हम देखते हैं कि प्रेम हमें बदलने के लिए परमेश्वर का प्राथमिक उद्देश्य और प्रेरक है।

गहराई में अध्ययन करें

प्रेम प्रदर्शित करने के बारे में ये पद क्या कहते हैं? आप इसे अपने जीवनसाथी से प्यार करने के लिए कैसे लागू कर सकते हैं?

“परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।” (रोमियों 5:8)

मैं तुम्हारी आत्माओं के लिये बहुत आनन्द से खर्च करूँगा, वरन् आप भी खर्च हो जाऊँगा। क्या जितना बढ़कर मैं तुम से प्रेम रखता हूँ, उतना ही घटकर तुम मुझ से प्रेम रखोगे? (2 कुरिन्थियों 12:15)

हे प्रियो, हम आपस में प्रेम रखें; क्योंकि प्रेम परमेश्वर से है। जो कोई प्रेम करता है, वह परमेश्वर से जन्मा है और परमेश्वर को जानता है। (1 यूहन्ना 4:7)

परिवर्तन की आवश्यकता है!
हम इस बात से सहमत हो सकते हैं कि कुछ रवैयों को और व्यवहारों को बदलने की जरूरत है। हम खुद को देख सकते हैं और अपनी गलतियों का एहसास कर सकते हैं। और शादी हमें हमारे पापी स्वभाव को दिखाने की गारंटी है।

शादी के कितने समय बाद आपको एहसास हुआ कि आपका नया, आजीवन साथी कभी-कभी प्यारा या आकर्षक नहीं था? क्या आपने विचार किया कि वे आपके प्रति समान रवैया बना रहे थे? उस समय, जोड़े विवाह के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों में से एक का अनुभव करना शुरू कर रहे हैं: प्रत्येक व्यक्ति को मसीह की छवि में बदलना, जिसका अर्थ है उसके व्यवहार और चरित्र को विकसित करना ।

हो सकता है कि आप अपने जीवनसाथी को बदलना चाहें, लेकिन परमेश्वर आपको बदलना चाहता है, और वह उस दूसरे व्यक्ति का उपयोग आपको यह दिखाने के लिए करेगा कि आप वास्तव में कौन हैं। वॉल्यूम 1 में, हमने विवाह के लिए परमेश्वर के दूसरे उद्देश्य को हमारे परिवर्तन के रूप में सूचीबद्ध किया है।

जब हम बाइबल के निर्देशों के प्रति आज्ञाकारी होकर परमेश्वर की पवित्र आत्मा को अपने भीतर काम करने की अनुमति देते हैं, तो हम परमेश्वर और अपने जीवनसाथी दोनों के लिए प्रेम दिखा रहे हैं। कुलुस्सियों 3:8 कहता है, "अब तो आप लोगों को क्रोध, उत्तेजना, द्वेष, परनिन्दा और अश्लील बातचीत सर्वथा छोड़ देनी चाहिए।" ये प्यार के विपरीत हैं, और टालने का अर्थ है "जानबूझकर कुछ करना बंद करना।" इसके बजाय, हमें परमेश्वर की आत्मा के नेतृत्व में चलना चाहिए, जो हमें एक पश्चातापी रवैया देता है। परमेश्वर, मैं जानता हूं कि यह गलत है, मुझे माफ कर दो, और कृपया मुझे जिम्मेदारी लेने का अनुग्रह दें, अपने जीवनसाथी से माफी मांगें और दूर जाने और जो आपके सामने सही है वह करें।

प्रेम: प्रतिक्रिया या जवाब ?

परमेश्वर ने कुलुस्सियों में जिस तरह की बुरी बातचीत का ज़िक्र किया है, उसे हम कैसे छोड़ सकते हैं? एक तरीका है क्रोध में प्रतिक्रिया करने के बीच अंतर करना जो हमारे देह के प्रति प्रतिक्रिया है और प्रेम में प्रतिक्रिया देना जो पवित्र आत्मा के अनुसार है।

तथ्य - फ़ाइल

प्रतिक्रिया-उत्तेजक या उत्तेजना के जवाब में कार्य करने के लिए, विपक्ष में कार्य करने के लिए।

देह में प्रतिक्रिया करना–एक मसीही विश् वासी किसी स्थिति पर पापी रीति से, अपने पुराने पतन स्वभाव की आदत में, या पवित्र आत्मा की सामर्थ्य और बुद्धि के बजाय अपनी सामर्थ्य और समझ में प्रतिक्रिया करता है

देह में प्रतिक्रिया

प्रतिक्रिया करना एक उद्देश्यपूर्ण या सक्रिय मन की स्थिति नहीं है और अनिवार्य रूप से एक नकारात्मक क्रिया बन सकती है। किसी से प्रेम करना बहुत अच्छा नहीं होगा - यदि हम केवल उस व्यक्ति पर प्रतिक्रिया दे रहे हैं ।

विवाहित मसीही और मसीही विवाह में अंतर है। बहुत बार मसीही जोड़े एक दूसरे के प्रति प्रतिक्रिया "देह में," या पाप के रूप में कर रहे हैं, और कोई भी व्यक्ति अपने स्वयं के व्यवहार की जिम्मेदारी नहीं लेगा। क्या आपने कभी सोचा है, मैंने केवल ऐसा कहा या ऐसा इसलिए किया कि उन्होंने पहले क्या किया? बाइबल में इसके लिए कोई न्यायसंगति नहीं है। हम जो करते हैं या जो नहीं करते हैं उसके लिए हम किसी को दोष नहीं दे सकते। यह हमारा पापी स्वभाव है, और इसके परिणाम हैं।

सेवकों के रूप में, नकारात्मक तरीके से प्रतिक्रिया करना पाप है और परमेश्वर की गलत व्याख्या है। हमें अपने जीवनसाथी के प्रति किसी भी परिस्थिति में नकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं करनी चाहिए। प्रतिक्रिया करने में कोई विचार नहीं होता है - एक "बिना दिमाग के " - जो कुछ भी दिमाग में आता है, हम बस उसके साथ चलते हैं। प्रतिक्रिया करना हमारे पापी स्वभाव से है और आत्म-संयम का प्रदर्शन नहीं है, यह आत्मा का एक फल है (गलातियों 5:22-23)

जब आपका जीवनसाथी कुछ ऐसा करता है जो आपको पसंद नहीं है, तो आप गलत तरीके से प्रतिक्रिया कर सकते हैं जो पहली बात दिमाग में आती है, जो अक्सर कठोर शब्द चिल्लाती है या आशाहीन या भयभीत चेहरे के भावों का उपयोग करती है। अन्य रणनीतियाँ मौन, अस्वीकृति, संभोग को रोकना और अलगाव हैं। हमारे जीवनसाथी के प्रति पापपूर्ण प्रतिक्रियावादी भावों की सूची बहुत लंबी हो सकती है। जब हम उस चोट के साथ ठीक से व्यवहार नहीं करते हैं, तो इंफेक्शन (पाप) अंदर आ जाता है और कड़वाहट लाता है, फिर नाराजगी, और हम अपने जीवनसाथी को और दूर कर सकते हैं।

भावनाओं के विस्फोट के साथ परिस्थितियों पर प्रतिक्रिया करने में न तो समय लगता है और न ही प्रयास। यह तात्कालिक है। नीतिवचन 15:1 कहता है, " परन्तु कटुवचन से क्रोध भड़क उठता है।" फिर भी बाइबल कहती है कि हमें कठोर कार्यों को समाप्त करना है, या "दूर" करना है (कुलुस्सियों 3:8)। हमें इस सच्चाई को स्वीकार करना है और अपने जीवनसाथी के प्रति हर पापपूर्ण प्रतिक्रिया को रोकने के लिए सचेत निर्णय लेना है।

गहराई में अध्ययन करें

प्रत्येक नकारात्मक दृष्टिकोण या भावना को पहचानें और इसे परिणाम से जोड़ें। यदि इनमें से कोई भी आपके जीवन में है, तो लिखें कि आपको क्या बदलने की आवश्यकता है।

क्रोध से परे रह, और जलजलाहट को छोड़ दे! मत कुढ़, उससे बुराई ही निकलेगी। (भजन संहिता 37:8)

तो आप लोगों को अपना पहला आचरण और पुराना स्वभाव त्याग देना चाहिए, क्योंकि वह बहकाने वाली दुर्वासनाओं के कारण बिगड़ता जा रहा है। (इफिसियों 4:22)

क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता। (याकूब 1:20)

मुक़द्दमे से हाथ उठाना, पुरुष की महिमा ठहरती है; परन्तु सब मूढ़ झगड़ने को तैयार होते हैं। (नीतिवचन 20:3)

पत्थर तो भारी है और बालू में बोझ है, परन्तु मूढ़ का क्रोध उन दोनों से भारी है। (नीतिवचन 27:3)

कार्य योजना

परमेश्वर और अपने जीवनसाथी के प्रति संकल्प लिखें कि जब भी आप कुछ अप्रिय कहें या करें तो क्षमा माँगने की शक्ति के लिए प्रतिदिन प्रार्थना करें। एक प्रार्थना को विकसित करने के लिए इसका उपयोग करें, और एक याद दिलाने वाले के रूप में अपने बाथरूम के शीशे पर लगाने के लिए इसे एक इंडेक्स कार्ड पर लिखें।

अपने जीवनसाथी को इसे पढ़ने दें, या इसे लिख कर उन्हें दे दें।

पाठ - 2
प्यार में जवाब देना

जब हम प्रतिक्रियाशील होते हैं तो हम विश्वासयोग्य या सकारात्मक व्यवहार करते हैं जो प्रतिक्रिया के विपरीत है।

इसलिये हम कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं (2 कुरिन्थियों 10:5)।

जवाब देने में आत्म-नियंत्रण भी होता है। हमें अपनी इच्छा को परमेश्वर की शक्ति के अधीन लाना चाहिए, जो आत्मा के फल को खिलने देती है। " पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है। " (गलातियों 5:22-23)। पवित्रशास्त्र कहता है कि हमें अपने विश्वास की नींव में आत्म-नियंत्रण को जोड़ना चाहिए।

तथ्य - फ़ाइल

जवाब दें- जब हम किसी को जवाब देते हैं, तो हम "सकारात्मक या अनुकूल प्रतिक्रिया करते हैं। 5

प्रेम में उत्तर देना—एक मसीही विश्वासी के लिए, पवित्र आत्मा के आंतरिक मार्गदर्शन, प्रेम, बुद्धि और शक्ति के

इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर समझ, और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति, और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति और भाईचारे की प्रीति पर प्रेम बढ़ाते जाओ। (2 पतरस 1:5-7)

प्रतिक्रिया दिखाने के बजाय जवाब देना सीखने में समय लगता है । बुरे व्यवहार को भूलने के लिए पहले ज़रूरी है कि मन नई जानकारी को स्वीकार करे, तब परिवर्तन करने की इच्छा पूर्व बुरे मनोवृत्तियों और प्रतिक्रियाओं से अधिक मजबूत होती है । असफलता कबूल करने, पश्चाताप करने और क्षमा मांगने का अवसर है। इस विकास प्रक्रिया के दौरान, आपको पता चल सकता है कि गर्म स्थिति से दूर जाने के लिए कुछ समय निकालना सहायक है । जब वे पुरानी भावनाएँ बढ़ने लगती हैं, तो प्रार्थना में जाए, परमेश्वर से ज्ञान और शक्ति के लिए इस तरह से स्थिति को संभालने के लिए कहें जो उनका सम्मान करे और आपके जीवनसाथी को प्यार से प्रोत्साहित करे।

परमेश्वर का वचन हमें बिना शर्त प्रेम प्रदर्शित करते हुए एक दूसरे को प्रेमपूर्वक जवाब देने का निर्देश देता है। नीतिवचन 15:28 कहता है, " धर्मी मन में सोचता है कि क्या उत्तर दूँ।" इसका अर्थ है कि जो सही है उसके लिए परमेश्वर के वचन की ओर देखना, जिसके परिणामस्वरूप सही व्यवहार होता है।

परमेश्वर का वचन सत्य है और आत्म-मूल्यांकन का एकमात्र वैध आधार है। मसीह के चेलो के रूप में, हम इस बात पर भरोसा नहीं करते कि हमारे माता-पिता या किसी और ने इसे कैसे किया, लेकिन हम परमेश्वर के वचन को देखते हैं और पूछते हैं, “परमेश्वर, आप किस व्यवहार की इच्छा रखते हैं? सत्य क्या है?"

हे मेरे प्रिय भाइयो, यह बात तुम जान लो : हर एक मनुष्य सुनने के लिये तत्पर और बोलने में धीर और क्रोध में धीमा हो, क्योंकि मनुष्य का क्रोध परमेश्वर के धर्म का निर्वाह नहीं कर सकता। (याकूब 1:19-20)

आप शायद यह महसूस न करें कि अपने साथी के प्रति पापमय कार्यों का प्रयोग न केवल उन परिवर्तनों को पूरा करने में असफल रहता है जो आप चाहते हैं बल्कि वास्तव में उन्हें बदतर मनोवृत्ति और प्रतिक्रियाओं की ओर उत्तेजित कर सकता है ।

हो सकता है कि यह पैटर्न आपके जीवन में बचपन से मौजूद रहा हो, आपके माता-पिता एक-दूसरे के प्रति और आपके प्रति असम्मानजनक रहे हों, जिससे आपके घर में अशांति फैल गई हो। परमेश्वर कहते हैं कि पापपूर्ण संचार दूसरों को निराश करता है और आगे के अधर्मी कार्यों को उकसाता है। हमारे व्यवहार को परमेश्वर के वचन द्वारा निर्धारित करने की आवश्यकता है। प्रभु चाहता है कि हम सच्चाई के अनुसार जवाब दें, सहानुभूति और भावनाओं के अनुसार नहीं।

परमेश्वर चाहता है कि लोग उसके स्वभाव को प्रतिबिम्बित करके उसकी महिमा करें। क्या आपने अपनी शादी के इस उद्देश्य को स्वीकार किया है और अपनाया है, परमेश्वर को महिमा देने के लिए?

जो विलम्ब से क्रोध करनेवाला है वह बड़ा समझवाला है, परन्तु जो अधीर है, वह मूढ़ता की बढ़ती करता है। (नीतिवचन 14:29)

अशुद्ध प्रतिक्रियाएँ पवित्र आत्मा से नहीं, बल्कि आपके देह या पाप स्वभाव का एक कार्य हैं । देह स्वाभाविक रूप से आत्म-केन्द्रित, आत्म-प्रेमी, और दूसरों के प्रति प्रेमहीन है। परिवर्तन होने से पहले हमें इसकी जिम्मेदारी लेनी शुरू कर देनी चाहिए। जिस तरह से हम एक-दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं, उसके कारण हमारे घरों में अशांति का राज है। हमें अपने व्यवहार के लिए एकमात्र स्तर के रूप में परमेश्वर के वचन की सच्चाई के लिए अपने हृदय को खोलना चाहिए।

“हे गुरु, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?” उसने उससे कहा, “तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।" (मत्ती 22:36-39)

क्या आपका जीवनसाथी आपके पड़ोसी से ज्यादा करीब है? आशापूर्वक हाँ। हालांकि कभी-कभी पड़ोसी के साथ और भी अच्छा व्यवहार किया जाता है। आप कह सकते हैं, “ठीक है, मुझे अपने पड़ोसी के साथ रहने की ज़रूरत नहीं है। आप मेरे जीवनसाथी को नहीं जानते। इसलिए मैं वही करता हूं जो मैं करता हूं और जो मैं कहता हूं वह कहता हूं। हालाँकि, परमेश्वर का वचन यह नहीं कहता है, यह केवल हमें बताता है कि हमें एक दूसरे से प्रेम करने की आवश्यकता है। बाइबल कहती है कि हमें प्रेम को "पहनना" है। यह क्रिया एक विकल्प है, भावना नहीं।

इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बाँध लो। (कुलुस्सियों 3:14)

हमें प्रेम करने की तीव्र इच्छा होनी चाहिए। कभी-कभी, आप अपने जीवनसाथी से प्रेम करने का मन नहीं कर सकते हैं और निश्चित रूप से उन्हें अवसर देते हैं कि वे आपसे प्रेम नहीं करना चाहते हैं। हो सकता है कि आपने अपनी देह को शासन करने की अनुमति दी हो और वही कहा हो जो स्वाभाविक रूप से मन में आया था।

परमेश्वर के अनुग्रह से, आप कई तरह से परिवर्तित हो सकते हैं जब आप स्वयं को पवित्र आत्मा के अधीन करना सीखते हैं। आप सिद्ध नहीं होंगे, मगर आप सुधर सकते हैं और समय बीतने के साथ-साथ अधिक से अधिक मसीह का उदाहरण दें सकते हैं ।

हम सभी परमेश्वर की छवि में परिवर्तन का अनुभव कर सकते हैं और एक दूसरे के लिए परमेश्वर के प्रेम को और अधिक प्रदर्शित कर सकते हैं। मार्ग आज्ञाकारिता है। उन पलों को लें जब देह ऊपर उठता है और अपने आप से कहने का चुनाव करता है, मुझे ऐसा करने का मन करता है, ऐसा कहने जैसा लगता है, लेकिन, प्रभु, मैं अभी आपसे अपना मुंह बंद करने की शक्ति मांग रहा हूं और उस टेढ़े-मेढ़े, कुरूप को नहीं पहनने के लिए कह रहा हूं। अपने चेहरे के भावों और हाव-भाव से अवगत रहें, जो विशेषज्ञ कहते हैं कि यह हमारे संचार का 55 प्रतिशत है।

यह केवल हमारे लिए परमेश्वर की इच्छा को जानने के द्वारा है, जो उसके वचन में पाई जाती है, और आज्ञाकारी रूप से उसकी आत्मा की शक्ति के प्रति समर्पित होकर ही हम आत्म-संयम में बढ़ सकते हैं। हालांकि, हम कभी भी सिद्ध नहीं होंगे ।

असफलता का अर्थ है कि हम पूर्ण नहीं हैं, लेकिन यदि हम अपने पापों को परमेश्वर और अपने जीवन साथी के सामने अंगीकार कर रहे हैं और क्षमा मांग रहे हैं तो हम लगातार मसीह के समान बढ़ सकते हैं। यह परमेश्वर के प्रेम और दया के कारण है कि वह हमें क्षमा करता है। जब हम मसीह में बने रहते हैं, तो हम उसकी क्षमा को स्वीकार करना और दूसरों को क्षमा करना सीखेंगे।

आत्म-परीक्षा

अपने जीवनसाथी के साथ आपके द्वारा उपयोग की जाने वाली कुछ नकारात्मक चेहरे या मौखिक प्रतिक्रियाओं की सूची बनाएं।

कार्य योजना 1

जब आप इस क्षेत्र में विफल होते हैं तो ईमानदारी से क्षमा माँगने के लिए परमेश्वर के अनुग्रह का अनुरोध करते हुए एक प्रार्थना लिखें।

गहराई में अध्ययन करें

प्रेम के विषय में हमारी जिम्मेदारियों की सूची बनाएं ।

मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूँ कि एक दूसरे से प्रेम रखो; जैसा मैं ने तुम से प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक दूसरे से प्रेम रखो। (यूहन्ना 13:34)

इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बाँध लो। (कुलुस्सियों 3:14)

वरन् प्रेम में सच्चाई से चलते हुए सब बातों में उसमें जो सिर है, अर्थात् मसीह में बढ़ते जाएँ। (इफिसियों 4:15)

अत: जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन–मन लगाकर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो। (1 पतरस 1:22)

सब में श्रेष्ठ बात यह है कि एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो, क्योंकि प्रेम अनेक पापों को ढाँप देता है। (1 पतरस 4:8)

बाइबल विभिन्न प्रकार के प्रेम के बारे में बात करती है, परन्तु हम यहाँ जिस यूनानी शब्द का उल्लेख कर रहे हैं वह अगापे है। नेल्सन न्यू इलस्ट्रेटेड बाइबल डिक्शनरी कहती है, "लोकप्रिय समझ के विपरीत, अगापे प्रेम का महत्व यह नहीं है कि यह बिना शर्त प्रेम है, बल्कि यह मुख्य रूप से भावनाओं के बजाय इच्छा का प्रेम है।" हमें परमेश्वर के कहे अनुसार अपने जीवनसाथी से प्रेम करने की इच्छा के लिए प्रार्थना करनी चाहिए। वास करने वाली पवित्र आत्मा हमें क्षमता देती है, लेकिन हमें इसकी इच्छा करनी चाहिए और इसका पीछा करना चाहिए। परमेश्वर हमारे दिलों को जानता है, और यदि आपका दिल उसमें नहीं है, तो आप सफल नहीं होंगे ।

कुछ विवाहित जोड़े वास्तव में इस क्षेत्र में संघर्ष करते हैं। वे कहते हैं कि वे प्रभु का पीछा करना चाहते हैं और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी बनना चाहते हैं। हालाँकि, वे हर दिन इस प्रेम के विपरीत व्यवहार करते हुए, परमेश्वर के प्रेम के चार या पाँच विवरणों को तोड़ना जारी रखते हैं। यदि आप बदलना चाहते हैं तो यह जानने का एकमात्र तरीका है कि आप परमेश्वर और अपने जीवनसाथी के सामने अपने पाप को स्वीकार करने और क्षमा माँगने की इच्छा रखते हैं।

क्या आप यह कहते हुए पहले परमेश्वर के पास और फिर अपने जीवनसाथी के पास जाने को तैयार हैं, "आप जानते हैं, मैंने जो कहा वह गलत था और मैं क्षमा माँग रहा हूँ"? यदि नहीं, तो आप परिवर्तन नहीं चाहते क्योंकि परमेश्वर ने परिवर्तन के लिए जो प्रक्रिया तैयार की है वह अंगीकार और पश्चाताप है। यह प्रभु, स्वयं (हमारा देह), और हमारे जीवनसाथी को दिखा रहा है कि हम बदलना चाहते हैं और उन्हें परमेश्वर के मार्ग से प्रेम करना शुरू करते हैं।

गहराई में अध्ययन करें

गौर कीजिए कि पश्चाताप करने और आज्ञा मानने से परमेश्वर के साथ और अपने साथी के साथ आपके रिश्ते पर क्या असर हो सकता है ।

परन्तु पहले दमिश्क के, फिर यरूशलेम के, और तब यहूदिया के सारे देश के रहनेवालों को, और अन्यजातियों को समझाता रहा, कि मन फिराओ और परमेश्वर की ओर फिर कर मन फिराव के योग्य काम करो। (प्रेरितों 26:20)

तथ्य - फ़ाइल

प्रायश्चित करना - समाधान करना; अपने पापों के पछतावे के परिणामस्वरूप अपने जीवन में सुधार करना; परमेश्वर के सामने किसी ने क्या किया या करने से चूक गया, इसके लिए खेद महसूस करना। घूमने और दूसरी दिशा में जाने के लिए; अपने मन, इच्छा और जीवन को बदलने के लिए. जिसके

क्या तू उसकी कृपा, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन को तुच्छ जानता है? क्या यह नहीं समझता कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है? (रोमियों 2:4)

मैं तुम से कहता हूँ कि इसी रीति से एक मन फिरानेवाले पापी के विषय में भी स्वर्ग में इतना ही आनन्द होगा, जितना कि निन्यानबे ऐसे धर्मियों के विषय नहीं होता, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं। (लूका 15:7)

"जब तक यहोवा मिल सकता है तब तक उसकी खोज में रहो,
जब तक वह निकट है तब तक उसे पुकारो;
दुष्ट अपनी चालचलन और अनर्थकारी अपने सोच विचार छोड़कर यहोवा ही की ओर फिरे,
वह उस पर दया करेगा,
वह हमारे परमेश्वर की ओर फिरे और वह पूरी रीति से उसको क्षमा करेगा। (यशायाह 55:6–7)

अगापे अध्याय, 1 कुरिन्थियों 13

हमारी संस्कृति में, प्रेम शब्द को हल्के-फुल्के अंदाज में उछाला जाता है। हम कहते हैं कि हम एक विशेष भोजन, एक नई कार और एक नया हेयरकट पसंद करते हैं, और फिर अपने जीवनसाथी को "मैं तुमसे प्रेम करता हूँ" कहते हैं। कुछ लोगों को अपने जीवनसाथी को "लव या" कहने की आदत हो गई है। किसी अन्य व्यक्ति से उचित रूप से प्रेम करने के लिए, हमें विवरण के लिए परमेश्वर के वचन को देखना चाहिए। परमेश्वर का वचन कहता है कि यह आपको पूर्ण बना सकता है ताकि आप हर अच्छे काम के लिए पूरी तरह से तैयार रहें । (2 तीमुथियुस 3:17)

1 कुरिन्थियों 13 में, परमेश्वर इस अगापे प्रेम की व्याख्या करता है, और हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम इस सत्य का अध्ययन करने और स्वयं का मूल्यांकन करने के लिए समय निकालें।

"प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है।" (1 कुरिन्थियों 13:4-7)

क्या आपके पास यह सब नियंत्रण में है? शायद नहीं। हममें से किसी के लिए भी प्रेम के इस व्याख्या को ग्रहण करना और इसे अपनी शक्ति से करना असंभव है। यह नापने का उपकरण देने और यह कहना, "ठीक है, मैं चाहता हूँ कि आप इसे स्वयं करें, यह परमेश्वर की योजना कभी नहीं थी।"

इसके बजाय, परमेश्वर कहते हैं, "आपके पास मेरी पवित्र आत्मा की शक्ति है, लेकिन आपको आज्ञाकारिता की इच्छा करनी चाहिए और पश्चाताप करने के लिए तैयार रहना चाहिए।" इसके लिए परमेश्वर के वचन का पालन करने और मसीह में बने रहने के लिए निरंतर प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है, जो आपके जीवन में और उसके माध्यम से शक्ति और परिवर्तन लाएगा। तब, परमेश्वर का प्रेम, अगापे प्रेम, आप में से दूसरों के लिए बहने लगेगा ।

गलातियों 5:22-23 प्रेम को पहले आत्मा के फल में सूचीबद्ध करता है। आपने कभी किसी संतरे के पेड़ को संतरा पैदा करने के लिए कुड़कुड़ाते और छटपटाते हुए कब देखा है? आप छाल के नीचे की गतिविधि को नहीं देख सकते हैं, लेकिन फल एक स्वस्थ पेड़ पर उग आते हैं। आत्मिक सिद्धांतों को दर्शाने के लिए, फल देने वाले पेड़ की तरह, परमेश्वर हमें अपने वचन में उदाहरण देता है। हमारे जीवन में प्रेम का फल उसके साथ हमारी आत्मीयता और प्रेम को धारण करने के हमारे चुनाव का उप-उत्पाद है। जब हम ऐसा करते हैं, जब हम मसीह में बने रहते हैं और आत्मिक फल की इच्छा रखते हैं, तो परमेश्वर उसे उत्पन्न करने की प्रतिज्ञा करता है।

वाक्यांश द्वारा वाक्यांश

जब हम आने वाले अध्यायों में 1 कुरिन्थियों 13:4-7 को एक-एक करके देखते हैं, तो जान लें कि परमेश्वर हमारी असफलताओं के लिए हमारी निंदा नहीं कर रहा है। पाप के प्रति जागरूकता एक अच्छी बात है क्योंकि यह पवित्र आत्मा से आती है। यदि आप दोषी महसूस करते हैं, तो प्रभु की स्तुति करें। सच्चा विश्वास हमें पश्चाताप की ओर ले जाता है, हमारे दिलों को बदल देता है, और हमें सुधारने की इच्छा देता है (2 कुरिन्थियों 7:9-11)। निंदा परमेश्वर की ओर से नहीं है (रोमियों 8:1) बल्कि शत्रु नरक के गड्ढे से आती है, और हमें अंतर जानने की आवश्यकता है।

प्रेम क्या नहीं है

1. प्रेम बेसब्र नहीं है।

जब हम इस शास्त्र का अध्ययन करते हैं, तो परमेश्वर आपसे उस मूल्य के बारे में बात करेगा जो आपने अपने जीवनसाथी और परमेश्वर के वचन पर रखा है। आपका व्यवहार इस बात का सूचक है कि आपके दिल में क्या है। आप विश्वास महसूस कर सकते हैं क्योंकि ज्यादातर लोग स्वार्थ या अज्ञानता के कारण हर दिन इनमें से चार या पांच गुणों को तोड़ रहे हैं। कितना समय हो गया जब आपने अपने दिल में कहा, मुझे (आपके जीवनसाथी को नहीं) बदलने की जरूरत है, और मैं इस तरह से व्यवहार करना बंद करने जा रहा हूं?

तथ्य - फ़ाइल

लंबे समय तक धैर्य या धैर्य-लंबे समय तक स्वभाव का होना, जल्दबाजी में क्रोध के विपरीत; लोगों को वार्ड करने के लिए समझ और धैर्य का प्रयोग करना शामिल है। इसके लिए यह भी आवश्यक है कि हम परिस्थितियों को सहन करें, विश्वास न खोएं या हार

पहले कुरिन्थियों का कहना है कि प्रेम "लंबे समय तक सहन करता है," और हमें ऐसा करने की आज्ञा देता है। धीरज धरने, या धैर्य रखने के विपरीत, बेसब्री है। प्रेम बेसब्र नहीं है। यदि हम अपने जीवनसाथी से स्वार्थी अपेक्षाएँ रखते हैं और उसके विफल होने पर क्रोधित हो जाते हैं, तो हम बेसब्र हो रहे हैं और परमेश्वर के स्तर के अनुसार उन्हें उचित रूप से प्रेम करने में असफल हो रहे हैं।

क्या आप कभी बेसब्र महसूस करते हैं? क्या आपको कभी नफरत महसूस होती है? यह प्रेम के विपरीत होगा। ऐसी स्थिति जिसमें न्याय करना कठिन नहीं है, दो लोगों के बीच कोई समझौता नहीं है। नफरत से पहले कोई न्यूट्रल जोन नहीं होता । यदि आप परमेश्वर के वचन के विपरीत कुछ करते हैं, तो यह घृणा है। बाइबल में केवल एक ही शब्द इसका विवरण करता है—पाप। जब आप परमेश्वर की योजना के विपरीत कार्य करते हैं, तो आप अपने जीवनसाथी से घृणा कर रहे हैं, जो कि परमेश्वर की अवज्ञा है और पाप है। पीरियड ।

शायद आपने सुना हो कि विरोधी आकर्षित करते हैं। यह खुद को अनगिनत तरीकों से प्रकट कर सकता है। उदाहरण के लिए, समय पर स्थानों पर पहुंचना। हो सकता है कि पति दस मिनट पहले वहां पहुंचना चाहें। फैशन के अनुसार देर से आने पर पत्नी आरामदायक हो सकती है।

यह पति के लिए धैर्य के क्षेत्र में एक बड़ा मुद्दा बना सकता है, भले ही पत्नी समझ जाए कि वह निराश क्यों है। यह महत्वपूर्ण संघर्ष पैदा कर सकता है क्योंकि प्रत्येक पति-पत्नी सीखते हैं कि दूसरे को कैसे समायोजित किया जाए ।

प्राथमिकता और सत्य के बीच अंतर पर विचार करें। क्या व्यक्तिगत पसंद गलत हो सकती है? हां। यदि व्यक्तिगत पसंद परमेश्वर की इच्छा के विपरीत है या किसी और को चोट पहुँचा रही है, तो यह पापपूर्ण और गलत है।

जो आज्ञा मैं तुम को सुनाता हूँ उसमें न तो कुछ बढ़ाना, और न कुछ घटाना; तुम्हारे परमेश्वर यहोवा की जो जो आज्ञा मैं तुम्हें सुनाता हूँ उन्हें तुम मानना। (व्यवस्थाविवरण 4:2)

तथ्य - फ़ाइल

पसंद - एक दूसरे से पहले या ऊपर क्या पसंद करता है। यह न तो सही है और न ही गलत बल्कि व्यक्तिगत पसंद है।

सत्य—परमेश्वर के वचन से; सही और गलत क्या है स्पष्ट करता है।

क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूँ, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या एक बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। इसलिये जो कोई इन छोटी से छोटी आज्ञाओं में से किसी एक को तोड़े, और वैसा ही लोगों को सिखाए, वह स्वर्ग के राज्य में सबसे छोटा कहलाएगा; परन्तु जो कोई उन आज्ञाओं का पालन करेगा और उन्हें सिखाएगा, वही स्वर्ग के राज्य में महान् कहलाएगा। (मत्ती 5:18–19)

एक विवाहित जोड़े के रूप में, आपके पास अपनी व्यक्तिगत प्राथमिकताओं से समझौता करने के कई अवसर होंगे। कभी-कभी हमें अपनी अपेक्षाओं को कम करने की आवश्यकता होती है। ऊपर के पति के लिए, वह महसूस कर सकता था कि यह कोई महत्वपूर्ण घटना नहीं है, इसलिए उन्हें वहाँ दस मिनट पहले आने की आवश्यकता नहीं है। यह सिर्फ एक आदत है, नैतिक मुद्दा नहीं है, इसलिए वह समायोजित करना चुन सकता है और महसूस कर सकता है कि उसकी पत्नी के प्रति उसकी बेसब्री पाप है। समय पर घर से बाहर निकलने की कोशिश करने से निराश होने के बजाय, पत्नी अपने पति से बच्चों को तैयार करने में मदद के लिए कह सकती थी ताकि वे जल्दी जा सकें ।

ये रवैया अंदरूनी हैं, लेकिन हम जानते हैं कि ये हमारे रिश्तों को बड़े पैमाने पर प्रभावित करते हैं। कहीं गाड़ी चलाना और अपने जीवनसाथी के साथ पूरे रास्ते बहस करना निराशाजनक हो सकता है, खासकर कलीसिया जाते समय । लगभग किसी भी लम्बाई से विवाहित जोड़े इस तरह के मुद्दे के साथ पहचान कर सकते हैं।

लेकिन आप ऊपर के पति की तरह अपनी निराशा और बेसब्री पर विजय प्राप्त कर सकती हैं। हम सभी संघर्ष करते हैं, और उम्मीद है कि आप उन क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं जहां आप बेसब्री को शासन करने की अनुमति दे रहे हैं, अपने जीवनसाथी के प्रति अच्छी भावनाओं को मिटा रहे हैं। इस तरह से पाप प्रवेश करता है और एक विवाह को क्रोध और द्वेष की भावनाओं से भरकर नष्ट कर देता है। हम सभी को चौकस रहने की जरूरत है, जब हमारे जीवनसाथी के लिए कुछ महत्वपूर्ण हो तो जागरूक होना और उनकी मदद करने या उनके लिए अपने जीवन को समायोजित करने के लिए अतिरिक्त मेहनत करने को तैयार रहना चाहिए। हमें अपनी अपेक्षाओं को कम करने और अपने व्यवहार में समायोजन करने की आवश्यकता हो सकती है।

“क्या तू उसकी कृपा, और सहनशीलता, और धीरजरूपी धन को तुच्छ जानता है? क्या यह नहीं समझता कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन फिराव को सिखाती है?” (रोमियों 2:4)

धैर्य आत्मा का फल है, न कि वह फल जो स्वाभाविक रूप से हममें आता है। "परन्तु आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, और धीरज है" (गलातियों 5:22)। क्या आप समाधान के साथ आ रहे हैं जहां बेसब्री है, या आप कठोर हो गए हैं और कहा है, "मैं ऐसा हूं, और आप ऐसे हैं"? बेसब्री पाप है। एक सफल विवाह के लिए, आपको परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के लिए अपने जीवनसाथी के साथ काम करने की आवश्यकता है, जिसके लिए विनम्रता, पश्चाताप और परमेश्वर और दूसरों को प्रसन्न करने की इच्छा की आवश्यकता होती है।

यह रुकने और प्रभु के साथ अपने संबंधों पर विचार करने के लिए एक अनोखा स्थान है। आपके मसीह के पास आने से पहले, परमेश्वर सब्र से आपको एक ऐसे स्थान पर ले जा रहा था जहाँ आप उसके सामने आत्मसमर्पण कर देंगे, और अब भी परमेश्वर आपकी अज्ञानता और अवज्ञा के प्रति सहनशील है।

1 कुरिन्थियों 13:4 में उस वाक्यांश को याद रखें जो कहता है कि प्रेम "लंबे समय तक सहन करता है । यह लंबे समय तक पीड़ा देने वाले शब्द से लिया गया है। ध्यान दें, यह परमेश्वर की लंबे समय तक सहनशीलता और भलाई है जो हमें पश्चाताप की ओर ले जाती है, न कि परमेश्वर के क्रोध और बेसब्री की ओर। क्या हमें अपने जीवन-साथी के प्रति वैसा ही रवैया नहीं दिखाना चाहिए?

प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नष्ट हो, वरन् यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले। (2 पतरस 3:9)

ओह, परमेश्वर हमारे प्रति वास्तव में कितना सहनशील है!

कार्य योजना 2

तीन क्षेत्रों की सूची बनाएं जहां आप अपने पति या पत्नी के साथ बेसब्र हैं, और परमेश्वर से आपको माफ करने के लिए कहें। फिर, अपने जीवनसाथी से कहें कि वह आपको प्रत्येक क्षेत्र के लिए विशेष रूप से क्षमा करे। प्रार्थना करने के लिए इन क्षेत्रों को समर्पित करके पालन करें, बदलने के लिए शक्ति और ज्ञान के लिए परमेश्वर से कहें।

गहराई में अध्ययन करें

पौलुस ने प्रेम और धैर्य की उस विशेषता के बारे में प्रार्थना की जिसकी हमें अपने दिलों में आवश्यकता है। इस प्रेम का स्रोत क्या है?

परमेश्वर के प्रेम और मसीह के धीरज की ओर प्रभु तुम्हारे मन की अगुवाई करे (2 थिस्सलुनीकियों 3:5)

विवरण करें कि ये शास्त्र धीरज, प्रेम, या दोनों के बारे में क्या कहते हैं।

"धीरज और शान्ति का दाता परमेश्वर तुम्हें यह वरदान दे कि मसीह यीशु के अनुसार आपस में एक मन रहो।" (रोमियों 15:5)

पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास (गलातियों 5:22)

ताकि तुम आलसी न हो जाओ, वरन् उनका अनुकरण करो जो विश्वास और धीरज के द्वारा प्रतिज्ञाओं के वारिस होते हैं। (इब्रानियों 6:12)

हे भाइयो, हम तुम्हें समझाते हैं कि जो ठीक चाल नहीं चलते उनको समझाओ, कायरों को ढाढ़स दो, निर्बलों को संभालो, सब की ओर सहनशीलता दिखाओ। (1 थिस्सलुनीकियों 5:14)

यदि आपको व्यवहार के इस चक्र को तोड़ने के लिए मदद की आवश्यकता है, तो अपेंडिक्स जी को पूरा करें: : चक्र को तोड़ना। जैसा कि हम अगले कुछ पाठों में 1 कुरिन्थियों 13 के अपने अध्ययन को जारी रखते हैं, तो जब भी आप कोई पैटर्न देखते हैं जिसे बदलने की आवश्यकता है, तो इस अपेंडिक्स पर वापस जाएँ।

पाठ - 3
दयालु बनें

किसी के प्रति दयालु होना मापने योग्य है। यह कोई ऐसी भावना नहीं है जिसमें किसी चीज की कमी हो, बल्कि कुछ ऐसा है जो देखने, सुनने या महसूस करने के लिए ठोस है।

तथ्य - फ़ाइल

दयालु - चेस्टोस (ग्रीक)। अच्छा करो; कठोर, कठोर, तीक्ष्ण, कड़वा या क्रूर के विपरीत कोमल, दयालु, सहानुभूतिपूर्ण, अनुग्रहकारी और अच्छे स्वभाव का होना दर्शाता है। नैतिक _____।

2. प्रेम निर्दयी नहीं है।

इस शब्द का एक अच्छा उदाहरण यह है कि जब मसीह ने यह कहते हुए इसे स्वयं के लिए प्रयोग किया, " मेरा जूआ सहज [क्रेस्टोस] और मेरा बोझ हलका है" (मत्ती 11:30)। सच्चा प्रेम हमें अपने जीवनसाथी के प्रति दयापूर्ण अच्छाई में कार्य करने के लिए प्रेरित करता है ताकि वे हममें मसीह को देख सकें, जो परमेश्वर के एक प्रेमपूर्ण और दयालु सेवक का उदाहरण है।

" प्रेम है ... कृपालु । (1 कुरिन्थियों 13:4)। दया के विपरीत दयाहीन होना है। प्रेम निर्दयी नहीं है। निर्दयी होने में एक दूसरे को उकसाना, गुस्सा करना, चिल्लाना, न्याय करना, अनदेखा करना या अस्वीकार करना शामिल हो सकता है। किसी व्यक्ति को यह बताने के कई तरीके हैं कि हम उनके मतभेदों या विफलताओं को स्वीकार नहीं कर सकते हैं। लेकिन हमारे जीवनसाथी को भी हमारे मतभेदों और असफलताओं को सहना चाहिए। । इतने सारे लोग क्यों मानते हैं कि अगर वे नाराज नहीं हैं, या स्नेह को रोक रहे हैं, अनदेखा कर रहे हैं, या हानिकारक शब्दों और मतलबी बयानों का उपयोग करके अपनी नाराजगी व्यक्त कर रहे हैं, तो उनकी पत्नी या पति किसी चीज़ के महत्व को नहीं समझेंगे? यह हमारा पाप है। परमेश्वर इसे निर्दयी होना कहते हैं।

हमें ज़िम्मेदारी लेनी शुरू करनी चाहिए और पाप की पहचान करनी चाहिए कि यह क्या है। रोमियों 12:10 कहता है, " भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। " किसी को प्राथमिकता देने का मतलब है उसे अपने से ऊपर समझना। अपने जीवनसाथी को अपने से ऊपर मानना या उनकी भावनाओं को अपने से ऊपर समझना है और किसी भी कारण से उनके साथ कठोर व्यवहार नहीं करना है।

सबसे विनाशकारी चीजों में से एक पति और पत्नी एक दूसरे के प्रति कठोर और निर्दयी होने की आदत डालते हैं, जिसे शब्दों, कार्यों और चेहरे के भावों द्वारा संवाद किया जा सकता है। ऐसा पति-पत्नी दोनों करते हैं। परमेश्वर चाहता है कि हम स्वयं से पूछें, मुझे अपनी भावनाओं, अपनी राय, या अपने विचारों को कैसे बाँटना है ताकि यह मेरे जीवनसाथी के साथ संचार के पुल को चोट न पहुँचाए? मैं उन्हें समझने में कैसे मदद कर सकता हूं कि मैं क्या कहने की कोशिश कर रहा हूं? परमेश्वर चाहता है कि हम जिस तरह से दूसरों के साथ बातचीत करते हैं, उसका मार्गदर्शन करने के लिए हम ज्ञान और आत्म-संयम का उपयोग करें। पवित्र आत्मा ने हमें वह सारी शक्ति दी है जिसकी हमें इसे पूरा करने के लिए आवश्यकता है।

पुरुषों के लिए

जीवन कई स्थितियों की पेशकश करता है जहां हमें सहयोग करने की आवश्यकता होती है, विचारों और रायों को बांटने के कई अवसर। भले ही हमारे विचार रचनात्मक हों, उन्हें संचार करने के अच्छे और बुरे तरीके हैं। अधिकांश पुरुषों को संचार पर कुछ काम की आवश्यकता होती है क्योंकि हम अपनी पत्नियों से बात नहीं कर सकते जैसे हम काम पर सहकर्मियों से बात करते हैं। आप अपने दोस्त के पास जा सकते हैं और कह सकते हैं, "यार, तुम मोटे हो रहे हो।" और वह इसके साथ ठीक है। लेकिन आप अपनी पत्नी को यह नहीं बताते जब तक आप उसे गहराई से चोट नहीं पहुंचाना चाहते ।

हो सकता है कि आप सहकर्मियों के प्रति अधिक विनम्र हों क्योंकि आपके काम के स्थान पर बुरा व्यवहार अनुकूल नहीं है। आप नौकरी पर किसी व्यक्ति को यह बताना चाहेंगे कि वह गलती करने के लिए बेवकूफ है, लेकिन आप ऐसा नहीं करते हैं, और फिर आप उस निराशा को अपनी पत्नी और बच्चों के बीच घर ले जाते हैं। उस क्षण से, आप चिढ़ जाते हैं, और अनुमान लगाइए कि गलती करने पर किसे बेवकूफ कहा जाता है या किसके साथ कठोर व्यवहार किया जाता है? अधिक संभावना है, आप इसे अपनी पत्नी या बच्चों में से एक पर निकालेंगे । वह पाप है।

पुरुष, याद रखें कि महिलाएं भावुक होती हैं, और उनसे कोमल तरीके से बात करना बहुत महत्वपूर्ण है। परमेश्वर ने आपकी पत्नी को आपके साथ एक होने के लिए "पूरा करने वाला" बनाया है। जानें कि वह कैसे अलग है, और सीखें कि दया और सम्मान के साथ विचारों और रायों का आदान-प्रदान कैसे करें।

महिलाओं के लिए

महिलाओं, यह सीखने की कोशिश करें कि कैसे विशेष होना है। आप भावनात्मक बर्तन हैं, और कभी-कभी उस बात तक पहुंचने में चौबीस मिनट लगते हैं जिसे आप बनाने की कोशिश कर रहे हैं। उनके सतर्क दिमाग में, पुरुष इससे अच्छा नहीं करते। अपने पति को फैसला दीजिए और उसे बताइए कि आप क्या चाहते हैं । उदाहरण के लिए, एक पत्नी कह सकती है, "मैं घर को साफ रखने के लिए बहुत कुछ करती हूँ, और मुझे कभी अवकाश नहीं मिलता। जब मुझे बच्चों को लेने की आवश्यकता होती है, तो रात का खाना छह बजे तक तय करना बहुत कठिन होता है, और आप उन्हें अनुशासित करने में मेरी मदद नहीं करते हैं। क्या आप आज बच्चों को लेने जा सकते हैं?" अधिक समझाने के बजाय जो आपके अनुरोध से संबंधित नहीं है, बस उससे बच्चों को लेने के लिए कहें। याद रखें कि पुरुष और महिलाएं अलग-अलग सोचते हैं। आप जो कह रहे हैं और जो आप पूछ रहे हैं, उसके बारे में असामान्य होना सीखें।

अनुमान लगाने का खेल मत खेलो, "यदि आप मुझसे प्यार करते हैं, तो आप इसका पता लगा सकते हैं।" उस पति को याद करें जो पहले बेसब्र था और पत्नी जो बच्चों के साथ मदद चाहती थी। उस स्थिति में यह पूछकर अस्पष्ट मत बनो, "आप बच्चों के साथ मदद क्यों नहीं करते? एक सीधा प्रश्न पूछें: "क्या आप उन्हें तैयार कर सकते हैं?" वह यह विशेष कार्य कर सकते हैं। उसे सही तरीके से कैसे करना है, यह सिखाने के लिए आपको पहले उसकी सहायता करने की आवश्यकता हो सकती है, लेकिन फिर वह आगे बढ़ने में और अधिक मदद कर सकता है।

जैसा कि हम विवाह की जरूरी चुनौतियों का सामना करते हैं, हमें उनसे सही तरीके से निपटने और ऐसा नहीं होने पर जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता है। यह महत्वपूर्ण है कि सामान्य शब्दों में न बोलें, लेकिन विशिष्ट रहें, जब हम अपने जीवनसाथी को यह समझने में मदद करने की कोशिश कर रहे हों कि आप क्या चाहते हैं और किस चीज़ की आवश्यकता हैं। महिलाओं, जब आप कहती हैं, "मुझे बस आपको और अधिक प्रेम करने की आवश्यकता है" या "मुझे आपसे अधिक संवाद करने की आवश्यकता है," यह आपकी आवश्यकता की व्याख्या नहीं करता है। लेकिन आप कह सकती हैं, "हनी, मैं अपने दिन के बारे में बात करने के लिए हर दिन, तीस मिनट के लिए समय निकालना चाहूंगी।"

सही रवैया

सही रवैया रखने, अपने जीवनसाथी को समझने और उनसे प्यार से बात करने में मदद करने के लिए ईश्वर से मदद मांगें। ऐसे विषय हो सकते हैं जिनके बारे में आप क्रोधित और रक्षात्मक हुए बिना बात नहीं कर सकते, लेकिन आप एक पत्र के माध्यम से संवाद कर सकते हैं। अपने जीवनसाथी को एक पत्र लिखने से आपको इसके बारे में सोचने का अकेला समय मिलता है। यह आपको इस बात पर विचार करने का समय देता है कि अपने जीवनसाथी का सम्मान कैसे करें, उनके दृष्टिकोण का सम्मान करें और ज्ञान और धैर्य के साथ संवाद करें। यह उन चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में से कुछ के माध्यम से काम करने में आपकी मदद कर सकता है।

विवाह में संबंधों में सुधार करते समय, संचारक-विध्वंसक कहे जाने वाले सामान्य वाक्यांशों से बचना चाहिए। देखें कि क्या इनमें से कोई भी आप पर लागू होता है: "आप हमेशा," "आप कभी नहीं," "आप कभी नहीं बदलेंगे," "वहाँ आप फिर से जाते हैं," "आप एक _____ हैं," या "आप बिल्कुल अपनी माँ / पिता की तरह हैं ।" अन्य विनाशकों में झूठ बोलना, आरोप लगाना, दोषारोपण करना और पिछले मुद्दों को सामने लाना शामिल है। ये सभी पापमय, निर्दयी बातें हैं जिन्हें परमेश्वर प्रेमरहित कहता है। जब आप पाप करते हैं तो आप अपने जीवनसाथी को दोष नहीं दे सकते।

पौलुस ने इफिसियों में कुछ आलोचनावादी निर्देश दिए। ध्यान दें कि क्या दूर रखा जाना चाहिए।

आप लोग सब प्रकार की कटुता, उत्तेजना, क्रोध, लड़ाई-झगड़ा, परनिन्दा और हर तरह की बुराई अपने बीच में से दूर करें। एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। (इफिसियों 4:31-32)

उन्होंने "दयालु बनने" की आज्ञा भी शामिल की, क्रेस्टोस (ग्रीक), जो एक ऐसा व्यवहार है जिसका हमें पालन करना है और करना जारी रखना है।

कार्य योजना 1

उन चीजों की पहचान करें जिनकी आपको "दूर रखने " की आवश्यकता है। परमेश्वर से क्षमा मांगें और उसके लिए यह दिखाने के लिए कि अपने जीवनसाथी के प्रति सक्रिय रूप से दयालु कैसे रहें । विश्वास के लिए उस पर भरोसा करने के लिए प्रार्थना करें और उस पर कायम रहें, भले ही आप कभी-कभी असफल हों। जब आप असफल हों तो हमेशा क्षमा माँगने के लिए उनकी अनुग्रह माँगें। यही एकमात्र तरीका है जिससे आप ईश्वरीय परिवर्तन—रूपांतरण का अनुभव करेंगे।

गहराई में अध्ययन करें

पहचानें कि आप अपने जीवनसाथी के प्रति अधिक दया कैसे दिखा सकते हैं।

“भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।” (रोमियों 12:10)

आप लोग परमेश्वर की पवित्र एवं परमप्रिय चुनी हुई प्रजा हैं। इसलिए आप लोगों को सहानुभूति, अनुकम्पा, विनम्रता, कोमलता और सहनशीलता धारण करनी चाहिए। (कुलुस्सियों 3:12)

मनुष्य कृपा करने के अनुसार चाहने योग्य होता है (नीतिवचन 19:22)

3. प्रेम ईर्ष्या नहीं करता है ।

जीवनसाथी के प्रति द्वेष या ईर्ष्या विभिन्न रूपों में हो सकती है, लेकिन सबसे आम उदाहरण बच्चों में पक्षपात है। पति-पत्नी का कोई मनपसंद बेटा या बेटी हो सकती है और परेशानी आने पर बच्चे को मुआवजे के तौर पर इस्तेमाल किया जाता है। यह एक बच्चे को एक माता-पिता को दूसरे के खिलाफ खड़ा करने की भी अनुमति देता है, और इसमें शामिल सभी लोगों के लिए खेल बहुत विनाशकारी हो जाता है। तथ्य यह है कि संयुक्त राज्य अमेरिका में हमारी आबादी का 39 प्रतिशत मिश्रित परिवार हैं, यह एक विशिष्ट चुनौतीपूर्ण समस्या है। आपके बच्चों को यह जानने की जरूरत है कि, यीशु मसीह के बाद, आपका जीवनसाथी हमेशा दूसरे नंबर पर रहेगा, और आप अपने बच्चों को ईर्ष्या भड़काने के लिए दिमागी खेल खेलने नहीं देंगे। विवाह के लिए परमेश्वर की रूपरेखा यह है कि जीवनसाथी उसके ठीक बाद आता है, बिना किसी अपवाद के।

तथ्य - फ़ाइल

ईर्ष्या-किसी अन्य की उत्कृष्टता या सौभाग्य की दृष्टि से असंतोष या बेचैनी, कुछ हद तक घृणा और समान फायदे रखने की इच्छा के साथ; दुर्भावनापूर्ण गुस्सा

आत्म-परीक्षा 1

क्या कोई विशेष बच्चा है जिसके प्रति आपने पक्षपात किया है? यदि ऐसा है तो समझाएं।

क्या आपको कभी जलन महसूस हुई है जब आपका जीवनसाथी दोस्तों के साथ समय बिताता है? करीबी दोस्त होना अच्छी बात है लेकिन अपने रिश्ते की कीमत पर नहीं। मित्रों के साथ समय और तालमेल होना चाहिए। घर की समस्याओं पर काम करने के लिए मुआवजे या ध्यान भंग के रूप में इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिए। पति - पत्नी को एक - दूसरे को अच्छी दोस्ती में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित करने की ज़रूरत है ।

यदि आपका जीवनसाथी किसी मित्र का विरोध करता है क्योंकि आप उस व्यक्ति के साथ होने पर अलग तरह से व्यवहार करते हैं, तो उनके पास एक अच्छी बात हो सकती है और शायद वे आपको ईश्वरीय ज्ञान दे रहे हैं। । यदि आपके ऐसे घनिष्ठ मित्र हैं जो मसीही नहीं हैं, या जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार नहीं जी रहे हैं, तो वे आपको प्रभावित कर सकते हैं। पहला कुरिन्थियों 15:33 कहता है, "धोखा न खाओ: 'बुरी संगति अच्छी आदतों को बिगाड़ देती है।'" इसका मतलब यह नहीं है कि हमारे पास केवल मसीही मित्र ही होने चाहिए। हमें इस अंधेरी दुनिया में एक ज्योति बनना है, और यीशु ने हमें अविश्वासियों तक पहुँचने और उन्हें यीशु मसीह के बारे में बताने के लिए एक महान उदाहरण दिया। हालांकि, अगर वे हमें प्रभावित कर रहे हैं, बजाय इसके कि हम उन्हें प्रभावित करें, तो वह रिश्ता अस्वस्थ है।

मनोरंजन, शौक, या सेवकाई भी जलन को भड़का सकती है। कई पुरुष गोल्फ खेलते हैं, जिसमें कई घंटे लगते हैं। पुरुष, यदि आप महीने में दस घंटे गोल्फ खेल रहे हैं और अपनी पत्नी के लिए समय नहीं निकाल रहे हैं, तो यह कुछ ईर्ष्या को भड़का सकता है। आपको उन चीजों में संतुलन बनाने की जरूरत है। संतुलन कुंजी है, तब भी जब सेवकाई की बात आती है। देवियों, क्या आप घर से बाहर की गतिविधियों में इतना समय लगा रही हैं कि आपकी जिम्मेदारियां भुगत रही हैं? घर पहली प्राथमिकता है, और पति और पत्नी को व्यक्तिगत हितों से ऊपर एक दूसरे के लिए अपने प्यार और समय की रक्षा करने की जरूरत है।

जब एक पति या पत्नी अपने जीवनसाथी के लिए पर्याप्त होने के असंगत संदेह से जूझते हैं और आत्मविश्वासी विचारों से ग्रस्त हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप ईर्ष्या होती है, तो उसे सुधारा जाना चाहिए । क्या आप ईर्ष्या से उत्तेजित हो जाते हैं जब आपको संदेह होता है कि आपके जीवनसाथी ने विपरीत लिंग के व्यक्ति को देखा है? क्या एक निर्दोष नज़र का

कोई मतलब है? यदि हां, तो यह एक समस्या है, एक पाप है, प्रार्थना का विषय है और संभवतः परामश। क। ।वषय ह । अपने जीवनसाथी के प्रति बेवजह ईर्ष्या न करें।

पतियों, यदि आप हर समय घूर रहे हैं और देख रहे हैं, तो बेहतर होगा कि आप इससे निपटें। प्रार्थना करें और परमेश्वर से आपको क्षमा करने और बदलने के लिए कहें। क्योंकि आपको किसी भी समय महिलाओं की जांच नहीं करनी चाहिए। यह मत करो। एक आदमी कह सकता है, "ठीक है, परमेश्वर ने उसे वहाँ रखा," और देखने के लिए बेवकूफ बहाने बनाते हैं। इसके बजाय, हर बार जब आप परीक्षा में पड़ें तो यह प्रार्थना करें:

"मैं ने अपनी आँखों के साथ वाचा बाँधी है, फिर मैं किसी कुँवारी पर कैसे आँखें लगाऊँ? (अय्यूब 31:1)

ईर्ष्या का एक और रूप जो स्वार्थी और बचकाना है, तब उत्पन्न हो सकता है जब आपके जीवनसाथी को आशीर्वाद मिलता है और आपको नहीं। उदाहरण के लिए, आपकी पत्नी को उसके माता-पिता से कुछ दिनों के लिए कहीं जाने का उपहार मिलता है, और आप नहीं जा सकते। तुम सोचते हो, ठीक है, बस, मैं बाहर जाकर कुछ खरीदने जा रहा हूँ। पुरुषों को कभी-कभी काम के लिए या मिशन पर यात्रा करने का अवसर मिलता है, जब एक पत्नी को बच्चों के साथ घर पर रहने की आवश्यकता होती है। अपने जीवनसाथी के लिए ख़ुश रहें जब उन पर आशीर्वाद आए।

हम सभी जानते हैं कि ईर्ष्या कैसा महसूस करती है, और जब आप महसूस करते हैं तो किसी कारण के लिए खुद की जांच करना सुनिश्चित करें। हे परमेश्वर, मेरी मनोवृत्ति के पीछे का उद्देश्य क्या है? क्या यह स्वार्थ है, या रिश्ते में संतुलन की वास्तविक कमी है? आप एक स्वस्थ विवाह नहीं कर सकते जहाँ ईर्ष्या का अभ्यास किया जा रहा हो। यदि आप प्राप्तकर्ता हैं, तो विचार करें कि क्या आपका व्यवहार या बर्ताव आपके जीवनसाथी को उत्तेजित कर रहा है।

एक आदमी कई सालों से तलाकशुदा था और आखिरकार उसने एक प्यारी महिला से शादी कर ली। उन्होंने छह साल के लिए एक सेक्रेटरी को नियुक्त किया था जो अविवाहित और प्यारी थी, और उनकी नियमित सप्ताह में कम से कम चार रातें सात बजे तक काम करना था। उनकी नई पत्नी ने इससे नाराजगी व्यक्त की, भले ही वह अपनी डेटिंग अवधि के दौरान इसके बारे में जानती थी । पति उसकी ईर्ष्या से भ्रमित था, इस तथ्य पर खड़ा था कि उसने छह साल तक उसके सेक्रेटरी के रूप में काम किया। परामर्श में पति को बताया गया, "अब तुम्हारी शादी हो चुकी है; आपको इस फैसले में अपनी पत्नी के साथ विचार करने की जरूरत है।

यह आदमी न केवल ओवरटाइम काम कर रहा था, बल्कि उसके पास मनोरंजक गतिविधियाँ थीं जो उस समय से भी अधिक थीं जो वह अपनी पत्नी के साथ बिता रहा था। संतुलन की कमी थी जो इस ईर्ष्या को भड़काती थी, इसलिए उन्हें कुछ बदलाव करने पड़े। किसी भी व्यक्ति को हर समय अपने तरीके से हुक्म चलाने या मांग करने का अधिकार नहीं है। शादी - शुदा ज़िंदगी में फेरबदल करने का मतलब है, प्यार की भावना के साथ मिलकर काम करना । इसके लिए परमेश्वर के वचन को देखने और प्रार्थना में समय व्यतीत करने की आवश्यकता होगी।

गहराई में अध्ययन करें

ईर्ष्या करने के बजाय, हमें परमेश्वर की बुद्धि के अनुसार कार्य करने की आवश्यकता है:

पर जो ज्ञान ऊपर से आता है वह पहले तो पवित्र होता है फिर मिलनसार, कोमल और मृदु भाव और दया और अच्छे फलों से लदा हुआ और पक्षपात और कपट रहित होता है। मिलाप कराने वाले धार्मिकता का फल मेलमिलाप के साथ बोते हैं। (याकूब 3:17-18)

इस शास्त्र से बुद्धि की उन विशेषताओं की सूची दीजिए जो आपके जीवन - साथी के प्रति आपके कार्यों में सुधार कर सकते हैं । आप उन्हें समस्या वाले क्षेत्रों में कैसे लागू कर सकते हैं? विशिष्ट रहें।

विवरण करें कि ईर्ष्या से कौन से कार्य होते हैं।

इस से यहूदी ईर्ष्या से जलने लगे और उन्होंने बाजार के कुछ गुण्डों की सहायता से भीड़ एकत्र की और नगर में दंगा खड़ा कर दिया। वे पौलुस और सीलास को नगर-सभा के सामने पेश करने के उद्देश्य से यासोन के घर आ धमके। (प्रेरितों 17:5)

पिलातुस ने उनको उत्तर दिया, "क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यहूदियों के राजा को छोड़ दूँ?" क्योंकि वह जानता था कि प्रधान याजकों ने उसे डाह से पकड़वाया था। परन्तु प्रधान याजकों ने लोगों को उभारा कि वह बरअब्बा ही को उनके लिये छोड़ दे। (मरकुस 15:9–11)

कार्य योजना 2

पहचानें कि आप अपने जीवनसाथी में कहाँ ईर्ष्या कर रहे हैं या ईर्ष्या भड़का रहे हैं। इसे एक जोड़े के रूप में चर्चा करें, क्षमा मांगें और बदलाव की योजना बनाएं।

4. प्रेम खुद को प्रदर्शित या अपनी बड़ाई नहीं मारता।

शेखी मारना पति और पत्नी दोनों पर लागू होता है। यह नीचा दिखाने के रूप में सामने आता है और दूसरे व्यक्ति को रिश्ते में कम महत्वपूर्ण या नाकाबिल महसूस कराता है।

उदाहरण के लिए, एक परेशान जोड़ा परामर्श के लिए आया था, और पति की शिकायत यह थी कि उनके शारीरिक संबंध लंबे समय से वहां नहीं थे जहां उन्हें होना चाहिए था। वह अपनी पत्नी को महत्व और प्राथमिकता के पैमाने पर कम महसूस करता था। यह आदमी इतना निराश और कड़वा था कि उसने काउंसलर के सामने मौखिक रूप से उसकी पिटाई कर दी।

तथ्य - फ़ाइल

शेखी मारना—अपने बारे में, या स्वयं से संबंधित बातों के बारे में घमंड भरे तरीके से बात करना; घमंड करने के लिए।

"उसे बस इतना करना है कि वह तीन बच्चों को स्कूल ले जाए, बड़ी बात क्या है!" वह घर और बच्चों की देखभाल के मूल्य और महत्व को कम करता चला गया। "मैं कड़ी मेहनत करता हूं, मैं पैसे घर लाता हूं, और उसे बस इतना करना है कि वह बच्चों को स्कूल ले जाए। कौन सी बड़ी बात है? और मैं रात को घर आता हूँ, और मैं उससे केवल यही सुनता हूँ, मैं थक गई हूँ!"

सलाहकार ने उसकी पत्नी से पूछा कि उसे कैसा लगा। वह आश्चर्यचकित होकर वहीं बैठ गया, जबकि उसकी पत्नी अपना सिर झुका कर रो रही थी। सलाहकार ने कहा, "यार, क्या तुमने खुद सुना? आपकी पत्नी के लिए प्यार करने, दुलारने और अपने बच्चों के लिए वहां रहने के लिए घर पर रहना कितना महत्वपूर्ण है? यह आपके लिए कितना महत्वपूर्ण है, और यह परमेश्वर के लिए कितना महत्वपूर्ण है? बहुत ज़रूरी! आपके मुंह से अभी-अभी जो निकला वह बहुत घमंडी और आहत करने वाला था। हां, आपके जीवन के क्षेत्रों को बदलने की जरूरत है, और आपकी पत्नी के जीवन के क्षेत्रों को आपके प्रति बदलने की जरूरत है, लेकिन आपने अभी जो किया, इस अहंकारी रवैये ने आपकी पत्नी को बहुत गहरी चोट पहुंचाई है।

और पत्नियां भी ऐसा कर सकती हैं। सबसे आम तरीकों में से एक है बच्चों की परवरिश करना । पिताजी एक अनुशासन देते हैं, और जैसे ही वह जाते हैं माँ कहती है, " उनकी बात न सुनें, आप जानते हैं कि पिताजी कल भूल जाएंगे। पिता को बच्चों के प्रति नीचा दिखाना, या उसके अधिकार को कम करना पापपूर्ण और एक प्रकार का अप्रत्यक्ष अहंकार है । प्रभाव यह है कि पिताजी एक मूर्ख हैं और नहीं जानते कि वह किस बारे में बात कर रहे हैं। यह एक ऐसी पत्नी है जो खुद को बुद्धिमान और न्यायप्रिय माता-पिता के रूप में देखते हुए खुद को अपने पति से ऊपर स्थापित कर रही है।

“तू अपनी प्रशंसा अपने मुंह से न करना; दूसरे लोग तेरी प्रशंसा करें तो करें। दूसरे मनुष्य के मुख से तेरी प्रशंसा हो, यह शोभा देता है; अपने आप मियां-मिट्ठू मत बनना।” (नीतिवचन 27:2)

आत्म-परीक्षा 2

यदि शेखी मारना एक ऐसी तकनीक है जिसका उपयोग आप अपने जीवनसाथी के साथ करते हैं, तो इसे परमेश्वर के सामने स्वीकार करें और परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध हों।

गहराई में अध्ययन करें

पहचानें कि ये शास्त्र स्वयं को ऊंचा उठाने के बारे में क्या कहते हैं। यदि आप अपने जीवनसाथी के साथ ऐसा कर रहे हैं, तो आप इन सिद्धांतों को लागू करके इसे कैसे ठीक कर सकते हैं? विशिष्ट रहें।

“क्योंकि मैं उस अनुग्रह के कारण जो मुझ को मिला है, तुम में से हर एक से कहता हूँ कि जैसा समझना चाहिए उससे बढ़कर कोई भी अपने आप को न समझे; पर जैसा परमेश्वर ने हर एक को विश्वास परिमाण के अनुसार बाँट दिया है, वैसा ही सुबुद्धि के साथ अपने को समझे।” (रोमियों 12:3)

क्योंकि यदि कोई कुछ न होने पर भी अपने आप को कुछ समझता है, तो अपने आप को धोखा देता है। (गलातियों 6:3)

विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। (फिलिप्पियों 2:3)

5. प्रेम खुद पर गर्व करना या अभिमानी नहीं है ।

तथ्य - फ़ाइल

अभिमानी या घमंडी - अहंकारी होना; आत्म-महत्व महसूस करना या दिखाना, दूसरों के लिए उपेक्षा।

हमें तानाशाह नहीं बनना है, और न ही क्रूरता से या अहंकारी रूप से एक-दूसरे पर शासन करना है। परमेश्वर चाहता है कि आप अपने जीवनसाथी से प्रेम करें और उन्हें प्रोत्साहित करें, न कि उन्हें नियंत्रित करने की कोशिश करें। आपके रवैये को यह प्रतिबिंबित करना चाहिए कि आप हर स्थिति में एक-दूसरे के सर्वोत्तम हित में काम कर रहे हैं, एक-दूसरे को ईश्वरीय विवाह विकसित करने में मदद कर रहे हैं। आपके जीवनसाथी को ऐसा महसूस होना चाहिए कि वे आपके साथ एक हैं, परमेश्वर की दृष्टि में बराबर हैं। भले ही पति नेता है, लेकिन उसे अपनी पत्नी पर शासन नहीं करना चाहिए जैसे कि वह सेना में हो । लेकिन पत्नियां भी घमंड या अहंकार का उपयोग करके घर पर शासन करने की भूमिका निभा सकती हैं।

हमें हमेशा ईश्वरीय विवाह के प्राथमिक सिद्धांत को याद रखना चाहिए: हम मसीही सेवक हैं। हमें विवाह में अपनी स्थिति को प्रभु की ओर से एक दिव्य बुलाहट के रूप में देखना चाहिए और उसकी महिमा के लिए सब कुछ करना चाहिए, न कि हमारी। यीशु अपने चेलो के साथ था जब उनमें से दो ने पूछा कि क्या वे परमेश्वर के राज्य में एक उसके दाहिने हाथ पर और दूसरा उसकी बाईं ओर बैठ सकते हैं।

यीशु ने उन्हें मत्ती 20:25-28 में उत्तर दिया:

यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, “तुम जानते हो कि अन्यजातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं,वे उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा नहीं होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने; और जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने; जैसे कि मनुष्य का पुत्र; वह इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे।”

सेवक, सेवा और सेवा करना यूनानी शब्द डायकोनोस से लिए गए हैं, जिसका अनुवाद नए नियम के कुछ पदों में "सेवक" के रूप में किया गया है। एक गुलाम वह होता है जिसके पास अपना कोई अधिकार नहीं होता है लेकिन वह दूसरे की इच्छा के प्रति समर्पित रहता है। यीशु अधिकार की निंदा नहीं कर रहे थे बल्कि इसके उचित उपयोग पर जोर दे रहे थे। यीशु के पास दुनिया का सारा अधिकार था, लेकिन उसका रवैया पिता की इच्छा की सेवा करने और उसे पूरा करने की थी। पतियों और पत्नियों में से प्रत्येक का अपना परमेश्वर द्वारा दिया गया अधिकार है, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति उस विशेषाधिकार का उपयोग कैसे करता है, यह परमेश्वर के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि उसके सेवक उसकी इच्छा को पूरा करते हैं।

आत्म-परीक्षा 3

क्या आप ऐसे समय में तानाशाह होते हैं जब आप अपने जीवनसाथी से बात करते हैं या अपने कार्यों से? __हाँ __नहीं

विवरण करें कि यहोवा ने आप पर क्या प्रकट किया है।

गहराई में अध्ययन करें

पहचानें कि बाइबल घमंड और अहंकार के बारे में क्या कहती है, और यह आपके विवाह को कैसे प्रभावित कर सकता है।

"यहोवा का भय मानना बुराई से बैर रखना है। घमण्ड, अहंकार और बुरी चाल से, और उलट फेर की बात से भी मैं बैर रखती हूँ।" (नीतिवचन 8:13)

जब मनुष्य अभिमान करता है, तब अभिमान के साथ अपमान आता है, परन्तु बुद्धिमान व्यक्ति में नम्रता होती है। (नीतिवचन 11:2)

झगड़े रगड़े केवल अहंकार ही से होते हैं, परन्तु जो लोग सम्मति मानते हैं, उनके पास बुद्धि रहती है। (नीतिवचन 13:10)

वह तो और भी अनुग्रह देता है; इस कारण यह लिखा है, "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, पर दीनों पर अनुग्रह करता है। (याकूब 4:6)

पाठ - 4
परमेश्वर की महिमा करो, हमारी देह की नहीं

कभी-कभी हम प्रेम और अच्छे इच्छाशक्ति की सीमा पार करते हैं। हम जानते हैं कि हमारे जीवनसाथी को किस बात से ठेस पहुँचती है और इसे अन्य लोगों के सामने भी कहते हैं। जो कुछ भी है, परमेश्वर कहता है कि यह पाप है, और हमें रुकने की आवश्यकता है।

6. प्रेम अशिष्ट व्यवहार नहीं करता, यह असभ्य नहीं है।

इसमें आपके बच्चों सहित दूसरों के सामने जानबूझकर अपने जीवनसाथी को शर्मिंदा करना या नीचा दिखाना, या एक-दूसरे के प्रति असभ्य मजाक और व्यंग्य का उपयोग करना शामिल हो सकता है। कई परिवार मजाक करना पसंद करते हैं और इसे अपने घरों में खूब करते हैं। लेकिन एक जगह है जहां आप हद पार कर सकते हैं। जब ऐसा होता है, तो घायल साथी की एक विनम्र टिप्पणी माफी माँगने और व्यवहार को रोकने के लिए पर्याप्त होनी चाहिए।

तथ्य - फ़ाइल

असभ्य-किसी न किसी की विशेषता; कठोर, गंभीर, बदसूरत, अभद्र, या तरीके या कार्रवाई में आक्रामक। एडिफिकेशन-ओइकोडोम (ग्रीक)। किसी और के आध्यात्मिक लाभ या उन्नति के लिए निर्माण

हँसी - मज़ाक करना अक्सर परामर्श में आता है- ऐसी चीजें जो पति या पत्नी कई वर्षों तक करते हैं और मौज - मस्ती करते हुए बहाने बनाते हैं। परमेश्वर कहते हैं कि मजाक करना ठीक है, लेकिन असभ्य मत बनो। एक परामर्श सत्र के दौरान, एक पत्नी ने अपने पति से कहा, "आप इतने बचकाने हो, इसलिए मैं आपको एक बच्चे की तरह मानती हूं। और उन्हें आश्चर्य होता है कि उनकी शादी क्यों संकट में है। हमें इसे पाप कहना चाहिए और परमेश्वर से हमारे दिलों को बदलने और बुरी आदत को बंद करने के लिए कहना चाहिए।

पतियों और पत्नियों, हमें एक-दूसरे के जीवन में आशीर्वाद बोलना सीखना चाहिए। अपनी पत्नी को बताइए कि आप उसकी कितनी सराहना करते हैं: " तुम एक महान मां हो ।" "जिस तरह से आप बच्चों को स्नेह दिखाते हैं, वह मुझे पसंद है।" " तुम सुंदर हो ।" "घर बहुत अच्छा लग रहा है।" और पत्नियाँ, अपने पति के लिए भी ऐसा ही करें: "तुम मेरे आदमी हो।" "तुम मेरे प्रेमी हो।" "बच्चे आपकी ओर देखते हैं।" "आप एक अच्छे प्रदाता हैं।" ऐसे शब्दों का उपयोग करें जो आशीर्वाद दें, सच बोलें और एक दूसरे को प्रोत्साहन दें।

सबसे बड़ा सबक जो आप सीख सकते हैं, वह यह है कि जब आप एक साथ प्रार्थना कर रहे हों तो अपने जीवनसाथी के लिए परमेश्वर को धन्यवाद दें । उनकी उपस्थिति में, उनके द्वारा किए गए अच्छे कार्यों के लिए परमेश्वर की स्तुति करें। आप ऐसा करना शुरू करते हैं, और आप आशीषित होंगे । इफिसियों 4:29 हमें एक मार्गदर्शन देता है: " आपके मुख से कोई अश्लील बात नहीं, बल्कि ऐसे शब्द निकलें, जो अवसर के अनुरूप हों, और दूसरों के निर्माण तथा कल्याण में सहायक हों। "

ऐसे समय होते हैं जब संयम बरतने और "कोई भ्रष्ट बात आपके मुंह से न निकले।" जब यह नहीं बनता है, तो यह आपके जीवनसाथी को नीचे लाता है। यह गपशप के रूप में योग्य है, जो असभ्य, कठोर, निर्दयी है, और निर्माण के विपरीत है। हमें ध्यान में रखना चाहिए, क्या मेरे अगले शब्द मेरे जीवनसाथी का निर्माण करने वाले हैं, मेरे जीवनसाथी को मसीह की ओर आकर्षित करने वाले हैं, और उनके कानों में परमेश्वर का अनुग्रह प्रदान करने वाले हैं? अब, वह प्रेम है।

हमारे विवाहों के भीतर, हम सभी गलतियाँ करेंगे और एक दूसरे के विरुद्ध पाप करेंगे। जब हम ऐसा करते हैं, तो हमें क्षमा मांगनी चाहिए और अपने जीवनसाथी से वह क्षमा प्राप्त करनी चाहिए। जब जिस पाप ने तुम्हें घायल किया है वह क्षमा कर दिया जाता है, तो इसे फिर से बताना, या इसे फिर से लाना, स्वीकार्य नहीं है। बाइबल कहती है, "प्रेम पाप को ढांप देता है" (नीतिवचन 10:12), और यह दुख की बात है कि बहुत से पति-पत्नी अपने जीवनसाथी की कमियों के बारे

में बुरा बोल रहे हैं या गपशप कर रहे हैं। प्रेम दूसरों की कमियों को छुपाना चाहता है, लेकिन उन्हें नज़रअंदाज़ नहीं करता।

गहराई में अध्ययन करें

इस विषय से निम्नलिखित लेखांश कैसे संबंधित है, इस पर ध्यान दें ।

जो मनुष्य दूसरे के अपराध क्षमा करता है, वह प्रेम का खोजी कहलाता है; पर दूसरों की बातें यहाँ-वहाँ फैलानेवाला मित्रों में फूट कराता है। (नीतिवचन 17: 9)

ढकने का अर्थ है "उस पर ढक्कन लगाना, उसे छिपा देना।" हम ऐसा क्यों करना चाहेंगे? क्योंकि हमारे जीवनसाथी से प्रेम करना उस व्यक्ति के लिए सबसे अच्छा चाहता है। एक विख्यात मसीही विद्वान को प्रस्तुत करने के लिए, "किसी ने कहा है कि, यदि किसी अनुपस्थित व्यक्ति की असभ्य बातें बताने के लिए प्रलोभित किया जाए, तो मानसिक रूप से तीन सवाल पूछना अच्छा है: क्या यह सच है? क्या यह दयालु है? क्या यह आवश्यक है?" आइए एक और प्रश्न जोड़ते हैं: क्या यह उस व्यक्ति को उन्नत करेगा जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं और जो सुन रहे हैं?

इस सावधानी का यह अर्थ कदापि नहीं है कि हम अपने या अपने बच्चों के प्रति अपने जीवनसाथी के पाप को अनदेखा करते हैं या नज़रअंदाज़ करते हैं । नीतिवचन 17:9 के एक विश्लेषण से पढ़ें, कैसे एक लेखक अपराध को छिपाने की व्याख्या करता है:

फिर भी, किसी अपराध को छिपाने का अर्थ यह नहीं है कि पाप को प्रकाश में लाया जाए और दूसरे में अधर्म को अनदेखा करने की अनुमति देना नहीं है। इसके विपरीत, गलती करने वाले के पास व्यक्तिगत रूप से कोमलता और भाईचारे की दया के साथ जाना है; अपने अंतरात्मा को अपने मार्ग में प्रयोग करने की कोशिश करने के लिए, जो उसके परमेश्वर पर अपमान ला रहा है। अगर ऐसा कोई अभियान सफल होता है, तो फिर से पाप का उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए। यह ढका हुआ है, और किसी को इसके बारे में जानने की आवश्यकता नहीं है।

हमारे लिए कितने बुद्धिमान शब्द हैं। क्षमा और सुलह तुरंत या जल्द से जल्द हो।

आत्म-परीक्षा 1

क्या कभी आप अपने जीवनसाथी के प्रति असभ्य या कठोर होते हैं? __हाँ __नही

यहोवा ने कौन सा व्यवहार प्रकट किया है जिसे बदलने की आवश्यकता है? अपना कबूलनामा लिखें। अगर आप अपने जीवनसाथी से माफी मांग रहे हैं तो ऐसा कीजिए ।

7. प्रेम अपना रास्ता नहीं चाहता।

जब तक हम शादी नहीं करते तब तक हमें एहसास नहीं होता कि हम कितने स्वार्थी हैं। किसी के साथ जीवन बाँटने के लिए मेल बिठाना आवश्यक है। परिस्थितियों में समझौता और परिवर्तन की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, पत्नियों को अक्सर अपने पति के साथ प्रतिदिन कम से कम पैंतालीस मिनट संवाद करने की आवश्यकता होती है। पति इस बात को नज़रअंदाज़ कर सकते हैं, लेकिन यह केवल इस बारे में नहीं होना चाहिए कि उसे क्या चाहिए, बल्कि उसकी पत्नी को क्या चाहिए। अपने साथी की ज़रूरत को पहचानना अच्छा है, लेकिन यह उत्पादक नहीं है अगर हम बदलाव को पूरा करने और उसे लागू करने में विफल रहते हैं। कुछ जोड़े अपने बच्चों के सो जाने के बाद बातचीत करने के लिए समय निकालते हैं। लेकिन उन्हें दिलचस्पी और अच्छे रवैये के साथ सुनना चाहिए।

तथ्य - फ़ाइल

अपने तरीके की तलाश करें–एक व्यक्ति जो इस बात की परवाह किए बिना कि उनके कार्यों या तरीकों से दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ता है, जो अपने स्वयं के हितों के लिए सबसे उपयुक्त है उसका अनुसरण करता है। इनपुट प्राप्त करने के इच्छुक नहीं हैं, जिसमें

वे सुबह एक साथ चलना शुरू कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए समझौता करने की आवश्यकता है । जिस पति को बात करने की आवश्यकता नहीं है, वह हर दिन जल्दी उठने जैसा महसूस नहीं कर सकता है, लेकिन वे सप्ताह में तीन दिन चलने और बात करने के लिए सहमत हो सकते हैं। वे हर सुबह चलने के लिए मेहनत कर सकते हैं क्योंकि वह उसकी ज़रूरत को पूरा करना सीखता है और उसे दिखाता है कि वह परमेश्वर के बाद सही मायने में आती है। यह दूसरे के प्रेम के लिए अपने तरीके, जरूरतों या इच्छाओं को अलग रखने का केवल एक उदाहरण है।

हर विवाह में दो अनोखे व्यक्तित्व होते हैं। लोगों की अलग-अलग जरूरतें, रुचियां और आदतें होती हैं। यह उम्मीद की जानी चाहिए, लेकिन लोग आश्चर्यजनक रूप से जिद्दी हो सकते हैं। दूसरों के हितों पर विचार करना महत्वपूर्ण है। अगर पति - पत्नी इस सिद्धांत पर चलते हैं, तो रिश्ते में मधुरता आएगी। उदाहरण के लिए, पत्नी एक साफ घर रखना पसंद कर सकती है, जबकि पति इसे प्राथमिकता नहीं देता। अगर वे पति की जरूरत पर काम करतीं तो उनका घर शायद अस्त-व्यस्त हो जाता। पति घर में साफ सुथरा रहना सीख सकता है, खासकर जब वह गंदगी करता है। उम्मीद करना कि उसकी पत्नी उसके बाद सफाई करेगी, बस उसे नौकरानी में बदल रही है।

कुछ पुरुषों को मोटरसाइकिल की सवारी करना, रेगिस्तान में डर्ट बाइक की सवारी करना और डेरा डालना अच्छा लगता है। शादी के पंद्रह साल बाद, उसकी पत्नी कह सकती है, "हनी, शिविर लगाना मेरे लिए कठिन है, और मुझे वास्तव में इसमें मज़ा नहीं आता। क्या तुम और लड़के मेरे बिना जा सकते हो? अगर उसने कहा होता कि उसे शिविर छोड़ देना चाहिए क्योंकि वह ऐसा कर रही है तो यह गलत होगा। प्राथमिकता याद रखें। सवारी उसके लिए बहुत चिकित्सीय हो सकती है। पत्नी इस काम में उसका हौसला बढ़ा सकती है ।

पतियों, घर के चारों ओर की परियोजनाओं के बारे में सोचो जिन्हें आपने अपनी पत्नी से कहा था कि आप उन्हें पूरा कर लेंगे—और वे अभी भी पूरे नहीं हुए हैं। उसने पूछा और आपने कहा, "ओह, हाँ।" लेकिन तीन महीने या तीन साल से काम कच्चे पक्के स्थिति में है। फिर भी उन सभी चीजों के बारे में सोचें जो आपने इस दौरान अपने लिए की हैं: यात्राएं, गोल्फ, टेनिस, जो भी हो। वह देख रही है। आपके पास उन चीजों को करने की प्रेरणा है जो आपको पसंद हैं, लेकिन जब वह आपसे समय मांगती है, तो आप शायद ही कभी इसके आसपास पहुंच पाते हैं। दोस्तों, जब आपकी पत्नी आपसे कोई प्रोजेक्ट करने के लिए कहती है, तो उससे पूछें कि वह कब इसे पूरा करना चाहती है और इसे उचित समय में पूरा कर लें। इससे उसे पता चलता है कि वह महत्वपूर्ण, प्रिय और प्राथमिकता है।

पतियों, हमने कहा है कि आपके परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेदारी घर में अगुवाई करना है। लेकिन टीम वर्क की भावना में, अपनी पत्नी को उसकी चिंताओं को व्यक्त करने देना और उसे पारिवारिक फैसलों में शामिल करना ज़रूरी है। पतियों और पत्नियों को योजना और समाधान के लिए एक साथ काम करने की आवश्यकता है लेकिन अंतिम निर्णय पति के साथ है।। शादी में अपना खुद का रास्ता न ढूँढने का एक हिस्सा एक दूसरे की राय लेने की मांग कर रहा है।

योजनाएं विचार-विमर्श से निश्चित की जाती हैं, युद्ध भी बुद्धिपूर्ण मार्ग-दर्शन में लड़ा जाता है। (नीतिवचन 20:18)

बिना उचित सलाह के योजनाएं निष्फल हो जाती हैं; किन्तु यदि योजना में अनेक बुद्धिमानों की सम्मति प्राप्त हो, तो वह सफल हो जाती है। (नीतिवचन 15:22)

हमें सावधान रहना चाहिए कि हम अपने स्वयं के स्वार्थी विचारों, भय, या प्राथमिकताओं का उपयोग अपने जीवनसाथी के व्यवहार या जीवन शैली को निर्धारित करने के लिए न करें। हम सब अलग हैं, और हम एक दूसरे को पूरा करते हैं, एक दूसरे के साथ मुकाबला नहीं करते।

गहराई में अध्ययन करें

विवरण करें कि आपके जीवनसाथी के प्रति आपका दृष्टिकोण और कार्य क्या होना चाहिए।

हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन् दूसरों के हित की भी चिन्ता करे। (फिलिप्पियों 2:4)

विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। (फिलिप्पियों 2:3)

वरन् प्रेम से एक दूसरे के दास बनो। (गलातियों 5:13)

सब कोई अपना नहीं, बल्कि दूसरों के हित का ध्यान रखें। (1 कुरिन्थियों 10:24)

आत्म-परीक्षा 2

क्या आप घर पर अपना रास्ता तलाश रहे हैं? __हाँ __नही

यदि आपका उत्तर हाँ है, तो परिवर्तन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता लिखें, परमेश्वर से अनुसरण करने की शक्ति माँगें। यदि आप अपने जीवनसाथी से क्षमा माँगने के क्रम में हैं, तो करें।

8. प्रेम बुरा नहीं सोचता।

परमेश्वर का वचन कहता है कि प्रेम ""कोई बुराई नहीं सोचता"" (1 कुरिन्थियों 13:5)। एन ए एसबी संस्करण का कहना है कि यह "गलत नुकसान को ध्यान में नहीं रखता है। उदाहरण के लिए, बुरे विचारों को पकड़ना, पिछली गलतियों को सामने लाना, अपने जीवनसाथी की असफलताओं की सूची रखना, और अवसर आने पर उनकी जानकारी के साथ आलोचना करना। विश् वासियों के रूप में, हमें यीशु मसीह की छवि के अनुरूप होना चाहिए, और हमें बताया जाता है कि उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में उसे प्राप्त करने के बाद हम में मसीह का मन है। (1 कुरिन्थियों 2:16)।

तथ्य - फ़ाइल

कोई बुराई नहीं सोचता है-लॉजिज़ोमाई (ग्रीक)। एक लेखांकन शब्द, किसी के दिमाग में चीजों को एक साथ रखने के लिए, गिनती करने या जोड़ने के लिए, गणना के साथ खुद पर कब्जा करने के लिए।

हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे प्रति कितने मूल्यवान हैं। उनका योग कितना बड़ा है! यदि मैं उनको गिनूं, तो मुझे ज्ञात होगा कि वे धूलकण से भी अधिक हैं; जब मैं जागता हूं, तब भी मैं तेरे साथ हूं। (भजन संहिता 139:17-18)

यदि परमेश्वर उन सभी पापों को जानता है जो हम कभी करेंगे और कहते हैं कि हमारे प्रति उसके विचार अच्छे हैं, तो अपने जीवनसाथी के प्रति बुरे विचार रखने के लिए आपका क्या बहाना है? जब आप अपने जीवनसाथी के प्रति क्रोध, असंतोष, या तीखापन रखते हैं, तो आपका रवैया खराब होगा और आप उस व्यक्ति के लिए कुछ भी नहीं करना चाहेंगे। यह आपके संचार को भी प्रभावित करेगा। यह पाप है। क्या आप मुंह फुलाने, अपने जीवनसाथी को नज़र अंदाज़ करने, प्यार को रोके रखने या कई दिनों तक नाराज़ रहने के दोषी हैं? क्षमा करना या न करना एक विकल्प है। परमेश्वर नहीं चाहता कि हम तब तक प्रतीक्षा करें जब तक हम ऐसा महसूस न करें। भाव अच्छे यात्री होते हैं, लेकिन वे गरीब चालक होते हैं। हमें परमेश्वर के वचन को हमें चलाने देना चाहिए, न कि हमारी भावनाओं को। यदि आप इस तरह असफल हो रहे हैं, तो परमेश्वर से अपने हृदय को बदलने और इस विनाशकारी बुरी आदत को बंद करने के लिए कहें।

गलत को तुरंत और स्पष्टीकरण के साथ निपटाया जाना चाहिए। पिछले मंगलवार को जो हुआ था, उसे उस वक्त ढका जाना चाहिए था, और फिर ईश्वरीय ज्ञान के साथ संभाला जाना चाहिए था और छुट्टी दे दी जानी चाहिए थी। क्रोध और नाराज़गी की भावना विकसित करना - जो समय के साथ बनी रहती है आपके संबंध के लिए विनाशकारी होगा । आपको अपनी भावनाओं को नहीं, सच्चाई को तय करने देना चाहिए कि आप अपने जीवनसाथी को कैसे जवाब देते हैं।

सबसे मेल मिलाप रखो, और उस पवित्रता के खोजी हो जिसके बिना कोई प्रभु को कदापि न देखेगा। ध्यान से देखते रहो, ऐसा न हो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित रह जाए, या कोई कड़वी जड़ फूटकर कष्ट दे, और उसके द्वारा बहुत से लोग अशुद्ध हो जाएँ। (इब्रानियों 12:14-15)

अशुद्ध होने का अर्थ है कि एक कड़वा व्यक्ति, जो एक कड़वा जीवनसाथी भी हो सकता है, अंत में दूसरों के जीवन में आक्रोश का जहर फैलाएगा, उन्हें दूषित और चोट पहुँचाएगा। ये प्रथाएं प्रेम के विपरीत हैं। कई पति और पत्नियां इस तथ्य पर कभी विचार नहीं करते कि वे प्रेम के विपरीत व्यवहार कर रहे हैं। हमें बुराई के बारे में नहीं सोचना चाहिए, बल्कि जो अच्छा है उस पर ध्यान देना चाहिए।

अनेक लोग क्षमा न करने के कारण अपने जीवनसाथी से निकलने वाले जहर का अनुभव कर रहे हैं। परमेश्वर का वचन कहता है कि जब आप कड़वाहट रखते हैं, तो यह विष के समान होता है जो आपके आस-पास के सभी लोगों को प्रभावित करता है। कई मसीही घरों में यह जहरीला गू होता है जिसके बारे में परमेश्वर बात कर रहे हैं। क्षमा न करना एक जहर है जो दूसरे व्यक्ति को चोट पहुँचाने की उम्मीद करता है । सचमुच, क्षमा न करना एक कैंसर के समान है। यदि हम इसकी अनुमति देते हैं, तो यह हमें अंदर से खा जाएगा और हमारे आसपास के सभी लोगों को नकारात्मक तरीके से दूषित कर देगा।

द लिविंग बाइबल प्रेम के बारे में यह कहती है:

यह चिड़चिड़ा या स्पर्शी नहीं है। यह दुर्भावना नहीं रखता है और शायद ही ध्यान देगा कि दूसरे गलत करते हैं। (1 कुरिन्थियों 13:5)

यही परमेश्वर के प्रेम का विवरण है। हमें कितना माफ करना चाहिए? परमेश्वर का वचन मत्ती 18:22 में कहता है, " सत्तर गुना सात बार तक," या 490 बार। यह एक सीमा नहीं है, बल्कि एक उदाहरण है जिसका अर्थ अंतहीन है। उम्मीद है कि आपने अपने जीवनसाथी को इस तरह माफ़ कर दिया होगा। इफिसियों 4:32 में, पौलुस ने लिखा, " एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। परमेश्वर का वचन सिखाता है कि प्रेम क्षमा का अभ्यास करता है। इसे देने और मांगने के लिए हमेशा तैयार रहें।

गहराई में अध्ययन करें

विवरण करें कि हमें दूसरों को कैसे और क्यों माफ करना चाहिए।

एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। (इफिसियों 4:32)

कार्य योजना

क्या आप क्षमा करने, भूलने और अपने जीवनसाथी के प्रति अच्छे विचार रखने के मसीह के उदाहरण का पालन कर रहे हैं? __ हाँ __नही

यदि नहीं, तो उन क्षेत्रों को लिखें जहाँ आप अपने जीवनसाथी को क्षमा करने में असफल हो रहे हैं। परमेश्वर से क्षमा मांगें और अपने जीवनसाथी से क्षमा मांगने का समय चुनें।

गहराई में अध्ययन करें

इस वचन को अपने शब्दों में समझाइए। आप इसे क्षमा की ओर कैसे लागू कर सकते हैं?

“इसलिये हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात् जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन पर ध्यान लगाया करो।” (फिलिप्पियों 4:8)

9. प्रेम अधर्म में आनन्दित नहीं होता

तथ्य - फ़ाइल

अधर्म (अधर्म) में आनन्दित न होना—जब आप किसी को पाप में पड़ते या गलती करते देखते हैं, तो आप इसके बारे में खुश नहीं होते हैं या उनके प्रति प्रतिशोधी नहीं होते हैं

1 कुरिन्थियों 13:6 में यह एक आज्ञा है। परमेश्वर कह रहे हैं, "इसके बारे में सोचो भी मत। इस पर जोर दिया जा रहा है ।

क्या आपको खुशी महसूस होती है जब बच्चे गुस्से में आपके जीवनसाथी को अपनी राय व्यक्त करते हैं? क्या आपको उम्मीद है कि आपका बेटा या आपकी बेटी कुछ गलत करेंगे ताकि आप अपने जीवनसाथी से कह सकें, "देखो, अगर तुमने इसे मेरे तरीके से किया होता, तो यह नहीं होता"? क्या आपने खुद को गुप्त रूप से प्रसन्न महसूस किया है जब कोई अन्य व्यक्ति असफल हो जाता है? यह पाप है। बाइबल हमें एक दूसरे को प्रोत्साहित करने और उन्नत करने के लिए कहती है।

इसलिये हम उन बातों में लगे रहें जिनसे मेलमिलाप और एक दूसरे का सुधार हो। (रोमियों 14:19)

इस कारण एक दूसरे को शान्ति दो और एक दूसरे की उन्नति का कारण बनो, जैसा कि तुम करते भी हो। (1 थिस्सलुनीकियों 5:11)

बाइबल हमें कड़ी चेतावनी देती है कि हम पाप से कैसे निपट सकते हैं । नीतिवचन 14:9 कहता है, "मूर्ख पाप का मज़ाक उड़ाते हैं, परन्तु ईमानदार लोगों में कृपादृष्टि होती है। मजाक उड़ाने का अर्थ है "घमंड करना, तिरस्कार करना, ताना देना, या फुलाना। कृपादृष्टि शब्द का मूल अर्थ खुशी, आनंद या स्वीकृति है। पतियों और पत्नियों के रूप में, हमें वचन के दूसरे भाग का पालन करने की आवश्यकता है, इसलिए जब हमारे जीवनसाथी पाप में पड़ते हैं, तो वे करुणा के दिल से हमारे साथ एहसान पाते हैं जो प्रेम से उन्हें प्रोत्साहित करता है।

जब एक स्त्री परगमन में पकड़ी गई, तो यहूदी उसे यीशु के पास लाकर कहने लगे, हे गुरू, यह स्त्री परगमन में पकड़ी गई है। मूसा ने व्यवस्था के विषय में हमें आज्ञा दी, कि ऐसों पर पत्थरवाह किया जाए। पर आप क्या कहते हैं?" (यूहन्ना 8:4-5)। यहूदी यीशु की परीक्षा ले रहे थे। वे इस बात से भी प्रसन्न थे कि महिला पकड़ी गई और उसे पत्थरवाह करने की उम्मीद कर रहे थे। (नोट: अपराधी आदमी कहाँ था?)

कभी-कभी आपका जीवनसाथी पाप में कार्य करेगा, शायद झूठ बोलना, गुस्सा करना या चिल्लाना। आपकी प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए? यीशु ने यह कहा, " तुम में जो निष्पाप हो, वही पहले उसको पत्थर मारे " (यूहन्ना 8:7)। उन्होंने जमीन पर लिखना शुरू किया, और यह माना जाता है कि वह आरोप लगाने वालों के पापों की ओर इशारा कर रहे थे। एक-एक करके, वे सभी चले गए क्योंकि उनके दिल दोषी ठहराए गए थे (पद 9)। यीशु ने स्त्री से सीधे कहा, कि उसने उसकी निंदा नहीं की, और यह उसके पास जाने और पाप न करने का अवसर था (पद 11)।

हर पति-पत्नी अपने-अपने जीवनसाथी को असफल होते देखेंगे। जब हम इसे देखते हैं, तो हमें आत्म-संयम बरतने की ज़रूरत है। नीतिवचन 24:17 कहता है, " जब तेरा शत्रु गिर जाए तब तू आनन्दित न हो, और जब वह ठोकर खाए, तब तेरा मन मगन न हो। " चूँकि हमें अपने शत्रु के गिरने पर आनन्दित नहीं होना चाहिए, तो हमें अपने जीवन-साथी के गिरने पर कितना अधिक आनन्दित नहीं होना चाहिए?

गिरे हुए स्वभाव के कारण, हममें से प्रत्येक में एक गैर दोस्ताना व्यक्तित्व होता है जो कभी-कभी खुशी लेता है जब कोई मूर्खतापूर्ण विकल्पों के कारण पीड़ित होता है। हमें बस इतना करना है कि टीवी चालू करें और नवीनतम रियलिटी शो देखें जहां लोग हंस रहे हैं, या कम से कम दूसरों की मूर्खता से मनोरंजन कर रहे हैं। "ठीक है क्रेग कास्टर को जो मिला वह उसका हकदार था।"

जब यह मनोवृत्ति हमारे घरों में आती है, तो इसका हमारे जीवनसाथी और बच्चों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता है क्योंकि हम परमेश्वर को ग़लत रूप से पेश कर रहे हैं । यह पूरी तरह से धुंधला कर देता है और भ्रष्ट कर देता है कि

प्रेम क्या है। हम देखते हैं कि हमारे जीवनसाथी नियमित रूप से असफल होते हैं, हम नियमित रूप से असफल होते हैं, और हमारे बच्चे हमें प्रतिदिन चुनौती देते हैं। सवाल यह है कि इस समय आप परमेश्वर का प्रतिनिधित्व कैसे करेंगे? अपने आप पर ध्यान केंद्रित करने के लिए - हम कैसे चाहते हैं कि परमेश्वर हमारे साथ व्यवहार करे जब हम अपने व्यवहार से उसकी महिमा करने में विफल रहते हैं?

जब आप उड़ाऊ पुत्र (लूका 15:11-32) की कहानी पढ़ते हैं, तो आप पाप में गिरे पुत्र के प्रति एक पिता के दिल की झलक पाते हैं, जो हमारे स्वर्गीय पिता के दिल की एक तस्वीर है। जब उसके बेटे ने आखिरकार घर लौटने का फैसला किया, तो बाइबल कहती है, "और वह उठकर अपने पिता के पास आया। वह अभी दूर ही था, कि उसके पिता ने उसे देखकर तरस खाया, और दौड़कर उसे गले लगाया, और बहुत चूमा" (आयत 20)। अपने बेटे के गिरने पर किसी श्रेष्ठ नैतिकता के बिना, उसने अपने बेटे को गले लगाया और उसे चूमा। कई पति - पत्नियों को अभी भी इस तरह की करुणा विकसित करने की ज़रूरत है ।

यदि हम परमेश्वर के वचन को अनदेखा करते हैं, या पवित्र आत्मा के मार्गदर्शन का विरोध करते हैं, और पाप और अशुद्धता में गिर जाते हैं, तो परमेश्वर आनन्दित नहीं होता। इसके बजाय, उसका दिल हमारी मूर्खता और बगावत पर टूट पड़ता है । जब आप पाते हैं कि आप अपने जीवनसाथी के साथ प्रेम का अभ्यास नहीं कर रहे हैं, तो आपको इसे परमेश्वर के सामने कबूल करना चाहिए, क्षमा माँगनी चाहिए, फिर पश्चाताप करना चाहिए और इस पाप से फिरना चाहिए। जब आप अंगीकार करते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं तो परमेश्वर आपके दिल को बदल देगा। याद रखें, असफलताएँ उन क्षेत्रों को प्रकट करने का परमेश्वर का तरीका है जिन्हें बदलने की आवश्यकता है और हमें यह सीखने के लिए कि कैसे अपने जीवनसाथी को ईश्वरीय तरीके से जवाब देना है। परमेश्वर का लक्ष्य हमें अपने स्वरूप में बदलना है।

बाइबल आधारित दया का अर्थ है कि हम मसीह और उसके अनुग्रह के कार्य के कारण परमेश्वर की क्षमा प्राप्त करते हैं, न कि हमारे पाप के लिए दंड। लेकिन बाइबल हमें यह भी बताती है कि परमेश्वर अपने बच्चों को अनुशासित करता है, जिसका अर्थ है आप और मैं। परमेश्वर शामिल हैं। वह इन कठिन परिस्थितियों में गैरहाजिर नहीं है।

गहराई में अध्ययन करें

विवरण करें कि ये पवित्रशास्त्र दया और करुणा के बारे में क्या कहता है। आप इसे अपनी शादी में कैसे लागू कर सकते हैं? विशिष्ट रहें।

"जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो।" (लूका 6:36)

"धन्य हैं वे, जो दयावन्त हैं, क्योंकि उन पर दया की जाएगी। (मत्ती 5:7)

प्रभु की करुणा निरन्तर बनी रहती है; उसकी दया अनंत है। रोज सबेरे उसमें नए अंकुर फूटते हैं; उसकी सच्चाई अपार है। (विलापगीत 3:22–23)

आप लोग परमेश्वर की पवित्र एवं परमप्रिय चुनी हुई प्रजा हैं। इसलिए आप लोगों को सहानुभूति, अनुकम्पा, विनम्रता, कोमलता और सहनशीलता धारण करनी चाहिए। (कुलुस्सियों 3:12)

कृपा और सच्चाई तुझ से अलग न होने पाएँ; वरन् उनको अपने गले का हार बनाना, और अपनी हृदयरूपी पटिया पर लिखना। (नीतिवचन 3:3)

पाठ - 5
सत्य पर ध्यान दें, पाप पर नहीं

हमारा पापी स्वभाव दूसरे व्यक्ति की असफलताओं पर ध्यान देना चाहता है। इस प्रलोभन के आगे झुकना हमें भावनात्मक रूप से बीमार कर देता है और हमारे दिलों को परमेश्वर से अलग कर देता है।

प्रेम क्या है

10. प्रेम सत्य में आनन्दित होता है।

तथ्य - फ़ाइल

सत्य में आनन्दित होना—परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के आधार पर, जो सत्य है, उस पर आनन्दित होना।

क्या आप अपने जीवनसाथी की प्रशंसा करते हैं, उन्हें उनके द्वारा की गई अच्छी चीजों के बारे में बताते हैं, या क्या आप ज्यादातर उनकी कमजोरियों और विफलताओं को इशारा करते हैं? सावधान रहें, क्योंकि आप इन नकारात्मक विचारों को छुपा सकते हैं, भले ही आप उन्हें मौखिक रूप से व्यक्त न करें। सोचिए, अपने जीवनसाथी से पूछिए, " एक औसत सप्ताह या एक औसत दिन में, आपके प्रति मेरे मुंह से कितनी आशिषें आती हैं और कितने नकारात्मक बातें ?

सकारात्मक संचार है: "आप कैसे कर रहे हैं?" " आप अच्छे लग रहे हो।" "आज आपके लिए चीजें कैसी रहीं?" नकारात्मक है: "आपके साथ क्या गलत है? मैंने तुमसे एक काम करने के लिए कहा था! “तुम काम से देर से क्यों आए? अब रात का खाना ठंडा है! क्या आपको इस बात की परवाह नहीं है कि मैंने इसमें क्या काम किया है?” "हनी, तुमने कचरा बाहर क्यों नहीं निकाला?" यह नकारात्मक या प्रेमहीन तरीके से एक-दूसरे की गलतियों को संकेत करने का कोई भी रूप हो सकता है।

इसे महसूस किए बिना, दिन हफ्तों में बदल जाते हैं, और सप्ताह महीनों में बदल जाते हैं, जबकि हम अपने जीवनसाथी को ज़हर दे रहे हैं, उनके खिलाफ पाप कर रहे हैं, उन्हें प्रेम नहीं कर रहे हैं, क्योंकि हम उन बातों की ओर संकेत करते हैं जो वे सही नहीं कर रहे हैं और उनकी सफलताओं के लिए उनकी प्रशंसा करने के बारे में नहीं सोच रहे हैं। पतियों और पत्नियों को अपने साथी के बारे में अच्छी बातों के बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए । हमें नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने से सावधान रहने की आवश्यकता है। सकारात्मक विचारों को विकसित करना और एक दूसरे को आशीर्वाद देने के लिए उनका उपयोग करना एक विकल्प है। हमें प्रशंसा का अभ्यास करने की आवश्यकता है। यह चापलूसी नहीं है, बल्कि कृतज्ञता के दिल से सच्चा प्रेम है।

यदि यह नकारात्मकता आपके विवाह को गलत दिशा में भेज रही है तो उसे बदल दीजिए। अपने परिवार या प्रार्थना के समय, एक क्षण लें और कहें, "आओ हम सब एक दूसरे के बारे में कुछ अच्छा कहें।" इसे मज़ेदार बनाएँ। परिवार को एक दूसरे में अच्छाई खोजने की शुरुआत करें। यह महत्वपूर्ण है कि हम एक टीम के रूप में मिलकर काम करें। यदि आपके बच्चे हैं, तो माँ और पिताजी को सबसे पहले बाँटना चाहिए।

हमें अपने जीवनसाथी और बच्चों का अध्ययन करने, उनकी ताकत जानने और उनके गुणों और अच्छे कामों के लिए उनकी प्रशंसा करने की आवश्यकता है।

आत्म-परीक्षा 1

क्या आप इस क्षेत्र में संघर्ष करते हैं? __ हाँ __नही

यदि ऐसा है, तो कम से कम ऐसी तीन खूबियों की पहचान करें जो आपने अपने जीवनसाथी में देखी हैं। परमेश्वर से कहिए कि वह आपको यह बताने का सबसे अच्छा समय और तरीका बताए । यह एक पत्र या किसी विशेष रात्रिभोज पर बातचीत के माध्यम से हो सकता है। अपनी भक्ति के समय में परमेश्वर से अपने जीवनसाथी के प्रति चौकस रहने में मदद करने के लिए कहें और उनकी प्रशंसा करना सीखें।

कार्य योजना 1
इस अभ्यास में एक दूसरे को प्रोत्साहित करने के लिए पति और पत्नी के रूप में मिलकर काम करें। उन चुनौतीपूर्ण वैवाहिक क्षणों में एक-दूसरे की मदद करने के कुछ तरीकों पर चर्चा करें। उन्हें यहाँ नोट करें।

गहराई में अध्ययन करें

विवरण करें कि ये पवित्रशास्त्र सत्य में आनन्दित होने के बारे में क्या कहते हैं, क्या अच्छा है, और सिद्धांत आपके विवाह पर कैसे लागू हो सकते हैं

"मेरे लिये तो हे परमेश्वर, तेरे विचार क्या ही बहुमूल्य हैं! उनकी संख्या का जोड़ कैसा बड़ा है! यदि मैं उनको गिनता तो वे बालू के किनकों से भी अधिक ठहरते। जब मैं जाग उठता हूँ, तब भी तेरे संग रहता हूँ।" (भजन संहिता 139:17-18)

प्रेम निष्कपट हो; बुराई से घृणा करो; भलाई में लगे रहो। (रोमियो 12:9)

सावधान! कोई किसी से बुराई के बदले बुराई न करे; पर सदा भलाई करने पर तत्पर रहो, आपस में और सबसे भी भलाई ही की चेष्टा करो। (1 थिस्सलुनीकियों 5:15)

11. प्रेम सब कुछ सहन करता है।

1 कुरिन्थियों 13:7 में प्रेम का एक और पहलू यह है कि प्रेम "सब कुछ सहन करता है। सहन न करने का अर्थ है हार मान लेना, अपने आप से यह कहना कि अब आप और सहन नहीं कर सकते और यह महसूस करना कि आप कोशिश करते-करते थक गए हैं। हमें प्रतिदिन मसीह में बने रहना चाहिए और एक दूसरे के साथ सहने और एक दूसरे के साथ धैर्य रखने के लिए स्वस्थ भक्तिमय जीवन व्यतीत करना चाहिए।

तथ्य - फाड़ल

सहना [सब कुछ]—स्टेगो (यूनानी)। छिपना, छिपाना। प्यार दूसरों के दोषों को छुपाता है या उन्हें ढंक देता है. यह नाराजगी को दूर रखता है क्योंकि जहाज पानी को बाहर रखता है. या छत बारिश को दर रखता है।

जब हम हार मानने लगते हैं, तो हम अपने जीवनसाथी को दोष नहीं दे सकते। यह हमारी व्यक्तिगत अवज्ञा और हमारा पाप है। हमें अपने जीवन - साथी के बजाय यीशु पर भरोसा रखने के लिए परमेश्वर की योजना और उद्देश्य के प्रति वफ़ादार रहने की ज़रूरत है ।

सिर का खेल, मौन उपचार, मुंह फुलाना, क्रोध में प्रतिक्रिया करना, और दिनों तक बुरा रवैया रखना सभी पाप हैं, और यह प्रेम में "सहना" नहीं है। हो सकता है कि आप गलत और तर्कसंगत महसूस करें, लेकिन इन व्यवहारों को अमल में लाना समाधान नहीं है।

तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो। (गलातियों 6:2)

सहन शब्द का अर्थ है "उठाने के लिए, अपने आप को धारण करने के लिए; कुछ ले जाने के लिए। जब आपका जीवनसाथी अपना काम नहीं कर रहा हो तो परमेश्वर की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी बने रहना एक भारी बोझ उठाने जैसा महसूस हो सकता है, लेकिन यह प्यार का एक गुण है। परमेश्वर कहते हैं कि हमें विवाह में समस्याओं को "सहन" करने की आवश्यकता है, और ऐसे मौसम होते हैं जब एक पति या पत्नी को दूसरे की तुलना में अधिक सहन करने वाला माना जा सकता है।

यदि आपने विवाह के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को न जानते हुए, गलत अपेक्षाएँ रखते हुए, या अपने जीवनसाथी को बदलने की कोशिश करने के लिए परमेश्वर के वचन के विपरीत तरीकों का उपयोग करते हुए रिश्ते में प्रवेश किया, तो आप खुद को निराश, उदास और हार मानने की इच्छा पा सकते हैं। क्या आपने कभी इस बात पर ध्यान दिया है कि विवाह में प्रवेश करते समय पुरुषों और महिलाओं की कुछ अपेक्षाएँ होती हैं? हम उम्मीद करते हैं कि हमारे जीवनसाथी बात करें, कार्य करें और जैसा हम चाहते हैं वैसा ही करें, इसलिए उन्हें ऐसी असुविधा न हो।

विवाह में समय, काम और बलिदान लगता है, और यह ईश्वर द्वारा दिया गया एक कार्य है। क्या आपने अभी तक इसे वास्तव में स्वीकार किया है? यदि आप सावधान नहीं हैं, तो आपके वैवाहिक जीवन में खटास आ सकती है। सभी बातों को प्रेम में सहने का अर्थ है अपनी सेवकाई को जीवनसाथी के रूप में स्वीकार करना - अच्छी, बुरी, और चुनौतीपूर्ण - और ईश्वरीय प्रेम के साथ व्यवहार करना। इसमें आपके जीवनसाथी की असफलताओं और दोषों को परमेश्वर द्वारा आपको बदलने के अवसरों के रूप में देखना शामिल है, आलोचना करने या कठोर, पाखंडी व्याख्यान देने के लिए नहीं।

आत्म-परीक्षा 2

पहचानें कि परमेश्वर आपके जीवनसाथी के माध्यम से आप में क्या प्रकट कर रहा है जिसके कारण आप हार मान रहे हैं। (सुझाव: आप अपने जीवनसाथी पर किन समस्याओं का आरोप लगा रहे हैं? आपका रवैया क्या है?)

गहराई में अध्ययन करें

इन शास्त्रों में उन सिद्धांतों को पहचानें जो आपके विवाह में आपकी मदद कर सकते हैं।

"अत: हम बलवानों को चाहिए कि निर्बलों की निर्बलताओं को सहें, न कि अपने आप को प्रसन्न करें।" (रोमियों 15:1)

तुम एक दूसरे का भार उठाओ, और इस प्रकार मसीह की व्यवस्था को पूरी करो। (गलातियों 6:2)

आत्म-परीक्षा 3

क्या परमेश्वर ने आपके जीवनसाथी को जो व्यक्तित्व दिया है, क्या उससे आप नाराज़ हैं? __हां __ नहीं

यदि ऐसा है, तो मुद्दों का विवरण करें और उन्हें प्रेम से जवाब देने की योजना बनाएं।

12. प्रेम विश्वास करता है और आशा करता है।

यहां बाइबिल का सिद्धांत यह है कि प्रेम लोगों में सर्वश्रेष्ठ विश्वास करने का एक तरीका है, तब भी जब आपकी भावनाएं आपको अन्यथा बताती हैं। विश्वास एक क्रिया है, जो कार्रवाई की मांग करती है चाहे हम कैसा भी महसूस करें। आखिरी सिद्धांत जो हमने सीखा वह था सभी चीजों को सहना, या अपने जीवनसाथी की गलतियों को प्यार से ढंकने के लिए तैयार रहना। अब हमें विश्वास करना चाहिए और उनके लिए सर्वश्रेष्ठ की उम्मीद करनी चाहिए और एक आशावादी रवैया बनाए रखना चाहिए। हमें हमेशा भरोसे के रिश्ते पर चलने की इच्छा रखने की ज़रूरत है, तब भी जब बेईमानी या विश्वास न करने की वजह रही हो ।

तथ्य - फ़ाइल

विश्वास-पिस्तुओ (यूनानी)। किसी चीज़ में विश्वास करना, या दृढ़ता से राजी होना; प्रकट करता है कि अपेक्षित आशा का एक दृष्टिकोण है।

क्या आप हमेशा अपने जीवनसाथी या बच्चे से क्षमा माँगते हैं जब आप उनके प्रति अपने व्यवहार में परमेश्वर को गलत बताते हैं? यीशु ने कहा, "जिस के पास मेरी आज्ञाएँ हैं और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है; और जो मुझ से प्रेम रखता है उससे मेरा पिता प्रेम रखेगा, और मैं उससे प्रेम रखूँगा और अपने आप को उस पर प्रगट करूँगा। " (यूहन्ना 14:21)। क्षमा पवित्र आत्मा का चंगाई देने वाला मलहम है जो बहाली लाता है ताकि कोई फिर से शुरू कर सके और विश्वास कर सके।

जब लोग विवाह परामर्श के लिए आते हैं, तो कई लोग परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने की कोशिश कर रहे हैं लेकिन अज्ञानता के कारण असफल हो रहे हैं। उन्हें वैवाहिक सफलता के लिए दिशानिर्देश नहीं सिखाए गए हैं या उन्हें स्वयं नहीं मिला है, और वे निराश महसूस करते हैं, हार मानने को तैयार हैं। अक्सर भारी वजन उन पर हावी हो जाता है, जो उनके जीवनसाथी के व्यवहार के प्रति उनकी अपनी प्रतिक्रियाएँ होती हैं। जैसा कि 1 कुरिन्थियों 13 में कहा गया है, "सब बातों पर विश्वास या आशा न करके" आप परमेश्वर पर संदेह कर रहे हैं।

क्या आप अभी परमेश्वर पर संदेह करते हैं? उस पर अपना भरोसा रखो। आमदनी, गुप्त गतिविधियों, यहां तक कि बेवफाई जैसे क्षेत्रों में जीवनसाथी द्वारा दिया गया धोखा विनाशकारी हो सकता है, लेकिन परमेश्वर चाहता है कि हम आशा रखें और रिश्ते में विश्वास की दिशा में काम करें। पिछली कुछ गलतियाँ गिलोटिन की तरह पति-पत्नी पर टिकी होती हैं। यह परमेश्वर की इच्छा के अनुसार व्यवहार नहीं कर रहा है। संदेहजनक रवैया वाला व्यक्ति "सब बातों की आशा नहीं रखता" है। वह पाप है।

भरोसे के बिना एक रिश्ता बिल्कुल भी एक रिश्ता नहीं होता है। परमेश्वर की योजना हमारे लिए भावनात्मक रूप से एक होने की है। आप माफ नहीं कर सकते, भले ही आप इसके लिए प्रार्थना कर रहे हों, अगर आप कड़वाहट से चिपके हुए हैं, यह मानने से इनकार कर रहे हैं कि परमेश्वर आपके और आपके जीवनसाथी के लिए और आपके विवाह के माध्यम से क्या कर सकता है।

"और यदि किसी घर में फूट पड़े, तो वह घर कैसे स्थिर रह सकेगा?" (मरकुस 3:25)

गहराई में अध्ययन करें

इन पवित्रशास्त्र के सिद्धांतों की पहचान कीजिए ताकि आपके विवाह को आशावान और विश्वास से भरा होने में मदद मिल सके। उन्हें विशिष्ट मुद्दों से संबंधित करें।

"यीशु ने उनकी ओर देखकर कहा, "मनुष्यों से तो यह नहीं हो सकता, परन्तु परमेश्वर से सब कुछ हो सकता है।"" (मत्ती 19:26)

क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं । (2 कुरिन्थियों 5:7)

और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। (रोमियों 5:5)

कार्य योजना 2

क्या ऐसे तरीके हैं जिनसे आपने अपनी शादी में विश्वास करना और उम्मीद करना छोड़ दिया है? __हाँ __नही

यदि ऐसा है, तो मुद्दों का विवरण करें। प्रभु से अपने अविश्वास को ठीक करने के लिए कहें और अपने जीवनसाथी को फिर हिम्मत दिलाने के लिए एक योजना बनाने में मदद करें कि परमेश्वर इन चीजों को पूरा करेगा।

यदि आप भरोसे के इस क्षेत्र में संघर्ष कर रहे हैं और परमेश्वर पर भरोसा करना और अपने जीवनसाथी पर भरोसा करना सीखने के लिए और मदद की जरूरत है, या यदि आपको अपने विवाह में क्षमा पाने की आवश्यकता है, तो अपेंडिक्स पी: भरोसे और क्षमा को पूरा करें। यह आपको सभी परिस्थितियों में पहले परमेश्वर पर भरोसा करना सीखने में मदद करेगा, यहाँ तक कि अपने जीवनसाथी के साथ आने वाली परीक्षाओं और क्लेशों में भी, और फिर अपने विवाह में क्षमा के महत्व को समझने में मदद करेगा। उन्हें माफ करने की ज़रूरत है और जिन्हें माफ करने की ज़रूरत है, उनके लिए सुलह करने के लिए कदम सीखें ।

13. प्रेम सब बातों में बना रहता है।

यह क्रिया प्रकट करती है कि प्रेम बना रहता है, मजबूत रहता है और अपनी जमीन पर टिका रहता है। लक्ष्य है टिकना, सहना, धैर्य से सहना। शादी कठिन काम है। बच्चों को पालना कठिन काम है। अपने जीवनसाथी के प्रति इस समय आपका क्या दृष्टिकोण है? क्या यह ऐसा है जो इसे काम करने और उस पर काम करने की आपकी इच्छा को प्रकट करता है, या क्या आप केवल भावनाओं के माध्यम से पीड़ित हैं?

तथ्य - फ़ाइल

[सब बातों को] सहन करो—हुपोमेनो (यूनानी)। नीचे रहना, नीचे सहन करना, पीड़ित होना (दुखों का भार). 11 रोगी स्वीकृति, अपनी जमीन पकड़े हुए जब वह अब विश्वास नहीं कर सकता है और न ही आशा कर सकता है।

जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हमारे शरीर बदलते हैं और बीमारी आ सकती है। आपको अपने जीवनसाथी की देखभाल के लिए बुलाया जा सकता है, या आप उन चीजों को करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं जो आप करते थे या करना चाहते थे। हो सकता है कि आपके यौन संबंध पहले जैसे न रहे हों। क्या आप इसे परमेश्वर की योजना के हिस्से के रूप में स्वीकार करने और रास्ते में परमेश्वर और उसकी बुद्धि की खोज करते हुए एक आनंदित दिल के साथ सहने के लिए तैयार हैं? पतियों, क्या आप अपनी जमीन पर डटे रहेंगे जब आपकी पत्नी उस स्प्रिंग चिकन की तरह नहीं दिखती है जब आपने उससे शादी की थी , और इसके विपरीत पत्नी के लिए?

यह हो सकता है कि आप दोनों एक जबरदस्त मुसीबत से गुजर रहे हों और शत्रु अंदर आकर आपसे कहना चाहता हो, "अब आप इसे और नहीं सह सकते।" प्रेम अपनी जमीन तब थाम लेता है जब ऐसा लगता है कि अब आप सहन नहीं कर सकते। हमें परमेश्वर की महिमा के लिए धीरज धरना चाहिए। प्रेम सर्वशक्तिमान ईश्वर पे भरोसा और विश्वास रखता है, जो आपको और आपके जीवनसाथी दोनों को आशीर्वाद देने की इच्छा रखता है - और आपके विवाह को आशीर्वाद देता है। परमेश्वर की विश्वासयोग्यता और शक्ति हमें भरोसा करने की क्षमता देती है।।

गहराई में अध्ययन करें

पहचानें कि कैसे ये शास्त्र आपको और आपके जीवनसाथी को कठिन समय से उबरने में मदद कर सकते हैं। प्रत्येक के लिए एक उदाहरण दीजिए।

हे मेरे भाइयो, जब तुम नाना प्रकार की परीक्षाओं में पड़ो, तो इसको पूरे आनन्द की बात समझो, 3यह जानकर कि तुम्हारे विश्वास के परखे जाने से धीरज उत्पन्न होता है। 4पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे। (याकूब 1:2-4)

इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अभी कुछ दिन के लिये नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दु:ख में हो (1 पतरस 1:6)

प्रेम कभी असफल नहीं होता

अंत में, 1 कुरिन्थियों 13:8 कहता है, " प्रेम कभी टलता नहीं ।" परमेश्वर पहले हमसे प्रेम करता है, जब हम उसे महसूस करते हैं और प्राप्त करते हैं, तब हम उससे और दूसरों से प्रेम कर सकते हैं। यह हमें हमारी नींव, परमेश्वर के साथ हमारी आत्मीयता के विचार पर वापस ले जाता है। यदि हम उसे पहले रखते हैं, मार्गदर्शन के लिए प्रतिदिन उसकी ओर देखते हैं, और उसकी इच्छा पूरी करने की इच्छा रखते हैं, तो परमेश्वर हमें वह अनुग्रह और सामर्थ्य देगा जिसकी हमें सफल होने के लिए आवश्यकता है।

कोई गन्दी बात तुम्हारे मुँह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर अनुग्रह हो। परमेश्वर के पवित्र आत्मा को शोकित मत करो, जिस से तुम पर छुटकारे के दिन के लिये छाप दी गई है। सब प्रकार की कड़वाहट, और प्रकोप और क्रोध, और कलह, और निन्दा, सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। एक दूसरे पर कृपालु और करुणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो। (इफिसियों 4:29-32)

प्रेम भरे संचार के बारे में बाइबल बहुत कुछ कहती है। यदि यीशु ने हमें कभी ऐसी आज्ञा दी जिसे पूरा करने में परमेश्वर हमें सक्षम न करे, तो वह झूठा होगा। और यदि हम अपनी अयोग्यता को आज्ञाकारिता में बाधा बनाते हैं, तो हम परमेश्वर से कह रहे हैं कि कुछ ऐसा है जिस पर उसने विचार नहीं किया। आत्मनिर्भरता के प्रत्येक पहलू को ईश्वर की शक्ति द्वारा प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए। स्वयं को कमजोर और निर्भर मानना परमेश्वर की आत्मा के लिए ज़रूरी है कि वह हममें अपनी शक्ति ज़ाहिर करे । परमेश्वर जानता है कि हम अपने शरीर में और एक - दूसरे से प्रेम करने की अपनी शक्ति में समर्थ नहीं हैं । जब हम असफल होते हैं तो वह हमसे नाराज नहीं होता, बल्कि वह चाहते है कि हम उस स्थान पर आएं जहां हम उसके अनुग्रह की सफलता के लिए पल-पल उसके पास आते हैं ।

हमें अपने आप को निरंतर प्रार्थना में याद दिलाने की आवश्यकता है, "परमेश्वर, मुझे सफल होने के लिए हर दिन आपकी शक्ति और अनुग्रह की आवश्यकता है।" हम कल के अनुग्रह पर भरोसा नहीं कर सकते। आइए हर दिन यह कहते हुए परमेश्वर के चरणों में रहें, "परमेश्वर, मैं अपने जीवनसाथी से प्रेम करने और अपने बच्चों से प्रेम करने के लिए आपकी कृपा और दया की भीख माँग रहा हूँ।" कल वह अनुग्रह प्रदान नहीं करेगा जिसकी आज आवश्यकता है। क्या आपने वह सीखा है? जब आप ऐसा करते हो, और आप स्वयं को मसीह में प्रतिदिन बने रहने के लिए समर्पित करते हैं, तो आप परमेश्वर की आत्मा के फल को स्वाभाविक रूप से अपने दिल से बाहर आने का अनुभव करोगे ।

याद रखें कि संतरे का पेड़ कभी भी अपना फल पैदा करने के लिए काम नहीं करता है। जब आप परमेश्वर से पूछना सीखते हैं, तो अपने जीवनसाथी के प्रति दयालु और प्रेमी होने में आपकी सहायता करने के लिए उस पर भरोसा करें। वह यह करेंगे । प्रतिदिन प्रार्थना करें, "परमेश्वर, मुझे अपने जीवनसाथी से प्रेम करने की शक्ति , अनुग्रह दें, उन चीजों को करना छोड़ दें जो मैं गलत कर रहा हूं । और जब मैं अपने जीवनसाथी को विफल कर दूं, तो मुझे अनुग्रह, विनम्रता दें, ताकि मैं जल्दी से जाकर माफी मांगूं। । यह आपके द्वारा अपने दिल को बदलने के लिए परिश्रम करने के द्वारा नहीं होगा, बल्कि अपने आप को प्रेम करने के लिए परमेश्वर की शक्ति से भरने के द्वारा होगा। वह ऐसा करने का वादा करता है। और जब आप ऐसा करते हैं, आप बदलना शुरू कर देंगे, लेकिन तब तक नहीं।

परमेश्वर आपको और मुझे आशीष देना चाहता है। वह हम में से प्रत्येक में महिमा प्राप्त करना चाहता है । लेकिन हमें उस बात का आज्ञाकारी होना चुनना चाहिए जो उसका वचन हमें करने के लिए कहता है। पालन करने की शक्ति हमारे दैनिक संबंधों का प्रतिफल है।

एक पल ले लो और इस प्रार्थना की प्रार्थना करो।

पिता, मैं इन अद्भुत सच्चाइयों के लिए आपको धन्यवाद देता हूं। धन्यवाद कि आपने हमसे यह सब अपनी ताकत में, अपनी शक्ति में करने की अपेक्षा नहीं की है, लेकिन आपने हमें अपने पवित्र आत्मा की शक्ति दी है जो हमें आपकी इच्छा के अनुसार सभी चीजों को करने में सक्षम बनाती है। और, पिता, मैं प्रार्थना करता हूं कि यदि हम आप पर संदेह कर रहे हैं, उस शक्ति पर संदेह कर रहे हैं जो आप मुझे और मेरे जीवनसाथी को दे सकते हैं, तो मैं प्रार्थना करता हूं, कि आप दृढ़ विश्वास लाएंगे और हमारे दिलों को बदल देंगे। हमें आप पर विश्वास और भरोसा करने की आशा दें, हमारे प्रत्येक जीवन में, हमारे विवाह में एक महान कार्य करने के लिए, और हम प्रार्थना करते हैं कि जहां कोई पापी दृष्टिकोण या कार्य किया जा रहा है, तो आप हमें प्रत्येक विनम्र दिल देंगे, क्षमा मांगने के लिए तैयार होंगे, क्षमा करने के लिए तैयार होंगे। हे प्रभु, हम चाहते हैं कि आपकी महिमा हो। हम चाहते हैं कि हमारा घर एक ऐसी जगह हो जहां लोग आपको हमारे जीवन में और उसके माध्यम से देख सकें। हम आपका धन्यवाद करते हैं, हम आपकी प्रशंसा करते हैं, और हम ये चीजें यीशु के नाम से मांगते हैं। आमीन।

आत्म-परीक्षा 4

सबसे पहले, अपेंडिक्स ई को पूरा करें: असरदार सुनने का आत्म- समीक्षा यह देखने के लिए कि आप कितनी अच्छी तरह सुनते हैं। यह आपको अधर्मी विचारों, भावनाओं या व्यवहारों के स्रोत की पहचान करने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है जो अप्रिय संचार का कारण बने हैं।

दूसरा, अपेंडिक्स एफ को पूरा करें: अपने प्यार भरे संचार में सुधार । यह आपको उन क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करने के लिए डिज़ाइन किया गया है जिन्हें आपको बदलने की आवश्यकता है और आपको अपने जीवनसाथी के साथ सुलह प्रक्रिया के माध्यम से मार्गदर्शन करने के लिए ।

शत्रु को इस क्षेत्र में अनुचित तरीके से कार्य करने के लिए आपको धोखा न देने दें। यह आत्म-परीक्षा तब तक पूरी होनी चाहिए जब तक कि पति और पत्नी के बीच प्रेमपूर्ण संचार न हो, जब तक कि समझ पूरी न हो जाए और क्षमा और मेल-मिलाप का अभ्यास रिश्ते का एक नियमित हिस्सा न बन जाए।

क्षमा और मेल-मिलाप की गहरी समझ के लिए, अपेंडिक्स पी की समीक्षा करें: विश्वास और क्षमा।

अपेंडिक्स संसाधन

इन अपेंडिक्स को अतिरिक्त संसाधनों के रूप में शामिल किया गया है। वे सभी पाँच वॉल्यूम में पाए जाते हैं, लेकिन प्रत्येक वॉल्यूम में सभी अपेंडिक्स शामिल नहीं हैं। यदि आप किसी विशिष्ट अपेंडिक्स की समीक्षा करना चाहते हैं, तो नीचे दी गई सूची में देखें कि यह कहाँ स्थित है।

अपेंडिक्स ए: ज़िम्मेदारी पत्र	वॉल्यूम 1
अपेंडिक्स बी: मसीह के लिए अपना जीवन समर्पित करना	वॉल्यूम 1
अपेंडिक्स सी: प्रभु के साथ दैनिक आत्मीयता विकसित करना	वॉल्यूम 1
अपेंडिक्स डी: सुझाए गए पुस्तकें	वॉल्यूम 1
अपेंडिक्स ई: असरदार सुनने का आत्म-समीक्षा	वॉल्यूम 2
अपेंडिक्स एफ: अपने प्यार भरे संचार में सुधार	वॉल्यूम 2
अपेंडिक्स जी: चक्र को तोड़ना	वॉल्यूम 2 & 3
अपेंडिक्स एच: पति की ज़रूरतें	वॉल्यूम 3
अपेंडिक्स I: विरोध के प्रति पति की बाइबिल प्रतिक्रिया	वॉल्यूम 3
अपेंडिक्स जे: बाइबल आधारित तरीके एक पति अपनी पत्नी को पवित्र करता है	वॉल्यूम 3
अपेंडिक्स के: पत्नी की ज़रूरतें	वॉल्यूम 3
अपेंडिक्स एल: साथी की ज़रूरतें	वॉल्यूम 3
अपेंडिक्स एम: सामान्य बाधाएं	वॉल्यूम 3 - 5
अपेंडिक्स एन: पुरुषों के लिए विवाह में शारीरिक यौन संबंध	वॉल्यूम 4
अपेंडिक्स ओ: महिलाओं के लिए विवाह में शारीरिक यौन संबंध	वॉल्यूम 4
अपेंडिक्स पी: विश्वास और क्षमा	वॉल्यूम 2-5
अपेंडिक्स क्यू: विवाह आत्म-समीक्षा	वॉल्यूम 5
अपेंडिक्स आर: शब्दावली	वॉल्यूम 1-5

अपेंडिक्स E
असरदार सुनने का आत्म-समीक्षा

अपनी सुनने की आदतों के बारे में अधिक जागरूक होने में आपकी सहायता के लिए इस आत्म- समीक्षा को पूरा करें। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर सोच-समझकर और ईमानदारी से दें, फिर एक जोड़े के रूप में चर्चा करें।

यह होमवर्क हर बार पूरा किया जाना चाहिए जब तक कि पति और पत्नी के बीच प्रेमपूर्ण संचार न हो, जब तक कि समझ पूरी न हो जाए और क्षमा और मेल-मिलाप का अभ्यास रिश्ते का एक नियमित हिस्सा न बन जाए।

संचार की आदतों का खुलासा

#	क्या आप निम्नलिखित करते हैं?	ज्यादातर समय	बार - बार	कभी-कभी	लगभग कभी नहीं
1	जब आप अपने जीवनसाथी से सहमत नहीं होते हैं या सुनना नहीं चाहते हैं तो अपने जीवनसाथी को अनसुना करते हैं?				
2	क्या कहा जा रहा है पर ध्यान दें भले ही आप वास्तव में रुचि नहीं रखते हैं?				
3	मान लें कि आप जानते हैं कि आपका जीवनसाथी क्या कहने जा रहा है और सुनना बंद कर दें?				
4	अपने शब्दों में दोहराएं कि आपके जीवनसाथी ने अभी क्या कहा है?				
5	अपने जीवनसाथी के दृष्टिकोण को सुनें, भले ही वह आपसे भिन्न हो?				
6	अपने जीवनसाथी से कुछ सीखने के लिए तैयार रहें, भले ही वह महत्वहीन लगे?				
7	पता लगाएँ कि जब शब्दों का प्रयोग ऐसे तरीकों से किया जाता है जिनसे आप परिचित नहीं हैं तो उनका क्या अर्थ होता है?				
8	जब आपका जीवनसाथी अभी भी बात कर रहा हो तो अपने दिमाग में एक बचाव बनाएं?				
9	सुनने का आभास दें, जबकि आप वास्तव में सुन नहीं रहे हैं?				

संचार की आदतों का खुलासा (जारी)

#	क्या आप निम्नलिखित करते हैं?	ज्यादातर समय	बार - बार	कभी-कभी	लगभग कभी नहीं
10	मन-मोदक जब आपका जीवनसाथी बात कर रहा होता है?				
11	मुख्य विचारों को सुनें, न कि केवल तथ्यों को?				
12	पहचानें कि शब्दों का हमेशा अलग-अलग लोगों के लिए एक ही मतलब नहीं होता है?				
13	केवल वही सुनें जो आप सुनना चाहते हैं, अपने जीवनसाथी के पूरे संदेश को मिटा दें?				
14	अपने जीवनसाथी को देखें जब वह बोल रहा / रही हो?				
15	अपने जीवनसाथी के अर्थ पर ध्यान दें न कि वह कैसा दिखता है?				
16	जानिए किन शब्दों और वाक्यांशों पर आप रक्षात्मक या क्रोधपूर्ण तरीके से प्रतिक्रिया करते हैं?				
17	इस बारे में सोचें कि आप अपने संचार से क्या हासिल करना चाहते हैं?				
18	आप जो कहना चाहते हैं उसे कहने के लिए सर्वोत्तम समय की योजना बनाएं?				
19	इस बारे में सोचें कि आपका जीवनसाथी आपकी बातों पर कैसी प्रतिक्रिया दे सकता है?				
20	संवाद करने के सर्वोत्तम तरीके पर विचार करें (लिखित, मौखिक और समय)?				
21	अपने जीवनसाथी से बात करते समय हमेशा उसकी भावनात्मक स्थिति के बारे में ध्यान रखें (यदि वह तनावग्रस्त, उदास, चिंतित, प्रतिरोधी, उदासीन, हड़बड़ी में, क्रोधित, आदि) है?				
22	अपने संचार को अपने जीवनसाथी के व्यक्तित्व में समायोजित करें?				
23	मान लें कि आपका जीवनसाथी जानता है और समझता है कि आप क्या संवाद कर रहे हैं या उससे संवाद किया है?				
24	अपने जीवनसाथी को रक्षात्मक बने बिना आपके प्रति नकारात्मक भावनाओं को सम्मानपूर्वक बाहर निकालने की अनुमति दें?				
25	अपनी सुनने की क्षमता बढ़ाने के लिए नियमित रूप से प्रयास करते हैं?				

संचार की आदतों का खुलासा (जारी)

#	क्या आप निम्नलिखित करते हैं?	ज्यादातर समय	बार - बार	कभी-कभी	लगभग कभी नहीं
26	याद रखने में आपकी मदद करने के लिए आवश्यक होने पर नोट्स लें?				
27	वातावरण और/या बच्चों से विचलित हुए बिना ध्यान से सुनें?				
28	बिना न्याय करने या आलोचना किए अपने जीवनसाथी की बात सुनें?				
29	यह सुनिश्चित करने के लिए निर्देशों और संदेशों को दोबारा दोहराएं कि आप सही ढंग से समझते हैं?				
30	पूर्वकल्पित धारणाओं या दृष्टिकोण के साथ अपने जीवनसाथी की बात सुनें?				
31	प्रभु और अपने जीवनसाथी से क्षमा माँगने के द्वारा प्रेमरहित संचार में अपनी भूमिका की जिम्मेदारी लें?				
32	अपने बच्चों के साथ चर्चा करें कि आपको अपने जीवनसाथी के साथ क्या परेशानी हो रही है?				

बत्तीस सवालों के जवाब देने के बाद, अगले पेज पर स्कोरिंग इंडेक्स पूरा करें।

असरदार सुनने का आत्म-समीक्षा स्कोरिंग इंडेक्स

उस संख्या को सर्कल या हाइलाइट करें जो दर्शाता है वह श्रेणी जिसे आपने प्रत्येक आइटम पर चेक किया था असरदार सुनने का आत्म-समीक्षा ।

#	ज्यादातर समय	बार - बार	कभी कभी	लगभग कभी नहीं
1	1	2	3	4
2	4	3	2	1
3	1	2	3	4
4	4	3	2	1
5	4	3	2	1
6	4	3	2	1
7	4	3	2	1
8	1	2	3	4
9	1	2	3	4
10	1	2	3	4
11	4	3	2	1
12	4	3	2	1
13	1	2	3	4
14	4	3	2	1
15	4	3	2	1
16	4	3	2	1
17	4	3	2	1
18	4	3	2	1
19	4	3	2	1
20	4	3	2	1
21	4	3	2	1
22	4	3	2	1
23	1	2	3	4
24	4	3	2	1
25	4	3	2	1
26	4	3	2	1
27	4	3	2	1
28	4	3	2	1
29	4	3	2	1
30	1	2	3	4
31	4	3	2	1
32	1	2	3	4
सबटोटल्स				

नीचे अपने सबटोटल्स की गणना करें, और फिर उन्हें अपने ग्रैंड टोटल के लिए एक साथ जोड़ें।
अगले पेज पर अपने सुनने के स्तर का निर्धारण करें।

ग्रैंड टोटल _____

सुनने का स्तर

अपने सुनने के स्तर को निर्धारित करने के लिए नीचे दी गई उपयुक्त पंक्ति पर अपना स्कोर लिखें ।

110–120:	बेहतरीन सुननेवाला	_____
99-109:	औसत से ऊपर सुननेवाला	_____
88-98:	औसत सुननेवाला	_____
77-87:	उचित सुननेवाला	_____
<77:	खराब से बहुत खराब सुननेवाला	_____

अपने सुनने के स्तर को निर्धारित करने के बाद, आपको बदलने के लिए क्षेत्रों की पहचान करने की आवश्यकता हो सकती है। अपेंडिक्स एफ में अगले साथी वर्कशीट को पूरा करें: अपने प्यार भरे संचार में सुधार, जिसका उपयोग इस आत्म- समीक्षा के साथ किया जाना चाहिए जब आप अप्रिय संचार को प्रदर्शित होते हुए देखते हैं ।

याद रखें: मसीह का एक सच्चा चेला केवल दिमागी ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश नहीं कर रहा है। एक सच्चा चेला उन सिद्धांतों को सीखने और उनके अनुसार जीने के लिए खुद को निवेश करता है जो परमेश्वर अपने वचन में सिखाता है। इस सामग्री के माध्यम से परमेश्वर द्वारा प्रकट किए गए सिद्धांतों के अनुसार सीखने और जीने में आपका निवेश आपके जीवन को परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बदल देगा।

अपेंडिक्स एफ
अपने प्यार भरे संचार में सुधार

व्यक्तिगत रूप से पूरा करें, फिर समीक्षा करें और एक जोड़े के रूप में चर्चा करें।

अपेंडिक्स ई: असरदार सुनने का आत्म-समीक्षा और अपने स्कोर को पूरा करने के बाद, उन क्षेत्रों को प्राथमिकता से सूचीबद्ध करें जिन्हें आपको बदलने की आवश्यकता है ।

1. _____

2. _____

3. _____

4. _____

5. _____

6. _____

7. _____

पाठ 2-5, क्रमांक 1-13 से "प्रेम क्या नहीं है" और "प्रेम क्या है" की समीक्षा करें। प्राथमिकता के आधार पर किसी भी गैर-बाइबिल संचार आदतों की सूची बनाएं जिनका आप अपने घर में अभ्यास कर रहे हैं। इन्हें बदलने के लिए ईश्वर की कृपा और शक्ति के लिए प्रार्थना करें।

1. _____

2. _____

3. _____

4. _____

5. _____

6. _____

7. _____

8. _____

9. _____

10._____

मेलमिलाप

अगर आपको लगता है कि आप अपने जीवनसाथी (या किसी अन्य व्यक्ति) के साथ प्यार भरे संचार का प्रदर्शन नहीं कर रहे हैं, तो सुलह के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें।

1. इसे प्रभु के सामने अंगीकार करें और उनसे प्रेम का संचार न करने के लिए उन्हें क्षमा करने के लिए कहें।

   यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। (1 यूहन्ना1:9)

2. अपने जीवनसाथी के लिए अपने दिल को नए सिरे से प्रेम से भरने के लिए परमेश्वर से कहें।

   "और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है।" (रोमियों 5:5)

3. अपने जीवनसाथी के पास जाएं और एक कबूलनामा करें।

   उदाहरण के लिए, "मुझे पता है कि मैं आपको सुनकर अपना प्यार नहीं दिखा रहा हूं। मैं बेसब्र रहा हूं, वास्तव में यह सुनने के बजाय कि तुम क्या कहना चाहते हो, अन्य बातों के बारे में सोच रहा हूँ। कृपया मुझे क्षमा कर दो। मैं तुमसे प्रेम करता हूं, और मैं तुम्हारा पति / पत्नी बनकर बहुत खुश हूं।

4. अपने जीवनसाथी के साथ प्रार्थना करें।

ज़िम्मेदारी

इन क्षेत्रों को बदलने और परमेश्वर की इच्छानुसार जीवनसाथी बनने की शक्ति के लिए प्रभु की खोज करने के लिए ज़िम्मेदारी की प्रार्थना लिखें। फिर, अपने जीवनसाथी के साथ प्रार्थना करें और साथ में परमेश्वर से इतने लंबे समय से चली आ रही अधर्मी और पापी आदतों को तोड़ने के लिए उसकी शक्ति मांगें।

अपेंडिक्स जी:

चक्र को तोड़ना

यह अभ्यास आपको उन क्षेत्रों का सामना करने में मदद करेगा जिन्हें बदलने की आवश्यकता है और पापपूर्ण व्यवहार के चक्र को तोड़ने में मदद करेगा। परमेश्वर की कृपा कभी कम नहीं होती । समस्या हमारी इच्छा है।

चरण 1

हर रात, प्रभु के साथ अकेले में कुछ समय बिताएं। उससे अपने दिल को नरम करने के लिए कहें और उस दिन के दौरान अपने जीवनसाथी के साथ चर्चा, बहस, या स्थितियों के दौरान आप क्या अलग कर सकते थे, इसके बारे में आपसे बात करें। अपने निष्कर्षों को दिए गए स्थान में या जर्नल में लिखें।

अपने आप को परखो कि विश्वास में हो कि नहीं। अपने आप को जाँचो। क्या तुम अपने विषय में यह नहीं जानते कि यीशु मसीह तुम में है? नहीं तो तुम जाँच में निकम्मे निकले हो। (2 कुरिंथियों 13:5)

प्रतिबिम्ब

क्या ऐसा कुछ था जो मैं कह या कर सकता था जो परमेश्वर की महिमा करता या किसी स्थिति को बहस में बदलने से रोकता?

चरण 2

जब आप इन आयतों को पढ़ते हैं, तो परमेश्वर से सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों को प्रकट करने के लिए कहें।

प्रेम धीरजवन्त है, और कृपालु है; प्रेम डाह नहीं करता; प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता, और फूलता नहीं, वह अनरीति नहीं चलता, वह अपनी भलाई नहीं चाहता, झुँझलाता नहीं, बुरा नहीं मानता। कुकर्म से आनन्दित नहीं होता, परन्तु सत्य से आनन्दित होता है। वह सब बातें सह लेता है, सब बातों की प्रतीति करता है, सब बातों की आशा रखता है, सब बातों में धीरज धरता है। प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियाँ हों, तो समाप्त हो जाएँगी; भाषाएँ हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा। (1 कुरिंथियों 13:4–8)

प्रतिबिम्ब 1: क्या आप अधीर थे? लंबे समय तक पीड़ित रहने का अर्थ है कि आपने आत्मा के फल का प्रयोग किया।

पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास (गलातियों 5:22)

क्या आपकी देह ने कथित ग़लती के लिए न्याय ढूँढ़ने की कोशिश की या अपना रास्ता पाने के लिए युद्ध किया? व्याख्या करे ।

प्रतिबिम्ब 2: क्या आप दयाहीन थे? दयालुता के विपरीत दयाहीनता है।

भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे से स्नेह रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो। (रोमियों 12:10)

क्या आपने अपने जीवनसाथी को उकसाया? क्या आपको गुस्सा आया, अपनी आवाज उठाई, या आहत करने वाली बातें कही? क्या आपने न्याय किया या अनदेखा किया, या आप अपने जीवनसाथी के प्रति नाराज हैं? व्याख्या करे ।

प्रतिबिम्ब 3: क्या आपके जीवनसाथी के प्रति प्रतिक्रिया के पीछे ईर्ष्या का कारण था?

जैसा दिन को शोभा देता है, वैसा ही हम सीधी चाल चलें, न कि लीला–क्रीड़ा और पियक्कड़पन में, न व्यभिचार और लुचपन में, और न झगड़े और डाह में। वरन् प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो, और शरीर की अभिलाषाओं को पूरा करने का उपाय न करो। (रोमियों 13:13-14)

प्रश्न का उत्तर दें।

प्रतिबिम्ब 4: क्या आप घमंडी या अहंकारी थे ? क्या आपने अपने जीवनसाथी को नीचा दिखाया या उन्हें महत्वहीन महसूस कराया?

"इसी प्रकार हे नवयुवको, तुम भी प्राचीनों के अधीन रहो, वरन् तुम सब के सब एक दूसरे की सेवा के लिये दीनता से कमर बाँधे रहो, क्योंकि "परमेश्वर अभिमानियों का विरोध करता है, परन्तु दीनों पर अनुग्रह करता है।" (1 पतरस 5:5)

प्रतिबिम्ब 5: क्या आप असभ्य थे या आपने अशोभनीय कार्य किया?

कोई गन्दी बात तुम्हारे मुँह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उससे सुननेवालों पर अनुग्रह हो। (इफिसियों 4:29)

क्या आपने अपने जीवनसाथी को शर्मिंदा किया या किसी और के सामने उनके बारे में कुछ बुरा कहा? क्या आप असभ्य थे, या आपने कुछ ऐसा किया जो उन्होंने आपको नहीं करने के लिए कहा है? समझायें।

प्रतिबिम्ब 6: क्या आप केवल अपने बारे में सोच रहे थे और अपने जीवनसाथी के दृष्टिकोण पर विचार नहीं कर रहे थे? क्या आपने रक्षात्मक रूप से अपनी स्थिति को सही ठहराया या अपने कार्यों का बहाना किया?

विरोध या झूठी बड़ाई के लिये कुछ न करो, पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। (फिलिप्पियों 2:3)

प्रतिबिम्ब 7: क्या आप इस स्थिति के होने से पहले मिनटों, घंटों या दिनों के लिए अपने पति या पत्नी के प्रति बुरे विचारों को पाल रहे थे? परमेश् वर ने हमें बुरे विचारों को धारण करने के लिए नहीं, बल्कि क्षमा करने के लिए कहा है।

इसलिये हम कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं । (2 कुरिन्थियों 10:5)

आपको अपने मन को अपने जीवनसाथी के प्रति बुरे या बुरे विचारों से भस्म होने देने की जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता है। परमेश्वर हमें जानता है। वह हमारे अतीत, वर्तमान और भविष्य के पापों को देखता है, फिर भी हमारे प्रति उसके विचार केवल अच्छे हैं (भजन संहिता 139:17-8)। हम अपने जीवनसाथी के प्रति बुरे विचारों को कैसे सही ठहरा सकते हैं? यदि यह आपकी समस्या है, तो आपको किन विचारों और व्यवहारों को त्यागना चाहिए, कबूल करना चाहिए और प्रभु के साथ छोड़ देना चाहिए? अपनी कड़वाहट या नाराजगी के कारण विशिष्ट क्षेत्रों या उत्पत्ति की पहचान करें।

उत्तर दें और एक प्रार्थना जोड़ें जिसमें परमेश्वर से आपके दिल को बदलने के लिए कहें।

प्रतिबिम्ब 8: क्या आप अपनी शादी के प्रति निराशा और आशाहीनता को खुद पर हावी होने दे रहे हैं?

और आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे मन में डाला गया है। (रोमियों 5:5)

क्योंकि यहोवा की यह वाणी है, कि जो कल्पनाएँ मैं तुम्हारे विषय करता हूँ उन्हें मैं जानता हूँ, वे हानि की नहीं, वरन् कुशल ही की हैं, और अन्त में तुम्हारी आशा पूरी करूँगा (यिर्मयाह 29:11)

क्या आपने परमेश्वर और आपके लिए मध्यस्थता करने की उसकी सर्वशक्तिमान शक्ति पर संदेह किया है? प्रेम "सब बातों की आशा करता है," सभी बातों पर सन्देह नहीं करता। यदि आप परमेश्वर पर संदेह करते हैं, अतीत या वर्तमान समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं और प्रेम करने वाले सर्वशक्तिमान परमेश्वर पर नहीं, तो आप निराश हो जाएंगे और अपने जीवनसाथी के साथ ऐसा करेंगे। किस तरह से आप अपने विवाह के संबंध में परमेश्वर पर संदेह करते रहे हैं?

परमेश्वर की सामर्थ्य और अच्छाई पर संदेह करने की बात को समझाएं और स्वीकार करें। अपनी शादी में उस पर भरोसा करने के लिए मदद माँगते हुए एक प्रार्थना लिखें।

चरण 3
प्रार्थना करें और परमेश्वर से क्षमा मांगें।

चरण 4
परमेश्वर से विनम्रता और शक्ति के लिए पूछें, और उनसे अपने जीवनसाथी के साथ बैठने, अपनी गलतियों को स्वीकार करने और क्षमा मांगने के लिए सबसे अच्छा समय प्रदान करने के लिए कहें। एक साथ प्रार्थना करें, समय के साथ अभ्यास की गई अधर्मी और पापी आदतों को तोड़ने के लिए प्रभु से उनकी शक्ति के लिए प्रार्थना करें।

पति और पत्नी के रूप में एक-दूसरे की साथी की ज़रूरतों को पूरा करने के तरीके को समझने में समय लगता है और प्रेमपूर्ण संचार होता है। सीखने और बदलने की इच्छा रखने वाले इच्छुक हृदय की भी आवश्यकता होती है।

क्या आप सहमत हैं? ----हाँ --- नही

क्या आपने सीखना समाप्त कर लिया है? __हाँ__नही

बदलने के लिए अपनी प्रार्थना और इन बुरी आदतों को तोड़ने के लिए प्रतिदिन परमेश्वर की कृपा के लिए प्रार्थना करने की अपनी प्रतिबद्धता को लिखें।

अपेंडिक्स पी

विश्वास और क्षमा

भजन संहिता 139 सिखाता है कि परमेश्वर हम में से प्रत्येक को गहराई से जानता है, कि हमारे सभी कार्यों और विचारों को हमें जानने से पहले ही वह जानता है। इससे पहले कि आप परमेश्वर के सामने अपना हृदय खोलें, यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार करके, वह जानता था कि आप आएंगे। परमेश्वर नहीं चाहता कि कोई नाश हो; हालाँकि, स्वतंत्र इच्छा के अभ्यास के माध्यम से, वह प्रत्येक व्यक्ति को उसे अस्वीकार करने की स्वतंत्रता देता है।

अपने अतीत और परीक्षाओं के साथ परमेश्वर पर भरोसा करना

पृथ्वी के सब रहनेवाले उसके सामने तुच्छ गिने जाते हैं, और वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के रहनेवालों के बीच अपनी ही इच्छा के अनुसार काम करता है; और कोई उसको रोककर उस से नहीं कह सकता है, "तू ने यह क्या किया है?" (दानिय्येल 4:35)

हे यहोवा, तू ने मुझे जाँचकर जान लिया है। तू मेरा उठना बैठना जानता है; और मेरे विचारों को दूर ही से समझ लेता है।मेरे चलने और लेटने की तू भली–भाँति छानबीन करता है,और मेरे पूरे चालचलन का भेद जानता है। हे यहोवा, मेरे मुँह में ऐसी कोई बात नहीं जिसे तू पूरी रीति से न जानता हो। (भजन 139: 1-4)

तथ्य - फाडल

सार्वभौम- सर्वोच्च शक्ति, असीमित ज्ञान और पूर्ण अधिकार रखने वाला।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया, और उसने केवल एक ही प्रतिबंध दिया: भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल मत खाओ। लेकिन वे शैतान के बहकावे में आ गए और अनाज्ञाकारिता में उस पेड़ का फल खाना चुना। यह सारी मानवजाति पर पाप का श्राप ले आया। आदम में, परमेश्वर ने मानवजाति को अच्छाई चुनने की स्वतंत्रता दी, परन्तु वह बुराई की ओर मुड़ा। इसलिए वे सभी जो अब मसीह में विश्वास के द्वारा परमेश्वर की संतानों के रूप में पुनर्जन्म लेना चुनते हैं, अभी भी पतित संसार में रहते हैं और अपने चारों ओर की बुराई से प्रभावित हैं। यदि परमेश्वर अपने बच्चों को सभी परेशानियों और बुराई से बचाता है, तो लोग केवल एक आसान जीवन की गारंटी के लिए उसकी ओर मुड़ने के लिए प्रेरित होंगे। इसी तर्क ने अय्यूब के जीवन के विषय में परमेश्वर और शैतान के बीच स्वर्ग में ऐतिहासिक प्रदर्शन की शुरुआत की।

तब शैतान ने यहोवा को उत्तर दिया, "क्या अय्यूब परमेश्वर का भय बिना लाभ के मानता है? क्या तू ने उसकी, और उसके घर की, और जो कुछ उसका है उसके चारोंओर बाड़ा नहीं बान्धा? तूने उसके हाथों के काम पर आशीष दी है, और उसकी संपत्ति देश भर में बढ़ गई है। परन्तु अब अपना हाथ बढ़ाकर जो कुछ उसका है, उसे छू; वह निश्चय तेरे मुंह पर तेरी निन्दा करेगा।'' (अय्यूब 1:9-11 NASB)

परमेश्वर ने शैतान को अय्यूब की संपत्ति, उसके बच्चों, और अंत में उसके स्वास्थ्य के नुकसान के माध्यम से उसके विश्वास का परीक्षण करने की अनुमति दी। परमेश्वर एक प्रेमी पिता है और हमारे जीवन में बुराई नहीं लाता है; हालाँकि, अपने उद्देश्य के लिए और हमारे परम अच्छे के लिए, वह हमें परीक्षाओं से प्रभावित होने देता है। अय्यूब ने अपनी पीड़ा के दौरान परमेश्वर पर भरोसा करना जारी रखा, जिसके परिणामस्वरूप अंततः उसके निर्माता के साथ गहरा, अधिक घनिष्ठ संबंध और आशीष की पूर्ण पुनर्स्थापना हुई।

अय्यूब ने सवाल किया कि भगवान उसे पीड़ित क्यों होने दे रहे हैं। परमेश्वर ने अय्यूब 2:3 में अय्यूब को एक धर्मी पुरुष घोषित किया था, इसलिए उसने पूछा कि क्यों। कई अध्यायों के लिए, वह अपने परीक्षणों के कारण से परेशान रहा। परमेश्वर ने कभी सीधे उत्तर नहीं दिया परन्तु अय्यूब का ध्यान अपनी शक्ति और महिमा की ओर लगाया, जो सृष्टि में प्रदर्शित होता है। अय्यूब की खोज अंततः परमेश्वर की महानता की गहरी समझ के द्वारा पूरी हुई। अय्यूब की तरह, जब हम परीक्षाओं का अनुभव करते हैं, तो हम स्पष्टीकरण की तलाश करते हैं। और इसलिए यह हमारे विवाहों और परीक्षणों के साथ है जो इतने भारी लगते हैं। अय्यूब से हम जो कई सबक सीख सकते हैं उनमें से एक यह है कि गलत सवाल क्यों है। हमें इसके बजाय भगवान से क्या पूछना चाहिए।

आप मुझे क्या सिखाने की कोशिश कर रहे हैं?

दुख के इस मौसम में मेरे लिए आपकी क्या इच्छा है?

जब किसी की परीक्षा हो, तो वह यह न कहे कि मेरी परीक्षा परमेश्वर की ओर से होती है; क्योंकि न तो बुरी बातों से परमेश्वर की परीक्षा हो सकती है, और न वह किसी की परीक्षा आप करता है। 14परन्तु प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता है। (याकूब 1:13-14)

तब अय्यूब ने यहोवा को उत्तर दिया, "मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, और तेरी युक्तियों में से कोई रुक नहीं सकती। । मैं ने कानों से तेरा समाचार सुना था, परन्तु अब मेरी आँखें तुझे देखती हैं;" (अय्यूब 42:1-2, 5)

क्या आपके जीवन का कोई हिस्सा परमेश्वर की शक्ति, बुद्धि या अधिकार से परे है? क्यों या क्यों नहीं?

आपके जीवन में ऐसी कौन सी परिस्थिति थी जिसका परमेश्वर को पहले से पता नहीं था कि आप उसका सामना करेंगे?

"उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बने ।"(इफिसियों 1:11)

आपको निराशाओं, कठिनाइयों, कष्टों और परीक्षणों का जवाब कैसे देना चाहिए?

यदि परमेश्वर जानता था कि हमारे जन्म से पहले क्या होगा, तो यह इस प्रकार है कि, उसके पूर्वज्ञान के द्वारा, हम उसके अनुग्रह के द्वारा हमें दिए गए जीवन को जीने के लिए पूर्वनिर्धारित किए गए थे। परमेश्वर परीक्षणों या बुराई को हमें छूने से नहीं रोकता है, या हमारे बुरे विकल्पों को नहीं रोकता है, लेकिन वह उन लोगों के जीवन में अच्छाई के लिए काम करने का वादा करता है जो उसके प्रति प्रतिबद्ध हैं।

और हम जानते हैं कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं, परमेश्वर सब बातों को मिलकर भलाई ही के लिये करता है। उनके लिए जिन्हें उसने पहिले से जान लिया था, उसने अपने पुत्र की छवि के अनुरूप होने के लिए भी पूर्वनिर्धारित किया था। (रोमियों 8:28-29)

आप या तो उन माता-पिता के प्रति कड़वाहट का चयन कर सकते हैं जिन्होंने आपको निराश किया, एक जीवनसाथी जिसने आपको छोड़ दिया, दोस्तों जो आपको विफल कर दिया, या नशे में चालक जिसने किसी प्रियजन को मार डाला। या हम एक सर्वसत्ताधारी परमेश्वर में अपना विश्वास रख सकते हैं।

जब हम मसीह के पास आते हैं, तो हम अपने अनंत काल के लिए परमेश्वर पर भरोसा करते हैं। हमें अपने अतीत और वर्तमान परिस्थितियों में भी उस पर भरोसा करना चाहिए। मसीह हमारी परीक्षाओं में और परीक्षाओं में हमें सांत्वना और सामर्थ्य दे सकता है और बुरे में से भले को निकाल सकता है। यह केवल हमारे विश्वास और आज्ञाकारिता के माध्यम से ही है कि परमेश्वर हमें शांति दे सकता है और देगा और हमारे प्रभु यीशु मसीह के लिए स्तुति, सम्मान और महिमा लाएगा।

विवरण करें कि इन आयतों का क्या अर्थ है और उन्हें आपकी व्यक्तिगत परिस्थितियों में कैसे लागू किया जा सकता है।

इस कारण तुम मगन होते हो, यद्यपि अवश्य है कि अभी कुछ दिन के लिये नाना प्रकार की परीक्षाओं के कारण दु:ख में हो; 7और यह इसलिये है कि तुम्हारा परखा हुआ विश्वास, जो आग से ताए हुए नाशवान् सोने से भी कहीं अधिक बहुमूल्य है, यीशु मसीह के प्रगट होने पर प्रशंसा और महिमा और आदर का कारण ठहरे। (1 पतरस 1:6-7)

हमारे परीक्षण और क्लेश

परमेश्वर का वचन सिखाता है कि परीक्षण और क्लेश मसीही जीवन का हिस्सा हैं।

“मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कहीं हैं कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होता है, परन्तु ढाढ़स बाँधो, मैं ने संसार को जीत लिया है।” (यूहन्ना 16:33)

यीशु हमें बताते हैं कि हमें शांति मिल सकती है और उन्होंने दुनिया पर विजय पा ली है, लेकिन परीक्षणों के बीच हम पूछते हैं, "क्यों? परमेश्वर का उद्देश्य क्या है?” जिस तरह शुद्ध करने वाला कच्चे सोने को एक घड़िया में रखता है और मैल (अशुद्धता) को सतह पर लाने के लिए गर्मी का संचालन करता है, परमेश्वर अपने प्यारे बच्चों को हमारे उद्धारक, यीशु मसीह की छवि में शुद्ध होने और बदलने के लिए पीड़ित होने की घड़िया में जाने की अनुमति देते हैं।

वह रूपे को गलाने और शुद्ध करनेवाला बनेगा, और लेवी की सन्तान को शुद्ध और सोने रूपे के समान निर्मल करेगा, तब वे यहोवा की भेंट धर्म से चढ़ाएंगे। (मलाकी 3:3 NASB)

यदि हम स्वयं को परमेश्वर की भलाई और उद्देश्य के प्रति भरोसा करते हैं, तो हमारे हृदय यीशु मसीह के प्रेम, आशा और विश्वास से भर जाएंगे। दूसरे लोग यीशु मसीह की धार्मिकता को हम में कार्य करते हुए देखेंगे।

रोमियों 8:28-29 याद रखें? परमेश्वर यह नहीं कहते हैं कि कुछ चीजें मिलकर अच्छे के लिए काम करती हैं, लेकिन सभी चीजें। कुंजी विश्वास है। यदि हम परमेश्वर के वादों पर विश्वास करना चुनते हैं और अपने सभी परीक्षणों और क्लेशों में उस पर भरोसा करते हैं, तो हम विजयी होंगे, और परमेश्वर की महिमा होगी। इस परिच्छेद में, "उनके लिए जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं" उन लोगों को संदर्भित करता है जिन्होंने यीशु को प्रभु और उद्धारकर्ता के रूप में स्वीकार किया है, जिसमें यह समझ शामिल है कि इस जीवन में परमेश्वर का उद्देश्य हमें पाप की शक्ति से छुड़ाना है, जो एक ऐसा बनने का अनुवाद करता है बुराई पर धार्मिकता चुनने में सक्षम, परमेश्वर की महिमा।

परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो मसीह में सदा हम को जय के उत्सव में लिये फिरता है, और अपने ज्ञान की सुगन्ध हमारे द्वारा हर जगह फैलाता है। (2 कुरिन्थियों 2:14)

क्या आप अपने जीवन में परीक्षाओं और चुनौतियों के लिए परमेश्वर पर भरोसा करने को तैयार हैं? ___ हाँ____ नहीं

क्या आप इन परीक्षणों के माध्यम से परमेश्वर को आपके जीवन को बदलने की अनुमति देने के इच्छुक हैं? __ हाँ __नहीं

क्या आप परमेश्वर पर भरोसा करने के इच्छुक हैं जब आप अपने जीवन में इन चोटों और परीक्षणों के माध्यम से कार्य करते हैं? ____हाँ____नही

ऐसा समय आता है, यीशु कहते हैं, जब परमेश्वर आप से अन्धकार नहीं हटा सकता, परन्तु उस पर भरोसा रखते रहो। परमेश्वर एक निर्दयी मित्र के रूप में प्रकट होगा, परन्तु वह नहीं है; वह एक अप्राकृतिक पिता की तरह दिखाई देगा, लेकिन वह नहीं है; वह एक अन्यायी न्यायाधीश के रूप में प्रकट होगा, परन्तु वह नहीं है। सभी चीजों के पीछे परमेश्वर के मन की धारणा को मजबूत और विकसित रखें। किसी विशेष में कुछ भी तब तक नहीं होता जब तक कि इसके पीछे परमेश्वर की इच्छा न हो, इसलिए आप उस पर पूर्ण विश्वास कर सकते हैं। -ओस्वाल्ड चेम्बर्स, माई यूटमोस्ट फॉर हिज़ हाइएस्ट

क्षमा न करने की कीमत

जब कर्ज माफ किया जाता है, तो भुगतान का अधिकार दिया जाता है। शब्द क्षमा का शाब्दिक अर्थ है "देना।" यदि कोई मुझे चोट पहुँचाता है और मैं उन्हें क्षमा कर देता हूँ, तो मैं क्रोधित और अप्रसन्न रहने की स्वतंत्रता देता हूँ। यह कई गढ़ों को तोड़ता है जो भावनात्मक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं को जन्म देते हैं। किसी को क्षमा करने का अर्थ है अपने दुखों को परमेश्वर को देना, उसे हमसे दूर करने देना। इस तरह हम अपने मन में आने वाले किसी भी द्वेषपूर्ण विचार को दूर कर देते हैं और प्रतिशोध के कार्यों को समाप्त कर देते हैं।

जैसे परमेश्वर हमें क्षमा करता है, वैसे ही हम अपराध के लिए क्षमा देते हैं। परमेश्वर आज्ञा देता है कि हम दूसरों को वैसे ही क्षमा करें जैसे उसने हमें क्षमा किया है। क्षमा शब्द लैटिन से लिया गया है, पेरडोनारे, जिसका अर्थ है "स्वतंत्र रूप से अनुदान देना।" सच्ची क्षमा अयोग्य, अनुपयुक्त और मुक्त है। यह तय करने की हमारी जगह नहीं है कि क्या उचित या अनुकूल है - हमें क्षमा करने के लिए कहा जाता है। पवित्रशास्त्र में, भूलने का अर्थ है "किसी की शक्ति से जाने देना।"

जब हम क्षमा देने से इंकार करते हैं, तो कीमत चुकानी पड़ती है। जब हम मानते हैं कि किसी अन्य व्यक्ति ने हमारे साथ गलत किया है, तो क्षमा न करना, अपराध को छोड़ने के लिए अनिच्छुक होना, एक नकारात्मक भावनात्मक स्थिति का परिणाम है। सबसे आम नाराजगी है, जिसका अर्थ है "फिर से महसूस करना।" आक्रोश पिछले दुखों से चिपक जाता है, उन्हें बार-बार राहत देता है। आक्रोश, पपड़ी उठाने की तरह, हमारे भावनात्मक घावों को भरने से रोकता है।

"देखो कि कोई परमेश्वर के अनुग्रह से वंचित न रहे; ऐसा न हो कि कड़ुवाहट की कोई जड़ फूट निकले, और उसके कारण बहुतेरे अशुद्ध हो जाएं।" (इब्रानियों 12:15 NASB)

कड़वाहट एक गहरी जड़ की तरह है जो मानव हृदय में पकड़ लेती है, जो फिर बढ़ती है और फल पैदा करती है। हालांकि, दूसरों का पोषण करने के बजाय, यह कड़वा फल हमें और दूसरों को अशुद्ध करता है।

अधिकांश लोग आसानी से क्षमा, असंतोष या कड़वाहट को आश्रय देने के लिए स्वीकार नहीं करते हैं क्योंकि वे केवल चोट लगने के बाद इसे तार्किक भावनात्मक प्रतिक्रिया के रूप में पहचानते हैं। वे अपनी स्थिति को उचित मानते हैं और दूसरों को उनकी शिकायतों को सुनने या उनके साथ सहानुभूति रखने की तलाश करते हैं। इफिसियों ने सिखाया है कि किसी व्यक्ति के जीवन में निर्विवाद सबूत होंगे कि असंतोष का कड़वा पेड़ उनके दिल के भीतर बढ़ रहा है।

सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध और कलह और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। (इफिसियों 4:31 NASB)

क्या इनमें से कोई भी आपके जीवन में सामान्य है?

- अभिमान
- आत्म-धार्मिकता
- आत्म-दया
- भावनात्मक गड़बड़ी
- चिंता, तनाव या दबाव
- स्वास्थ्य समस्याएं
- खाने में दिक्कत
- आत्मविश्वास की अस्वस्थ भावना
- रिश्तों में विश्वास की कमी
- विवाह में आत्मीयता की कमी
- यौन रोग
- न्याय करना या दूसरों की आलोचना
- अति संवेदनशील और आसानी से नाराज
- शांति या खुशी की अनुपस्थिति
- यीशु से दूर महसूस करना
- पति के रूप में अगुवाई करने से डरते हैं
- एक पत्नी के रूप में पालन करने से डरते हैं

तथ्य - फ़ाइल

क्रोध—एक मजबूत, प्रतिशोधी क्रोध या क्रोध का प्रकोप, प्रतिशोध की मांग करना

क्रोध- मन की एक अवस्था जो झल्लाहट और हताशा के साथ जीवन की चुनौतियों पर प्रतिक्रिया करती है।

बुराई बोलना-निर्दयी शब्द, किसी के खिलाफ मौखिक दुर्व्यवहार, शोर, बदनामी, बुरी खबरों से किसी की प्रतिष्ठा को चोट पहुंचाना, पीठ थपथपाना, अपमान और मानहानि।

द्वेष-घृणित भावनाओं को हम अपने दिल में पोषित करते हैं। किसी अन्य को पीड़ित देखने या उस व्यक्ति से खुद को अलग करने की इच्छा, सुलह की दिशा में काम नहीं करना चाहते

क्षमा क्यों करें?

क्षमा न करने से होने वाली भावनात्मक और सामाजिक तबाही के साथ-साथ हम क्षमा के कर्जदार हैं।

परमेश्वर इसकी आज्ञा देता है।

परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता वैकल्पिक नहीं है। यह तय करना कि हम उसकी आज्ञाओं का पालन कब करेंगे और नहीं करेंगे, एक निष्फल, अप्रभावी और आध्यात्मिक रूप से बंजर जीवन की ओर ले जाता है।

वरन् अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो, और फिर पाने की आशा न रखकर उधार दो; और तुम्हारे लिये बड़ा फल होगा, और तुम परमप्रधान के सन्तान ठहरोगे, क्योंकि वह उन पर जो धन्यवाद नहीं करते और बुरों पर भी कृपालु है। जैसा तुम्हारा पिता दयावन्त है, वैसे ही तुम भी दयावन्त बनो। (लूका 6:35-36)

और जब कभी तुम खड़े हुए प्रार्थना करते हो तो यदि तुम्हारे मन में किसी के प्रति कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो : इसलिये कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे। (मरकुस 11:25)

क्षमा करने में, हम यीशु की छवि धारण करते हैं।

मसीहीयों के रूप में, हमें मसीह के नाम को एक खोई हुई दुनिया में ले जाने के लिए बुलाया जाता है। मसीही शब्द का अर्थ है "छोटा मसीह।" मसीह ने क्षमा का प्रदर्शन किया, इस पृथ्वी पर आया, दोषियों के लिए क्षमा स्थापित करने के लिए मरा, और क्षमा की घोषणा करने के लिए कलीसिया को आदेश दिया। उसकी छवि को धारण करने के लिए हमें दूसरों को क्षमा करने के लिए तैयार होना चाहिए क्योंकि वह हमें क्षमा करता है।

तब यीशु ने कहा, "हे पिता, इन्हें क्षमा कर, क्योंकि ये जानते नहीं कि क्या कर रहे हैं।"" (लूका 23:34)

"जो कोई यह कहता है कि मैं उसमें बना रहता हूँ, उसे चाहिए कि आप भी वैसा ही चले जैसा वह चलता था।"
(1 यूहन्ना 2:6)

क्षमा पीड़ा, दोष और गढ़ों के चक्र को तोड़ देती है।

क्षमा एक आहत व्यक्ति के लिए चंगाई लाती है और कड़वाहट के जहर के लिए एक मारक के रूप में कार्य करती है। हालाँकि, यह दोष और निष्पक्षता के सभी मुद्दों को संबोधित नहीं करता है लेकिन अक्सर उन पर पूरी तरह से ध्यान नहीं देता है। चोट और आक्रोश को परमेश्वर के पास छोड़ दिया जाता है, जबकि आज्ञाकारी रूप से क्षमा करने से स्वतंत्रता मिलती है और एक रिश्ते को शुरू करने में सक्षम बनाता है।

यह सत्य उत्पत्ति 37-45 में पाए जाने वाले यूसुफ के जीवन में प्रदर्शित होता है। अपने भाइयों द्वारा धोखा दिया गया और गुलामी में बेच दिया गया, उसने अपने जीवन में कड़वाहट की जड़ को पकड़ने से इनकार कर दिया। वर्षों के अलगाव के बाद, जब परिवार फिर से मिला, तो यूसुफ ने उस चंगाई के कार्य की गवाही दी जिसे परमेश्वर ने उसके जीवन में क्षमा के माध्यम से किया था, जो उसके पुत्रों के नाम से प्रदर्शित हुआ था।

"यूसुफ ने अपने जेठे का नाम यह कहके मनश्शे रखा, कि 'परमेश्वर ने मुझ से मेरा सारा क्लेश, और मेरे पिता का सारा घराना भुला दिया है।' दूसरे का नाम उसने यह कहकर एप्रैम रखा, कि 'मुझे दु:ख भोगने के देश में परमेश्वर ने फलवन्त किया है।'" (उत्पत्ति 41:51-52 NASB)

इस पाठ में, भूलने का मतलब याद करना बंद करना नहीं है। इसका अर्थ है "जाने देना," या दुखों को वर्तमान जीवन पर नियंत्रण करने देना बंद करना। यूसुफ के फलदायी होने का सीधा संबंध परमेश्वर की संप्रभुता में उसके भरोसे और दूसरों को क्षमा करने से था। अपनी चोट को बार-बार (नाराजगी) महसूस करके गुणा करने के बजाय, यूसुफ ने अपने जीवन में सभी घटनाओं के पर्यवेक्षक के रूप में परमेश्वर पर भरोसा करना चुना।

क्षमा न करना हमें अतीत में कैद कर देता है और एक फलदायी जीवन की सभी संभावनाओं को बंद कर देता है।

मिस्र में यूसुफ के वर्षों के दौरान, उसने परमेश्वर को एक ऐसे हृदय को चंगा करने दिया जो उसके अपने भाइयों द्वारा तोड़ा गया था। बाद में, अवसर दिए जाने पर, उसने अपने भाइयों को प्रेम, क्षमा, और अनुग्रह के कार्यों के द्वारा अपनी चंगाई का प्रदर्शन किया।

अब तुम लोग मत पछताओ, और तुम ने जो मुझे यहाँ बेच डाला, इससे उदास मत हो; क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे प्राणों को बचाने के लिये मुझे तुम्हारे आगे भेज दिया है। . . और बड़े छुटकारे के द्वारा तुझे जीवित रखे।. . . वह अपने सब भाइयों को भी चूमकर रोया, और इसके पश्चात् उसके भाई उससे बातें करने लगे। (उत्पत्ति 45:5, 6, 15)

कोई दोषारोपण नहीं था और न ही कोई स्पष्टीकरण मांगा गया था, केवल दया और क्षमा की आवाज थी। यूसुफ और उसके भाइयों के फिर से मिलने और एक नया रिश्ता शुरू करने का रास्ता साफ हो गया।

क्षमा अपराधी में अपराध की जकड़न को ढीला कर देती है।

आने वाले युगों में वह मसीह यीशु में हम पर अपनी कृपा के द्वारा अपने अनुग्रह का अपार धन दिखा सकता है। (इफिसियों 2:7 NASB)

क्षमा सभी को शामिल करने के लिए स्वतंत्रता लाती है। परमेश्वर ने यूसुफ को स्वतंत्र कर दिया, परन्तु यदि यूसुफ ने उन्हें क्षमा न किया होता, तो उसके भाइयों ने उनके शोक को कब्र में पहुंचा दिया होता। हम क्षमा करते हैं क्योंकि परमेश्वर हमें मसीह में क्षमा करता है। वही क्षमा, नाहक और अनर्जित, वह है जो हम दूसरों के प्रति एहसानमंद हैं। यह दमनकारी बोझ से छुटकारा दिलाता है जिसे हम अपराध बोध के रूप में जानते हैं।

यदि यीशु ने पापियों के प्रति दया और क्षमा नहीं की होती, तो हम सब हमेशा अपराध बोध की जकड़ में रहते। उसने हमारी ओर पहला कदम उठाया, जिससे हमारे लिए उसके साथ मेल मिलाप करना संभव हो गया।

मेल-मिलाप

मेल-मिलाप से शत्रुता का नाश होता है, झगड़े का समाधान होता है। इसका तात्पर्य यह है कि जिन पक्षों का समाधान किया जा रहा है वे पूर्व में एक दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण या अलग थे। कोई भी सफल मेल-मिलाप क्रोध और उथल-पुथल के बजाय दया और शांति के साथ होगा।

तथ्य - फ़ाडल

सामंजस्य स्थापित करना—सही संबंध को पुनर्स्थापित करना, मतभेदों को सुलझाना या सुलझाना

"सब प्रकार की कड़वाहट और प्रकोप और क्रोध और कलह और निन्दा सब बैरभाव समेत तुम से दूर की जाए। एक दूसरे पर कृपाल, और करूणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।" (इफिसियों 4:31-32 NASB)

हमारे जीवन में परिवार के सदस्यों और अन्य विश्वासियों के लिए मेल-मिलाप की तलाश की जानी है। हमारी तत्काल पारिवारिक सेटिंग के बाहर हमारे सभी रिश्तों में, सम्मानपूर्ण सीमाएं और स्वस्थ संबंध बनाए रखना महत्वपूर्ण है।

हालाँकि कुछ मामले या परिस्थितियाँ हैं जहाँ मेल-मिलाप आवश्यक नहीं है, संभव है, या यहाँ तक कि आवश्यक भी है, जैसे कि भावनात्मक या शारीरिक रूप से अपमानजनक माता-पिता या पूर्व-पति या एक यादृच्छिक व्यक्ति जो आपको या किसी प्रियजन को चोट पहुँचाता है (एक बलात्कारी, एक शराबी जो चोट पहुँचाता है) या किसी प्रियजन को मार डाला, एक पुराने शिक्षक या कोच जिसने आपको मौखिक रूप से चोट पहुंचाई, आदि)।

पवित्रशास्त्र हमें सभी कड़वाहट को दूर करने, दयालु, कोमल हृदय और क्षमा करने का निर्देश देता है।

हम कड़वाहट को कैसे दूर कर सकते हैं?

हम किसी ऐसे व्यक्ति से कैसे मेल मिलाप कर सकते हैं जिसे हमने नाराज किया है?

हम दूसरों को जो चोट पहुँचाते हैं उसकी मरम्मत कैसे करें?

हम किसी ऐसे व्यक्ति को कैसे क्षमा कर सकते हैं जिसने हमें नाराज किया है?

किसी गलत काम के बारे में हम अपनी भावनाओं को कैसे बदल सकते हैं?

यदि आपको क्षमा करने की आवश्यकता है

इच्छा के एक कार्य के रूप में, आपको चार चीजें करनी चाहिए।

सबसे पहले, अपने पापों को परमेश्वर के सामने स्वीकार करें, उससे आपको क्षमा करने के लिए कहें, और उसके पवित्र आत्मा से आपके हृदय को उसके प्रेम से भरने के लिए कहें।

क्या ही धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, और जिसका पाप ढाँपा गया हो।
जब मैं चुप रहा तब दिन भर कराहते कराहते मेरी हड्डियाँ पिघल गईं।
क्योंकि रात दिन मैं तेरे हाथ के नीचे दबा रहा; और मेरी तरावट धूप काल की सी झुर्राहट बनती गई। (सेला)
जब मैं ने अपना पाप तुझ पर प्रगट किया और अपना अधर्म न छिपाया, और कहा, "मैं यहोवा के सामने अपने अपराधों को मान लूँगा," तब तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया। (भजन संहिता 32:1, 3-5)

यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है। (1 यूहन्ना 1:9)

उदयाचल अस्ताचल से जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हम से उतनी ही दूर कर दिया है।
(भजन संहिता 103:12)

अभी एक क्षण लें और परमेश्वर को पुकारें। उसे क्षमा करने के लिए कहें, आपको उसकी पवित्र आत्मा से भरने के लिए, और आज्ञा मानने के लिए आपको मजबूत करे।

परमेश्वर ही पापों को क्षमा करते हैं। वह क्षमा करता है और वह भूल जाता है। विश्वास के द्वारा, परमेश्वर की पूर्ण क्षमा और शुद्धिकरण को स्वीकार करें।

क्षमा कोई भावना नहीं है। . . . क्षमा इच्छा का एक कार्य है, और इच्छा हृदय के तापमान की परवाह किए बिना कार्य कर सकती है। —कोरी टेन बूम

दूसरा, यदि संभव हो, तो उनके पास जाएं जिनके साथ आपने गलत किया है, विनम्रतापूर्वक स्वीकारोक्ति करें और उनकी क्षमा मांगें।

इसलिये यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरे लिये कुछ विरोध है, 24तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा। (मत्ती 5:23-24)

मत्ती 5:23-24 का पालन करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता को लिखें।

क्षमा के लिए क्या कहा जाना चाहिए, इसके नाम और संक्षिप्त विवरण लिखें।

अंग्रेजी भाषा के छह सबसे शक्तिशाली शब्द हैं, मैं गलत था। कृपया मुझे माफ़ करें।

विकर्षणों या अन्य बाधाओं को आज्ञाकारिता के इस कार्य में विलंब न करने दें। एक भरोसेमंद मसीही मित्र के साथ अपने निर्णय को साझा करें, उन्हें आपके साथ प्रार्थना करने के लिए कहें और इस प्रतिबद्धता का पालन करने के लिए आपको जवाबदेह ठहराएं। आमने-सामने क्षमा मांगना सबसे अच्छा है। हालाँकि, लॉजिस्टिक्स या संभावित टकराव के कारण, आपको फोन पर या लिखित रूप से संवाद करने की आवश्यकता हो सकती है। जिस व्यक्ति के साथ आपने अन्याय किया है यदि वह मर गया है, तो बस अपने अंगीकार के साथ परमेश्वर के पास जाएं।

तीसरा, प्रतिदिन प्रभु के साथ उनके वचन और प्रार्थना में समय बिताएं।

क्षमा न मांगने या न देने के कई नकारात्मक परिणामों में से एक परमेश्वर के साथ एक बाधित संबंध है। प्रभु की स्तुति करो कि वह हमें कभी नहीं छोड़ते या हमें त्यागते नहीं हैं, लेकिन हमारे अपने हृदय ठंडे और दूर हो सकते हैं, इस प्रकार उनके साथ हमारी अंतरंगता को प्रभावित कर सकते हैं। परमेश्वर ने इस परिणाम की रचना हमें क्षमा करने के लिए प्रेरित करने के लिए की है।

"इसलिये पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएँ भी तुम्हें मिल जाएँगी।" (मत्ती 6:33)

परमेश्वर के वचन को पढ़कर और प्रार्थना और ध्यान में प्रतिदिन परमेश्वर के साथ समय बिताने के अपने निर्णय को लिखें।

चौथा, क्रूस के अर्थ और यीशु द्वारा आपके पापों के लिए दिए गए बलिदान पर विचार करें।

"क्योंकि हम भी पहले निर्बुद्धि, और आज्ञा न माननेवाले, और भ्रम में पड़े हुए और विभिन्न प्रकार की अभिलाषाओं और सुखविलास के दासत्व में थे, और बैरभाव, और डाह करने में जीवन व्यतीत करते थे, और घृणित थे, और एक दूसरे से बैर रखते थे। 4पर जब हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर की कृपा और मनुष्यों पर उसका प्रेम प्रगट हुआ, 5तो उसने हमारा उद्धार किया; और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार नए जन्म के स्नान और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ।" (तीतुस 3:3-5)

यीशु ने आपके लिए जो कुछ भी किया है, उसके लिए यीशु को धन्यवाद देने के लिए अभी कुछ समय निकालें, आपके सभी पापों के लिए आपको क्षमा करने के लिए, आपको अपनी छवि में बदलने की उनकी सिद्ध योजना के लिए, और उनकी पवित्र आत्मा के उपहार के लिए।

यदि आपको क्षमा करने की आवश्यकता है

इच्छा के कार्य के रूप में, आपको दो काम करने होंगे।

सबसे पहले, प्रार्थना करें और परमेश्वर से आज्ञा मानने और क्षमा करने की शक्ति मांगें।

यीशु ने उनको उत्तर दिया, "मैं तुम से सच कहता हूँ, यदि तुम विश्वास रखो और संदेह न करो, तो न केवल यह करोगे जो इस अंजीर के पेड़ से किया गया है, परन्तु यदि इस पहाड़ से भी कहोगे, 'उखड़ जा, और समुद्र में जा पड़', तो यह हो जाएगा।" (मत्ती 21:21)

परमेश्वर ने हमें पहाड़ों को हिलाने की ताकत देने का वादा किया। यह आपका माउंट एवरेस्ट हो सकता है!

जब भी मैं खुद को परमेश्वर के सामने देखता हूं और महसूस करता हूं कि मेरे धन्य परमेश्वर ने मेरे लिए कलवरी में क्या किया है, तो मैं किसी को भी कुछ भी माफ करने के लिए तैयार हूं, मैं इसे रोक नहीं सकता। मैं इसे रोकना भी नहीं चाहता। -डॉ। मार्टिन लॉयड-जोन्स

हम जानते हैं कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि हम दूसरों को क्षमा करें। आश्वस्त रहें कि जब आप इस शक्ति के लिए पूछेंगे, तो यह दी जाएगी।

दूसरा, अपनी क्षमा को उस व्यक्ति या व्यक्तियों से संप्रेषित करें।

और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ माँगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। (1 यूहन्ना 5:14)

“इसलिये हम उन बातों में लगे रहें जिनसे मेलमिलाप और एक दूसरे का सुधार हो।” (रोमियों 14:19)

मेल-मिलाप की कामना

मत्ती में प्रभु यीशु से एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछा गया था। “गुरु, व्यवस्था में सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है?” (मत्ती 22:36)। उसकी प्रतिक्रिया ने एक आवश्यक सत्य प्रकट किया: "यीशु ने उससे कहा, 'तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख।" यह प्रथम एवं बेहतरीन नियम है। और दूसरा उसके समान है: “तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।” इन्हीं दो आज्ञाओं पर सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।'" (मत्ती 22:37-40)। यीशु ने स्वयं कहा कि दूसरों के लिए हमारा प्रेम उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उसके लिए हमारा प्रेम।

हम चाहते हैं कि परमेश्वर हमें क्षमा करें, और हम नियमित रूप से इसके लिए प्रार्थना करते हैं और इस पर निर्भर रहते हैं। परमेश्वर हमें अपना प्रेम दिखाता है, और हमें पहले उससे प्रेम करके और फिर दूसरों से प्रेम करके प्रत्युत्तर देना है। यह वचन किसी ऐसे प्रेम को प्रोत्साहित नहीं कर रहा है जो हमें परमेश्वर की इच्छाओं या हमारे लिए इच्छा के साथ संघर्ष में डाल दे, लेकिन यह कहता है कि हम दूसरों के प्रति जो भी प्रेम दिखाते हैं वह उसके प्रति हमारी आज्ञाकारिता के दायरे में होना चाहिए। हमें अपनी स्वयं की इच्छाओं या दूसरों को संतुष्ट करने की इच्छा को परमेश्वर के प्रति अपनी आज्ञाकारिता से ऊपर नहीं रखना चाहिए।

परन्तु मैं तुम से यह कहता हूँ, कि जो कोई अपने भाई पर क्रोध करेगा, वह कचहरी में दण्ड के योग्य होगा, और जो कोई अपने भाई को निकम्मा कहेगा वह महासभा में दण्ड के योग्य होगा; और जो कोई कहे ‘अरे मूर्ख’ वह नरक की आग के दण्ड के योग्य होगा। (मत्ती 5:22)

आइए इस पद के शब्दों में कुछ स्पष्टता लाएं। "अपने भाई पर क्रोधित" होने का अर्थ है किसी के साथ मन, वचन या कर्म से प्रेमरहित व्यवहार करना। यहाँ तक कि विश्वासी भी अपने प्रियजनों के साथ प्रेमरहित व्यवहार करते हैं और मेल-मिलाप करने के बजाय उसे क्षमा कर देते हैं।

राका शब्द का अर्थ है "किसी को अवमानना, जज करना, या किसी भी तरह से अपने आप से कम या बेकार मानना।" मूर्ख शब्द का अर्थ है "वह जो नैतिक रूप से अयोग्य और उद्धार के योग्य नहीं है।" ये गंभीर आरोप हैं कि कई विश्वासी किसी न किसी कारण से दूसरों को निशाना बना रहे हैं। यहोवा कहता है, “क्योंकि तुम दाम देकर मोल लिये गए हो; इसलिये अपनी देह के द्वारा, और अपनी आत्मा के द्वारा, जो परमेश्वर के हैं, परमेश्वर की महिमा करो”
(1 कुरिन्थियों 6:20)।

हमें बिना किसी अपवाद के सभी के लिए मसीह की महिमा करनी है या उसे प्रतिबिंबित करना है। दूसरों के प्रति ऐसे विचार या व्यवहार जो प्रेमहीन हैं या मसीह के समान नहीं हैं अक्षम्य हैं और परमेश्वर और व्यक्ति दोनों के प्रति पश्चाताप की आवश्यकता है।

“इसलिये यदि तू अपनी भेंट वेदी पर लाए, और वहाँ तू स्मरण करे, कि तेरे भाई के मन में तेरे लिये कुछ विरोध है, 24तो अपनी भेंट वहीं वेदी के सामने छोड़ दे, और जाकर पहले अपने भाई से मेल मिलाप कर और तब आकर अपनी भेंट चढ़ा।” (मत्ती 5:23-24)

हम वेदी पर कब जाते हैं? यह यीशु के साथ हमारी संगति, प्रार्थना और धन्यवाद में हमारे समय और उससे प्रार्थनाएँ माँगने, भक्ति के हमारे दैनिक कार्यों और उसमें बने रहने की इच्छा को संदर्भित करता है।

मैं दाखलता हूँ : तुम डालियाँ हो। जो मुझ में बना रहता है और मैं उसमें, वह बहुत फल फलता है, क्योंकि मुझ से अलग होकर तुम कुछ भी नहीं कर सकते। (यूहन्ना 15:5)

बने रहने का अर्थ है "साथ रहना, पवित्र आत्मा के मंदिर होने की निरंतर जागरूकता में रहना।" और यह कहता है कि यदि हम ऐसा करें, तो हम बहुत फल उत्पन्न करेंगे; क्योंकि उनकी कृपा के बिना हम कुछ नहीं कर सकते। वेदी पर जाना यीशु के साथ हमारी संगति और फल पैदा करने और उसकी इच्छा का पालन करने के लिए आवश्यक अनुग्रह प्राप्त करने की हमारी क्षमता को दर्शाता है।

खुद की जांच करना

जब हम किसी से क्षमा मांगते हैं या देते हैं, तो परमेश्वर कहते हैं कि हमें पहले इसे स्पष्ट करना चाहिए, इससे पहले कि हम उनके आशीर्वाद और अनुग्रह की उम्मीद कर सकें। मत्ती 5:23 में कौन से वरदान लाने हैं? मन्दिर में बलि चढ़ाना यहूदियों के लिए उनके पापों के प्रायश्चित के भाग के रूप में एक सामान्य प्रथा थी। आज हमारे उपहार हैं स्तुति, दशमांश, आराधना, आज्ञाकारिता और उसकी सेवा। फिर भी यीशु ने कहा कि वह इन उपहारों को प्राप्त नहीं करेगा यदि आप किसी के सुलह के लिए बाध्य हैं।

शमूएल ने कहा, “क्या यहोवा होमबलियों और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन, मानना तो बलि चढ़ाने से, और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। (1 शमूएल 15:22)

परमेश्वर के लिए सेवा और कार्य इस समस्या को ठीक नहीं करेंगे। प्रभु भोज लेने से पहले हमें अपने आप को जाँचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

क्योंकि जब कभी तुम यह रोटी खाते और इस कटोरे में से पीते हो, तो प्रभु की मृत्यु को जब तक वह न आए, प्रचार करते हो। इसलिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा। 28इसलिये मनुष्य अपने आप को जाँच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए। 29क्योंकि जो खाते–पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। 30इसी कारण तुम में बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए। 31यदि हम अपने आप को जाँचते तो दण्ड न पाते। 32परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है, इसलिये कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें। (1 कुरिन्थियों 11:26-32)

कितनी बार मसीही अपने दिलों की जांच किए बिना यह देखने के लिए प्रभु भोज में भाग लेते हैं कि क्या वे कड़वाहट को सहन कर रहे हैं या उन्होंने किसी के खिलाफ पाप किया है और पश्चाताप नहीं किया है या मेल-मिलाप करने की योजना नहीं बनाते हैं?

तथ्य - फ़ाइल

सामंजस्य स्थापित करना-चीजों को सही बनाना; किसी की भावनाओं को बदलना या दूसरे के प्रति प्रति दर्शक; या बकाया ऋण का भुगतान करने के लिए

आपस के प्रेम को छोड़ और किसी बात में किसी के कर्जदार न हो; क्योंकि जो दूसरे से प्रेम रखता है, उसी ने व्यवस्था पूरी की है। (रोमियों 13:8)

एक कर्ज बकाया है

मसीहीयों के रूप में हमारे पास भुगतान करने के लिए एक कर्ज है जो परमेश्वर स्वयं कहते हैं कि हम दूसरों के लिए आभारी हैं: उन्हें विचार, वचन और कर्म में प्यार करना। इसमें उन लोगों को क्षमा करना भी शामिल है जिन्होंने हमें ठेस पहुँचाई है। बहुत से मसीही किसी के प्रति कटुता, आक्रोश, या अक्षमता को आश्रय दे रहे हैं और इन भावनाओं को सही ठहरा रहे हैं क्योंकि इस व्यक्ति ने अभी तक कोई परिणाम नहीं चुकाया है या अपने व्यवहार की जिम्मेदारी नहीं ली है। लेकिन हम दूसरों के द्वारा चोट पहुँचाएंगे, यहाँ तक कि वे भी जो हमसे प्यार करने वाले हैं, या तो अज्ञानता में या जानबूझकर।

क्षमा शब्द एक क्रिया है - एक क्रिया। परमेश्वर अभी आपसे बात करने के लिए अपने वचन का उपयोग कर रहा है, सत्य को प्रकट कर रहा है जिसके लिए कार्रवाई की आवश्यकता है। क्षमा करना आसान नहीं है। आपको पालन करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए एक परिपक्व ईसाई के समर्थन और उत्तरदायित्व की तलाश करने में मदद मिल सकती है।

उस व्यक्ति या व्यक्तियों को क्षमा करने की अपनी प्रतिबद्धता को लिखें या जो कुछ परमेश्वर ने आप पर प्रकट किया है उसके लिए क्षमा मांगें। पालन करने के लिए खुद को एक समय सीमा दें।

_____

_____

_____

_____

_____

_____

इसलिये यदि तुम मनुष्य के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा। (मत्ती 6:14)

कुछ मामलों में, रसद, यात्रा की लागत, आपके लिए सुरक्षा, या दूसरे व्यक्ति की इतनी देर तक चुप रहने की क्षमता के कारण आपको वह कहने की ज़रूरत है जो आपको कहने की ज़रूरत है, एक पत्र, ईमेल, टेक्स्ट या फोन कॉल हो सकता है सबसे बढ़िया विकल्प।

संचार अनुस्मारक

बोलते समय या लिखित रूप में संवाद करते समय इन बातों को ध्यान में रखें।

1. आप अपने स्वर्गीय पिता की आज्ञाकारिता के कारण ऐसा कर रहे हैं, जो आपसे प्यार करता है और आपकी परवाह करता है।
2. वह चाहता है कि आप उस बंधन और उत्पीड़न से मुक्त हों जिसे आप क्षमा न करने के परिणामस्वरूप अनुभव कर रहे हैं।
3. आपको अपने खिलाफ किए गए अपराध के हर विवरण का पूर्वाभ्यास करने की आवश्यकता नहीं है।
4. कई बार, खासकर जीवनसाथी को क्षमा करते समय, वे इस बात से अनजान हो सकते हैं कि उन्होंने आपको चोट पहुँचाने के लिए क्या किया है।
5. दूसरों को अपना अपराध स्वीकार करने के लिए बाध्य न करें।
6. परमेश्वर ने आपको आज्ञा मानने के लिए बुलाया है, न कि अभियोजन पक्ष का वकील, जूरी, न्यायाधीश बनने के लिए, या कोशिश करने और उनसे यह स्वीकार करने के लिए कि उन्होंने जो किया वह गलत था।
7. इसे छोटा रखें।

8. कई मामलों में, भावनाओं के उच्च स्तर के कारण, हम खुद को वे बातें कहते हुए पा सकते हैं जो हम कहना नहीं चाहते थे और बैठक, बातचीत या पत्र के उद्देश्य को कम कर देते हैं।
9. अंत में (यदि लागू हो), उनके प्रति कड़वाहट रखने के लिए क्षमा मांगें।
10. याद रखें कि उन्होंने जो किया हो सकता है वह गलत और अपमानजनक था, लेकिन कड़वाहट और क्षमा न करना भी उतना ही गलत है।

जिस दिन परमेश्वर मेरे सुसमाचार के अनुसार यीशु मसीह के द्वारा मनुष्यों की गुप्त बातों का न्याय करेगा। (रोमियों 2:16)

अत: हे दोष लगानेवाले, तू कोई क्यों न हो, तू निरुत्तर है; क्योंकि जिस बात में तू दूसरे पर दोष लगाता है उसी बात में अपने आप को भी दोषी ठहराता है, इसलिये कि तू जो दोष लगाता है स्वयं ही वह काम करता है। (रोमियों 2:1)

जिस हद तक मैं दूसरों को माफ करने में सक्षम और तैयार हूं, वह इस बात का स्पष्ट संकेत है कि मैंने व्यक्तिगत रूप से मेरे लिए अपने पिता परमेश्वर की क्षमा का अनुभव किया है। —फिलिप केलर

क्षमा करने की अपनी प्रतिबद्धता को बनाए रखना

क्षमा माँगने या किसी अन्य व्यक्ति को क्षमा करने के बाद आप आत्मा और देह के बीच युद्ध का सामना कर सकते हैं।

पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, शान्ति, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता, और संयम है; ऐसे ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं। और जो मसीह यीशु के हैं, उन्होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषाओं समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी। हम घमण्डी होकर न एक दूसरे को छेड़ें, और न एक दूसरे से डाह करें। (गलातियों 5:22-26)

क्षमा का अनुभव आपको और आपके रिश्तों को समय के साथ बदल देगा। समर्पण और आज्ञाकारिता के इस स्थान पर लाकर परमेश्वर ने आपके जीवन में एक बड़ी विजय प्राप्त की है। लेकिन यह महज़ एक शुरुआत है। अब आपको प्रेस करना होगा और आवश्यक परिवर्तनों के माध्यम से कार्य करना होगा। इसके लिए यह आवश्यक होगा कि आप अपनी दया और करुणा के मार्ग पर चलते रहने के लिए उसकी शक्ति के लिए प्रतिदिन परमेश्वर की तलाश करें।

उदाहरण के लिए, आपने माता-पिता को कठोर और अप्रिय होने के लिए क्षमा कर दिया होगा और कड़वाहट को सहन करने के लिए उन्हें क्षमा करने के लिए कहा होगा। फिर भी वे कठोर और प्रेमहीन बने रह सकते हैं। हो सकता है कि आपकी देह उस तरह से प्रतिक्रिया करना चाहे जिस तरह से आपने पहले प्रतिक्रिया की थी। परमेश्वर आपके जीवन में उसका फल उत्पन्न करने के लिए विश्वासयोग्य रहेगा जैसे ही आप पल-पल उसके प्रति समर्पण करते हैं।

क्योंकि हमारा यह मल्लयुद्ध लहू और मांस से नहीं परन्तु प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं। (इफिसियों 6:12)

आपको यह ध्यान रखना चाहिए कि क्षमा करने में आपकी आज्ञाकारिता इसलिए नहीं थी कि आपका जीवनसाथी (या दूसरा व्यक्ति) बदल जाए। यदि वे अपनी इच्छा को प्रभु को सौंप देते हैं, तो वे परमेश्वर के अनुग्रह, चंगाई और बदलने की क्षमता का अनुभव करेंगे। केवल परमेश्वर ही हमारे हृदयों को बदल सकता है और हमारे मनों को नया कर सकता है, परन्तु यह तभी होगा जब हम उसके प्रति समर्पण करेंगे।

हम हर दिन एक आत्मिक लड़ाई में शामिल होते हैं। शत्रु, शैतान, नहीं चाहता कि आप परमेश्वर की आज्ञा मानें या पाप और दुखों पर विजय प्राप्त करें। वह आपके मन पर यादों, बुरे विचारों, झूठ, प्रलोभनों और निंदा से आक्रमण करेगा। आपको मानसिक आत्म-नियंत्रण का अभ्यास करना चाहिए और याद रखना चाहिए कि आप क्या और किससे जूझ रहे हैं!

" क्रोध तो करो, पर पाप मत करो; सूर्य अस्त होने तक तुम्हारा क्रोध न रहे, 27और न शैतान को अवसर दो।" (इफिसियों 4:26-27)

यह वह वास्तविकता है जिसमें हम रहते हैं। शैतान को आपके जीवन में जमीन खोने से नफरत है। वह आपको परमेश्वर की शांति और आनंद से वंचित करना चाहता है।

शैतान का विनाश

अपने जीवन में शैतान को अपना विनाश करने का अवसर देना बंद करें। परमेश्वर के वचन के द्वारा आपके दिमाग में आने वाले प्रत्येक विचार को परखें यह देखने के लिए कि यह उसकी ओर से है, आपकी देह से है, या शत्रु से है।

क्योंकि यद्यपि हम शरीर में चलते फिरते हैं, तौभी शरीर के अनुसार नहीं लड़ते। क्योंकि हमारी लड़ाई के हथियार शारीरिक नहीं, पर गढ़ों को ढा देने के लिये परमेश्वर के द्वारा सामर्थी हैं। इसलिये हम कल्पनाओं का और हर एक ऊँची बात का, जो परमेश्वर की पहिचान के विरोध में उठती है, खण्डन करते हैं; और हर एक भावना को कैद करके मसीह का आज्ञाकारी बना देते हैं, और तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञापालन पूरा हो जाए, तो हर एक प्रकार के आज्ञा–उल्लंघन को दण्डित करें। (2 कुरिन्थियों 10:3-6)

इसलिये हे भाइयो, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, अर्थात् जो भी सद्गुण और प्रशंसा की बातें हैं उन पर ध्यान लगाया करो। (फिलिप्पियों 4:8)

प्रत्येक परीक्षा में प्रार्थना करें, उसकी इच्छा पूरी करने के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य मांगें।

बुराई से न हारो, परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो। (रोमियों 12:21)

परमेश्वर जो आशा का दाता है तुम्हें विश्वास करने में सब प्रकार के आनन्द और शान्ति से परिपूर्ण करे, कि पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से तुम्हारी आशा बढ़ती जाए। (रोमियों 15:13)

यीशु के नाम में शैतान का विरोध करें और उसे फटकारें। लड़ाई!

परन्तु प्रधान स्वर्गदूत मीकाईल ने, जब शैतान से मूसा के शव के विषय में वाद–विवाद किया, तो उसको बुरा–भला कहके दोष लगाने का साहस न किया पर यह कहा, "प्रभु तुझे डाँटे।" (यहूदा 1:9)

इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिस से वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए। अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है। सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह के समान इस खोज में रहता है कि किस को फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ होकर, और यह जानकर उसका सामना करो कि तुम्हारे भाई जो संसार में हैं ऐसे ही दुःख सह रहे हैं। (1 पतरस 5:6-9)

जिसका तुम कुछ क्षमा करते हो उसे मैं भी क्षमा करता हूँ, क्योंकि मैं ने भी जो कुछ क्षमा किया है, यदि किया हो, तो तुम्हारे कारण मसीह की जगह में होकर क्षमा किया है 11कि शैतान का हम पर दाँव न चले, क्योंकि हम उसकी युक्तियों से अनजान नहीं। (2 कुरिन्थियों 2:10-11)

परमेश्वर चाहता है कि आप विजयी हों। शैतान की युक्तियों से सावधान रहें। हमें बंधन में रखने के लिए क्षमा न करना उनकी सबसे शक्तिशाली युक्तियों में से एक है। यीशु ने शैतान के धोखे का मुकाबला करने के लिए पवित्रशास्त्र के उपयोग के महत्व को दिखाया (मत्ती 4:4, 7, 10)।

गैर-बाइबल संबंधी विचारों का सामना करने के लिए और परमेश्वर के दृष्टिकोण पर अपने मन को स्थापित करने के लिए ऊपर दिए गए किसी भी पद या इस अध्ययन के कई पदों का उपयोग करके एक कार्य योजना विकसित करें। एक इंडेक्स कार्ड पर एक कविता लिखें और कार्ड को अपने साथ ले जाकर उसे याद करें और सुबह और रात में उसकी समीक्षा करें। छंदों को कंठस्थ करके अपनी विजय किट में शामिल करना जारी रखें। जब आप प्रार्थना करते हैं और पवित्रशास्त्र को याद करते हैं, तो आप परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में छिपा रहे हैं (भजन संहिता 119:11)। यह आपकी जीत होगी।

बुरे विचारों को बदलने के लिए पवित्रशास्त्र का उद्धरण दें, परमेश्वर की सच्चाई को सुदृढ़ करें, और शत्रु को जवाब दें जैसे यीशु ने किया। जब शैतान यीशु के पास झूठ लेकर आया, तो उसने कहा, "यह लिखा है" (मत्ती 4:4, 7), और उसने पवित्रशास्त्र का हवाला दिया। हमें भी ऐसा ही करना चाहिए। सत्य की हमेशा जीत होगी।

सीमाओं की स्थापना

आपको सीमाएं स्थापित करने की आवश्यकता हो सकती है। क्षमा माँगना या किसी को क्षमा करना उस व्यक्ति को यह अधिकार नहीं देता है कि वह आपके साथ अनादर या कठोर व्यवहार करे।

यदि आपकी माँ आपके बड़े होने पर आपके प्रति कठोर या जोड़-तोड़ कर रही थी और आपके बाहर जाने के बाद भी जारी रही, तो आपको अपने रिश्ते में सीमाएँ निर्धारित करने की आवश्यकता है (उसे क्षमा करने के बाद)। कृपया समझाएं कि आप उसके साथ एक रिश्ता चाहते हैं लेकिन उसके द्वारा आहत न होने के लिए सीमाएं स्थापित करने की आवश्यकता है। शायद आप यह जोड़ सकते हैं, "माँ, मुझे चाहिए कि आप मुझसे प्यार से बात करें, और मैं आपके साथ भी ऐसा ही करने का वादा करता हूँ। यदि हम में से कोई भी कुछ कठोर कहता है, तो हमें यह व्यक्त करने की आवश्यकता है कि दूसरा व्यक्ति हमें चोट पहुँचाता है। या अगर हम किसी खास विषय पर बात नहीं करना चाहते हैं, तो हमें उसका सम्मान करना चाहिए। यदि उन सीमाओं का सम्मान नहीं किया जाता है, तो मैं चर्चा समाप्त कर दूंगा। माँ, जिस तरह से हम एक दूसरे से प्यार और सम्मान करते हैं, उसी तरह से हम वास्तव में जान सकते हैं कि क्या हम संबंध बनाना चाहते हैं।

मेल-मिलाप में नाकाम

कभी-कभी समझौता करना संभव नहीं होता। यदि आप जिस व्यक्ति को क्षमा करना चाहते हैं वह मर चुका है या मेल-मिलाप करने के लिए तैयार नहीं है, तब भी आप उन्हें क्षमा कर सकते हैं।

उस कड़वाहट की वस्तु के मरने के बाद मानव हृदय में कड़वाहट लंबे समय तक जीवित रहती है। अस्वास्थ्यकर मानवीय परिस्थितियों की मानव आत्मा को ठीक करने के लिए माफी को एक शक्तिशाली एंटीडोट के रूप में देखना महत्वपूर्ण है। यदि आप परमेश्वर पर भरोसा करना चुनते हैं और इस "एंटीडोट" को प्राप्त करते हैं, तो परमेश्वर चंगाई लाएगा और यहां तक कि आपकी आत्मा में उन खालीपनों को भर देगा। अपराधी की मृत्यु परमेश्वर के वचन को निष्प्रभावी नहीं कर देती।

सच है, बाइबल आधारित क्षमा के लिए हमें कार्रवाई करने की आवश्यकता है। हमें अपने मन या हृदय में इस बात से अधिक सहमत होना चाहिए कि हमें क्षमा कर देना चाहिए। बाइबल हमें केवल क्षमा को महसूस करने की आज्ञा नहीं देती है। हमें अपनी इच्छा का प्रयोग करना चाहिए और अपने कार्यों का पालन करना चाहिए।

आपको प्रभु के सामने अंगीकार करने के साथ आरंभ करना चाहिए। यदि आप अपने अंगीकार को ज़ोर से बोलते हैं और मृत व्यक्ति के लिए अपनी क्षमा को एक विश्वसनीय मित्र, जीवनसाथी, पासबान, या परामर्शदाता की उपस्थिति में मौखिक रूप से बोलते हैं तो यह सहायक होता है।

तथ्य - फ़ाइल

कबूल करना-किसी के कुकर्म, दोष या पाप को स्वीकार करना या बंद करना।

आपकी जिम्मेदारी

आप केवल मेलमिलाप के अपने हिस्से के लिए जिम्मेदार हैं। भले ही आपका जीवनसाथी (या अन्य व्यक्ति) किसी भी स्थिति में क्यों न हो, आपको क्षमा माँगने और क्षमा देने के द्वारा परमेश्वर की आज्ञा का पालन करना चाहिए। यदि वे आपको क्षमा करने से इनकार करते हैं, या वे आपके प्रति अपने गलत को स्वीकार नहीं करते हैं, तब भी परमेश्वर आपकी आज्ञाकारिता के लिए आपको आशीष देगा और आपके जीवन पर अपनी शांति, अनुग्रह और दया उंडेलेगा। आप अभी भी बंधन से उनकी मुक्ति का अनुभव करेंगे।

आप दूसरे व्यक्ति से कोई अपेक्षा या आवश्यकता नहीं रख सकते। प्रभु को सब कुछ सौंप दें और अपनी परिस्थितियों में काम करने के लिए उस पर भरोसा करें। हमें अपनी समझ का सहारा नहीं लेना चाहिए बल्कि परमेश्वर और उसकी इच्छा का पालन और समर्पण करना चाहिए। उसने हमें शासन करने, रक्षा करने और हमें स्वतंत्र करने के लिए आध्यात्मिक नियम दिए हैं। उसका वचन हमें इन नियमों का पालन करने के बारे में समझ और निर्देश देता है। हमारा शरीर, घमण्ड और भय हमें इन परिस्थितियों में परमेश्वर पर भरोसा करने और उसकी आज्ञा मानने से रोकेगा, परन्तु पवित्र आत्मा की सामर्थ्य के द्वारा हम जय पा सकते हैं।

तू अपनी समझ का सहारा न लेना, वरन् सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा। (नीतिवचन 3:5-6)

आपका मार्गदर्शन करने के लिए निम्नलिखित प्रार्थना का प्रयोग करें:

प्रभु यीशु, मैं इन परिस्थितियों में आप पर भरोसा करने की शक्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ। यह याद रखने में मेरी मदद करें कि मैं यह आपके लिए कर रहा हूं। मैं जानता हूँ कि केवल आप ही मुझे और मेरे जीवनसाथी को उस ग़लती के लिए चंगा कर सकते हैं जो हमने एक दूसरे के साथ की है। मैं अपने जीवनसाथी के साथ मेलमिलाप के लिए प्रार्थना करता हूं, लेकिन मैं जानता हूं कि मैं केवल अपना हिस्सा ही कर सकता हूं। मैं अपने जीवनसाथी के लिए प्रार्थना करता हूं कि वह आपके सामने आत्मसमर्पण कर दे ताकि आपकी महिमा हो। मैं परिणामों को लेकर आप पर पूरी तरह भरोसा करता हूं। यीशु के नाम में मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

निष्कर्ष

क्षमा करना अत्यंत कठिन हो सकता है, परन्तु जीवन तब कठिन हो जाता है जब हम क्षमा नहीं करते क्योंकि हम पाप को आश्रय दे रहे हैं और जो यीशु ने क्रूस पर हमारे लिए किया उसे खो रहे हैं। परमेश्वर की क्षमा का हमारा अनुभव सीधे तौर पर दूसरों को क्षमा करने की हमारी क्षमता से संबंधित है। दूसरों को क्षमा करने की तत्परता एक संकेत है कि आपने वास्तव में अपने पाप का पश्चाताप किया है, अपना जीवन समर्पित किया है, और परमेश्वर की क्षमा प्राप्त की है। परमेश्वर के प्रति समर्पित हृदय दूसरों के प्रति कठोर हृदय नहीं हो सकता।

घमण्ड और भय हमें क्षमा और मेल-मिलाप से दूर रखते हैं। देने या तोड़ने से इनकार करना, अपने अधिकारों पर जोर देना, और अपना बचाव करना ये सभी संकेत हैं कि स्वार्थी अभिमान प्रभु के बजाय आपके जीवन पर शासन कर रहा है। जब इस बात का भय हो कि क्या होगा अगर आपको खा रहा है और नियंत्रित कर रहा है, तो ईश्वर पर विश्वास करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए प्रार्थना करें। दुश्मनों को रखना बहुत महंगा है। मत्ती 18:21-35 का दृष्टांत चेतावनी देता है कि क्षमा न करने वाली आत्मा आपको एक भावनात्मक कैदखाने में डाल देगी।

क्षमा द्वारा चंगा होने वाला पहला और अक्सर एकमात्र व्यक्ति वह व्यक्ति होता है जो क्षमा करता है। . . . जब हम वास्तव में क्षमा करते हैं, तो हम एक कैदी को आज़ाद करते हैं और फिर पता चलता है कि जिस कैदी को हमने आज़ाद किया था, वह हम ही थे। —लुईस समेडेस

अपेंडिक्स आर

शब्दावली

ये परिभाषाएं वेबस्टर के न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी ऑफ द इंग्लिश लैंग्वेज, जी एंड सी मेरियम कंपनी और द कम्प्लीट वर्ड स्टडी डिक्शनरी, स्पिरोस ज़ोधिएट्स, एएमजी पब्लिशर्स से ली गई हैं।

बने रहें: रहना, बने रहना; एक स्थान पर बने रहना; बिना झुके सहन करना।

पुष्टि करें: पुष्टि करना; मान्य के रूप में दावा करें; सकारात्मक रूप से जोर दें।

अभिमानी या घमंडी: अभिमानी होना; आत्म-महत्व महसूस करना या दिखाना, दूसरों के लिए उपेक्षा। अभिमानी; अपने आप को उच्च पद देना, महत्व की अनुचित डिग्री।

सब कुछ सहन करता है: सहन करता है, स्टेगो (ग्रीक)। छिपाना, छिपाना। प्रेम दूसरों के दोषों को छुपाता है या उन्हें ढकता है। यह आक्रोश को दूर रखता है जैसे जहाज पानी या छत को बारिश से बाहर रखता है।

विश्वास: पिस्तूओ (ग्रीक)। किसी बात पर दृढ़ विश्वास या विश्वास होना। यह अपेक्षित आशा के दृष्टिकोण को इंगित करता है।

अपनी प्रशंसा करना: अपने बारे में, या स्वयं से संबंधित चीजों के बारे में, घमंडी तरीके से बात करना; घमंड करना।

साथी: वह जो किसी के साथ या साथ में हो; जीवनसाथी, सहयोगी, जीवनसाथी या साथी के रूप में किसी विशेष रिश्ते का हित।

तुलनीय: एक जो प्रतिपक्ष है, दूसरा पक्ष, विपरीत भाग, एक साथी, एक दोस्त, लेकिन समान नहीं।

समझौता: आपसी सहमति से मतभेदों को सुलझाना।

सुधार: परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि कैसे किसी चीज़ को उसकी उचित स्थिति में पुनर्स्थापित करना है, किसी गिरे हुए को सीधा करना, जो ईश्वरीय जीवन की ओर इशारा करता है।

अपवित्र: मियानो (ग्रीक)। कांच के दाग के रूप में रंग से दागना, दूषित करना, रंगत करना, अपवित्र करना।

अनुशासन: हूपोपियाज़ो (ग्रीक)। नॉकआउट मुक्के देने वाले मुक्केबाजों का वर्णन करते थे; आंखों के ठीक नीचे चेहरे के हिस्से पर तब तक वार करता है जब तक वे काले और नीले नहीं हो जाते। (संबंधित अंश: 1 तीमुथियुस 4:7-8; यहूदा 3; 2 पतरस 1:5-6)

दिव्य शक्ति: शक्ति, डुनामिस (ग्रीक)। गतिशील शक्ति, या वह करने की क्षमता जो केवल परमेश्वर ही कर सकता है।

सिद्धांत: परमेश्वर का दिव्य निर्देश जीवन, ईश्वरत्व और परिवार के लिए आवश्यक दिव्य सत्य का एक व्यापक और पूर्ण शरीर प्रदान करता है।

संपादन: ओइकोडोम (ग्रीक)। आध्यात्मिक लाभ या किसी और की उन्नति के लिए निर्माण करना; एक घर या संरचना के निर्माण को इंगित करने के लिए उपयोग किया जाता है।

सब कुछ सहना: सहना, हूपोमेनो (ग्रीक)। के अधीन रहना, सहन करना, दुखों के भार के रूप में पीड़ित होना। रोगी स्वीकृति, अपनी जमीन को पकड़े हुए जब वह न तो विश्वास कर सकता है और न ही आशा।

लुभाना: सागाह (हिब्रू)। यशायाह ने इस क्रिया का प्रयोग करवट बदलने, भटकने, या नशे में झूमने के लिए किया था (यशा0 28:7)। न केवल शराब या बीयर से बल्कि प्रेम से भी नशे को परिभाषित कर सकता है (नीतिवचन 5:19-20)।

ईर्ष्या: किसी अन्य की श्रेष्ठता या सौभाग्य को देखते हुए असंतोष या बेचैनी, कुछ हद तक घृणा और समान लाभ प्राप्त करने की इच्छा के साथ; दुर्भावनापूर्ण अनिच्छा

अपेक्षा: कुछ होने की प्रत्याशा या धारणा; एक अपेक्षित मानक

त्यागना : इनकार करना। प्रतिदिन हमारी प्राथमिकताओं को परमेश्वर के वचन के साथ संरेखित करें, जो उसकी इच्छा को हमारे ऊपर रखता है।

कोमल: उचित रूप से, उपयुक्त; न्यायसंगत, निष्पक्ष, मध्यम, सहनशील, कानून के पत्र पर जोर नहीं दे रहा है। विचारशीलता व्यक्त करता है जो किसी मामले के तथ्यों पर मानवीय और यथोचित रूप से दिखता है।

वास्तविकता: डोकिमियन (ग्रीक)। कुछ ऐसा जो परीक्षण और अनुमोदित किया गया हो। उन धातुओं का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता है जो सभी अशुद्धियों को दूर करने की प्रक्रिया से गुजरे थे।

महिमा करना: प्रतिबिंबित करना, सम्मान करना, प्रशंसा करना, सम्मान या सम्मान देना, उसे एक सम्मानजनक स्थिति में रखना।

दिल: कार्दिया (ग्रीक)। इच्छाओं, भावनाओं, स्नेह, जुनून, आवेगों का स्थान; मन।

दिल: लेबाब (हिब्रू)। मन, आंतरिक व्यक्ति (इच्छा, भावनाएं)। शब्द मुख्य रूप से आंतरिक व्यक्ति के संपूर्ण स्वभाव का वर्णन करता है।

सहायक: अजार (हिब्रू)। सहायता करना, सहारा देना, प्रोत्साहन देना; वह जो दूसरे को घेरता हो, उसकी रक्षा करता हो और उसकी सहायता करता हो।

सहायक: एज़ेर (हिब्रू)। दी गई सहायता या सहायता के लिए; सहायता देने वाले व्यक्तियों को इंगित करता है। स्त्री को आदम के पूरक सहायक के रूप में सृजा गया (उत्पत्ति 2:18, 20)। इस्राएल की सहायता के रूप में यहोवा (होशे 13:9)। इस्राएल के मुख्य सहायक के रूप में यहोवा (निर्गमन 18:4; व्यवस्थाविवरण 33:7; भजन संहिता 33:20; 115:9–11)।

सहायक: वह जो साथ आता है और सहायता करता है, नेतृत्व नहीं करता।

धार्मिकता में निर्देश: पवित्रशास्त्र सकारात्मक प्रशिक्षण प्रदान करता है। निर्देश मूल रूप से ईश्वरीय व्यवहार में एक बच्चे को प्रशिक्षित करने के लिए संदर्भित है; गलत व्यवहार के लिए केवल फटकार और सुधार नहीं (प्रेरितों के काम 20:32; 1 तीमुथियुस 4:6; 1 पतरस 2:1-2)।

दयालु: - क्रेस्टोस (ग्रीक)। अच्छा करना; कठोर, कठिन, तेज, कड़वा या क्रूर के विपरीत कोमल, दयालु, सहानुभूतिपूर्ण, शालीन और अच्छे स्वभाव को दर्शाता है। नैतिक उत्कृष्टता का विचार।

ज्ञान: एपिग्नोसिस (ग्रीक)। ज्ञान प्राप्त करने और उसे लागू करने में पूरी भागीदारी।

सहनशीलता या धैर्य: लंबे समय तक गुस्से में रहना, जल्दबाजी में क्रोध के विपरीत; इसमें लोगों के प्रति समझ और धैर्य का प्रयोग करना शामिल है। आवश्यकता है कि हम परिस्थितियों को सहन करें, विश्वास न खोएं या हार न मानें।

प्रेम: अगापे (ग्रीक)। अयोग्य पापियों के प्रति परमेश्वर के हृदय की प्रतिक्रिया। अगापे परमेश्वर का प्रेम है जो उसके प्रेम की वस्तुओं के लाभ के लिए आत्म-बलिदान में प्रदर्शित होता है, उसका पुत्र मनुष्य को क्षमा लाता है। परमेश्वर का आवश्यक गुण दूसरों के कार्यों की परवाह किए बिना दूसरों के सर्वोत्तम हितों की तलाश करता है; इसमें परमेश्वर को वह करना शामिल है जो वह जानता है कि मनुष्य के लिए सबसे अच्छा है और जरूरी नहीं कि मनुष्य क्या चाहता है। अगापे बिना शर्त प्यार करना चुन रहा है।

प्रेम: फिलियो (ग्रीक)। मानवीय आत्मा की प्रतिक्रिया जो उसे आकर्षित करती है, आनंददायक है। अगापे से अलग और सम्मान, उच्च सम्मान और कोमल स्नेह की बात करता है और अधिक भावनात्मक है। दोस्ती का प्यार; उस प्रेम की वस्तु से प्राप्त होने वाले आनंद से निर्धारित होता है। फिलियो सशर्त प्रेम है।

ध्यान करना: कराहना, बोलना, या गुर्राने वाली आवाज़ें, जैसे आधा जोर से पढ़ना या खुद से बातचीत करना, पाठ के साथ बातचीत करना ताकि यह आपके दिमाग में समा जाए। जिस प्रकार पानी में भिगोया गया टी बैग तरल पदार्थ में व्याप्त हो जाता है, उसी प्रकार पवित्रशास्त्र पर मनन करना हमारे मन में व्याप्त हो जाता है। बाइबिल की दुनिया में, ध्यान एक मूक अभ्यास नहीं था।

सेवक (संज्ञा): नौकर या वेटर ; वह जो देखरेख करता है, शासन करता है और पूरा करता है।

सेवक (क्रिया): समायोजित करने, विनियमित करने और क्रम में सेट करने के लिए; सेवा करना, दूसरे की सेवा करना; एक सेवक के रूप में प्रभु के लिए परिश्रम करना।

अधार्मिकता (अधर्म) में आनन्दित न होना: जब आप किसी को पाप में गिरते हुए या गलती करते हुए देखते हैं, तो आप उनके प्रति खुश या प्रतिशोधी नहीं होते हैं।

सिद्ध: टेलीयो (ग्रीक)। पूरा करने के लिए, जो इंगित करता है कि कुछ प्रक्रिया में है। विशेष रूप से अर्थ के साथ एक पूर्ण अंत, पूर्णता, अभीष्ट लक्ष्य तक पहुँचने के लिए, किसी कार्य या कर्तव्य को पूरा करने के लिए।

प्राथमिकता: एक दूसरे से पहले या ऊपर क्या पसंद करता है। न सही न गलत।

प्रदान करें: प्रोनियो (ग्रीक)। ध्यान से विचार करना, विचार करना, ध्यान में रखना, सम्मान करना, पहले से विचार करना, किसी और को प्रदान करने में देखभाल करना।

उद्देश्य: एक इच्छित या वांछित परिणाम या लक्ष्य।

प्रतिक्रिया: एक उत्तेजक या उत्तेजना के जवाब में कार्य करने के लिए, विरोध में कार्य करने के लिए।

देह में प्रतिक्रिया करना: एक मसीही किसी स्थिति पर पापपूर्ण तरीके से, अपने पुराने पतित स्वभाव की आदत में, या पवित्र आत्मा की शक्ति और ज्ञान के बजाय अपनी शक्ति और समझ में प्रतिक्रिया करता है।

सच्चाई में आनन्दित होना: बहुत आनन्दित होना; परमेश्वर के वादों के आधार पर जो सत्य है उस पर आनन्दित होना।

प्रायश्चित करना : समाधान करना; अपने पापों के पछतावे के परिणामस्वरूप अपने जीवन में सुधार करना; किसी ने परमेश्वर के सामने किसी ने जो किया है या करने से चूक गया है, उसके लिए खेद महसूस करना। घूमने और दूसरी दिशा में जाने के लिए; अपने मन, इच्छा और जीवन को बदलने के लिए, जिसके परिणामस्वरूप व्यवहार में परिवर्तन होता है; चीजों को दूसरे तरीके से करने के लिए।

फटकार: परमेश्वर का वचन हमें बताता है कि विश्वास और व्यवहार में क्या गलत या पापपूर्ण है।

जवाब दें: सकारात्मक या अनुकूल प्रतिक्रिया दें।

प्रेम में प्रतिक्रिया देना: आंतरिक मार्गदर्शन, प्रेम, ज्ञान और पवित्र आत्मा की शक्ति के साथ प्रतिक्रिया करना।

ठीक से विभाजित करना: बढ़ईगीरी, चिनाई, या कपड़े के एक टुकड़े को एक साथ सिलने के साथ सीधे काटना।

असभ्य: खुरदरापन की विशेषता; कठोर, गंभीर, बदसूरत, अभद्र, या तरीके या कार्रवाई में आक्रामक।

संतुष्ट: रवाह (हिब्रू)। पानी देना, भिगोना; किसी का पेट भरना पीना। यह किसी को शाब्दिक और आलंकारिक रूप से पेय देने को संदर्भित करता है (भजन संहिता 36:8-9; 65:10-11)। इसका अर्थ है कि जो कुछ भी कोई चाहता है उसे पीना, संतुष्ट करना (नीतिवचन 5:19; 7:18)।

सुरक्षा: खतरे या खतरे से मुक्त होने की स्थिति, विश्वास है कि एक सुरक्षित है, और यह कि किसी की भलाई दूसरे द्वारा सुनिश्चित की जाती है, जैसे कि एक पत्नी पति के नेतृत्व में सुरक्षित रूप से आराम करती है।

अपने दिमाग की तलाश करें और सेट करें: कार्रवाई को इंगित करने वाली अनिवार्य क्रियाएं एक सतत प्रक्रिया है। तलाश का अर्थ है तलाश करना और खोजने का प्रयास करना। अपने दिमाग को सेट करें इच्छा, स्नेह और विवेक को संदर्भित करता है।

सबसे पहले खोजें: करने और कभी न रुकने की आज्ञा (मत्ती 6:33)।

अपने तरीके की तलाश करें: इस बात की परवाह किए बिना कि आपके कार्य या तरीके दूसरों को कैसे प्रभावित करते हैं, अपने हितों के लिए सबसे अच्छा प्रयास करें। इनपुट प्राप्त करने की अनिच्छा, जिसमें भगवान के दृष्टिकोण या आपके जीवनसाथी से निर्देश शामिल हैं।

अध्ययन: अनिवार्य क्रिया; करने और जारी रखने की आज्ञा। एक उत्साही दृढ़ता को दर्शाता है, मेहनती होने के लिए, अपना सर्वश्रेष्ठ करने के लिए हर संभव प्रयास करने के लिए, एक लक्ष्य को पूरा करने के लिए उत्सुक और ईमानदार होने के लिए।

समर्पण करना: हुपोटासो (ग्रीक)। देने, सहयोग करने, जिम्मेदारी संभालने और बोझ उठाने का स्वैच्छिक रवैया।

कोई बुराई नहीं सोचता: लोगिज़ोमई (ग्रीक)। एक लेखांकन शब्द के रूप में उपयोग किया जाता है, जिसका अर्थ है किसी के दिमाग में चीजों को एक साथ रखना, गिनना या जोड़ना, गणनाओं के साथ खुद को व्यस्त रखना।

हर अच्छे काम के लिए पूरी तरह से तैयार: परमेश्वर चाहता है कि हम उसकी इच्छा को समझें और उसके वचन में बाइबिल के सिद्धांतों का पालन करके आज्ञाकारिता में पालन करने के लिए सशक्त हों।

रूपांतरित: मेटामोर्फो (ग्रीक)। जिससे हम कायापलट शब्द की व्युत्पत्ति करते हैं। एक तितली के कैटरपिलर के रूप में, कुछ पूरी तरह से अलग में बदलने के लिए।

सत्य: परमेश्वर के वचन से आता है; सही और गलत क्या है स्पष्ट करता है।

कारीगरी: पोइमा (ग्रीक)। जिससे हम कविता शब्द की व्युत्पत्ति करते हैं। कुछ बनाना; एक काम, वर्कपीस, कारीगरी या उत्कृष्ट कृति।

अंतलेख

1. रिचर्ड एल. प्रैट जूनियर, होल्मन न्यू टेस्टामेंट कमेंट्री में "1 और 2 कुरिन्थियों" खंड। 7 (नैशविले, टीएन: ब्रॉडमैन एंड होल्मन पब्लिशर्स, 2000), 447।
2. स्पाइरोस जोधियेट्स, द कम्प्लीट वर्ड स्टडी डिक्शनरी: न्यू टेस्टामेंट (चट्टानोगा, टीएन: एएमजी पब्लिशर्स,2000), 66.
3. जे डी वाटसन, ए वर्ड फॉर द डे (चट्टानोगा, टीएन: एएमजी पब, 2006), 21।
4. वेबस्टर्स न्यू इंटरनेशनल डिक्शनरी ऑफ द इंग्लिश लैंग्वेज; दूसरा संस्करण संक्षिप्त; (स्प्रिंगफील्ड, एमए: जी एंड सी मरियम कंपनी, 1944)।
5. वेबस्टर्स ॥ न्यू रिवरसाइड डिक्शनरी रिवाइज्ड एडिशन, ऑफिस एडिशन (बोस्टन, एमए: ह्यूटन मिफ्लिन कंपनी, 1996)
6. जोधियेट्स, द कम्प्लीट वर्ड स्टडी डिक्शनरी, 939.
7. एच. ए. आयरनसाइड, नीतिवचन की पुस्तक पर नोट्स (नेप्च्यून, एनजे: लोइज़ेक्स ब्रोस, 1908), 212।
8. आयरनसाइड, नीतिवचन की किताब पर नोट्स, 211.
9. जोधियेट्स, द कम्प्लीट वर्ड स्टडी डिक्शनरी, 1310।
10. मार्विन रिचर्डसन विन्सेंट, वर्ड स्टडीज़ इन द न्यू टेस्टामेंट (बेलिंगहैम, डब्ल्यूए: लोगोस रिसर्च सिस्टम्स इंक., 2002), 1 कुरिन्थियों 13:7।
11. जोधियेट्स, द कम्प्लीट वर्ड स्टडी डिक्शनरी, 1424।
12. विन्सेंट, वर्ड स्टडीज़ इन द न्यू टेस्टामेंट, 1 कुरिन्थियों 13:7।

लेखक के बारे में

एक मूर्ख।डिस्लेक्सिया के साथ एक छात्र। एक तीसरी कक्षा के पढ़ने के स्तर के साथ एक उच्च विद्यालय स्नातक।एक अज्ञानी पति और अपमान जनक पिता।सभी ने अपने जीवन में एक समय में पास्टर क्रेग कास्टर का वर्णन किया, लेकिन प्रभु के पास उस के लिए एक अलग योजना थी। क्रैग के सार्वजनिक बोलने के डर के बावजूद, परमेश्वर ने उसे 1994 में पूरे समय की सेवा के लिए बुलाया । उन्होंने औपचारिक शिक्षा या एक सेमीनरी की डिग्री के बिना विश्वास में कदम रखा । उन्हें 1995 में नियुक्त किया गया था और तब से उन्होंने चार किताबें लिखी हैं; कई पुरुषों को शिष्य बनाया; सैकड़ों लोगों को सलाहदी; मसीह के पास अनगिनत को पहुंचाया; और संयुक्तराज्य अमेरिका और अंतर राष्ट्रीय स्तर पर शादी और परवरिश सेमिनार, पुरुषों की सभाएं, और पास बानों के सम्मेलनों के माध्यम से हजारों लोगों को सिखाया । सब कुछ परमेश्वर की कृपा और शक्ति से।

यद्यपि क्रेग ने 1979 में यीशु को अपना जीवन दे दिया, लेकिन उनका परिवर्तन तब शुरू हुआ जब उन्होंने प्रतिदिन यीशु और उसके वचन में रहना शुरू कर दिया । वह वास्तव में विश्वास करता है कि यीशु हममें से प्रत्येक के साथ घनिष्ठ संबंध चाहता है । उसका जीवन हमेशा के लिए बदल गया है क्योंकि वह इस रिश्ते का पीछा करते है और पूरी तरह से मसीह पर निर्भर है।

प्रोत्साहित हों

यदि आप इस बात पर भरोसा करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं कि परमेश्वर आपके जीवन में और उसके माध्यम से कार्य कर सकता है, तो पास्टर क्रेग की कहानी से प्रोत्साहित हों । अपने पिछले पापों, सीखने की अक्षमताओं, शिक्षण या बोलने के डर, या शिक्षा की कमी को अपने जीवन पर परमेश्वर के आह्वान के प्रति आज्ञा कारी होने से न रोकें। परमेश्वर आपको अपना शिष्य बनाना चाहता है, और यदि आप विवाहित हैं या आप के बच्चे हैं, तो वह आप को एक ऐसे पति या पत्नी और माता-पिता के रूप में बनाना चाहता है जो उसका सम्मान करता है । उसका अनुग्रह अद्भुत और असीम है । वह आपसे प्रेम करता है और आप के द्वारा महिमा प्राप्त करने की इच्छा रखता है।

परमेश्वर का आप से वादा

परमेश्वर को उसकी प्रचुर मात्रा में प्रतिज्ञाओं और प्रावधानों के लिए धन्यवाद । "शमौन पतरस, यीशु मसीह के एक दास और प्रेरित" के शब्दों से उसकी प्रतिज्ञाओं पर मनन करें ।

शमौन पतरस की ओर से जो यीशु मसीह का दास और प्रेरित है, उन लोगों के नाम जिन्होंने हमारे परमेश्वर और उद्धार कर्ता यीशु मसीह की धामिर्कता से हमारा सा बहु मूल्य विश्वास प्राप्त किया है।

परमेश्वर के और हमारे प्रभु यीशु की पहचान के द्वारा अनुग्रह और शान्ति तुम में बहुतायत से बढ़ती जाए। क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है, जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है। जिनके द्वारा उसने हमें बहु मूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं है कि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूट कर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ।

और इसी कारण तुम सब प्रकार का यत्न करके, अपने विश्वास पर सद्गुण, और सद्गुण पर समझ। और समझ पर संयम, और संयम पर धीरज, और धीरज पर भक्ति। और भक्ति पर भाईचारे की प्रीति, और भाईचारे की प्रीति पर प्रेमबढ़ातेजाओ।क्योंकि यदि ये बातें तुम में वर्तमान रहें, और बढ़ती जाएं, तो तुम्हें हमारे प्रभु यीशु मसीह के पहचान ने में निकम्मे और निष्फल नहो ने देंगी। (2 पतरस 1:1-8)

पारिवारिक चेले बनाना सेवकाई के बारे में

पारिवारिक चेले बनाना सेवकाई (FDM), संस्थापक और निर्देशक पादरी क्रेग कास्टर द्वारा 1994 में स्थापित एक गैर-लाभकारी सेवकाई, परिवारों को चेले बनाने के लिए मसीह की देह को समर्थन देने, शिक्षित करने और प्रशिक्षित करने का प्रयास करता है। इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए, FDM व्यक्तिगत अध्ययन, छोटे समूहों, घर-समूह अध्ययन और एक-पर-एक चेले बनाने के लिए कार्य पुस्तिकाओं, सहायक वीडियो और ऑन लाइन सामग्री प्रदान करता है।वे चेले बनाने, विवाह और परवरिश पर सेमिनार आयोजित करते हैं।

FDM की सेवकाई का लक्ष्य मसीही कलीसियाओं के अगुवों को प्रोत्साहित, चेले बनाने और सुसज्जित करने के लिए एक दर्शन विकसित करने और उनके कलीसियाई परिवारों के प्रति सेवकाई करने में मदद करने के लिए बाइबिल की ठोस कार्य पुस्तिकाएं प्रदान करना है।1995 के बादसे, हजारों लोगों ने विवाह और पालन – पोषण कक्षाओं को पूरा कर लिया है, और संयुक्त राज्य अमेरिका और विदेशों में सैकड़ों कलीसियाओं ने FDM सामग्री का उपयोग करके अपनी मंडलियों की सेवा की है। उनकी सेवकाई www.FDM.world पर पाए जाने वाले मुफ्त ऑन लाइन संसाधनों के माध्यम से कई परिवारों की मदद करता है।

FDM सक्रिय रूपसे भारत, रूस, यूक्रेन, क्यूबा, मेक्सिको, अफ्रीका, सिंगापुर, जापान और चीन जैसे देशों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सेवकाई करता है। www.FDM.world पर अधिक जानकारी प्राप्त करें।